बालाबक्ष राजपूत चारण पुस्तकमाला—२



बीसलदेव रासो



संपादक
सत्यजीवन वर्म्मा एम० ए०



प्रकाशक
काशी नागरीप्रचारिणी सभा

सं० १९८२

मूल्य ॥।)

गणपति कृष्ण गुर्जर द्वारा,
श्री लक्ष्मीनारायण प्रेस, बनारस में मुद्रित।

निवेदन

जयपुर राज्य के अंतर्गत हणोतिया ग्राम के रहनेवाले बारहट नृसिंहदास जी के पुत्र बारहट बालाबख्शजी की बहुत दिनों से इच्छा थी कि राजपूतों और चारणों की रची हुई ऐतिहासिक और (डिंगल तथा पिंगल) कविता की पुस्तकें प्रकाशित की जायें जिसमें हिंदी साहित्य के भांडार की पूर्ति हो और ये ग्रंथ सदा के लिये रक्षित हो जायें। इस इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने नवंबर सन् १९२२ में ५०००) रु० काशी नागरीप्रचारिणी सभा को दिए और सन् १९२३ में २०००) रु० और दिए। इन ७०००) रु० से ३॥) वार्षिक सूद के १२०००) के अंकित मूल्य के गवर्मेंट प्रामिसरी नोट खरीद लिए गए हैं। इनकी वार्षिक आय ४२०) रु० होगी। बारहट बालाबख्शजी ने यह निश्चय किया है कि इस आय से तथा साधारण व्यय के अनंतर पुस्तकों की बिक्री से जो आय हो अथवा जो कुछ सहायतार्थ और कहीं से मिले, उससे "बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला" नाम की एक ग्रंथावली प्रकाशित की जाय, जिसमें पहले राजपूतों और चारणों के रचित प्राचीन ऐतिहासिक तथा काव्य ग्रंथ प्रकाशित किए जायें और उनके छप जाने अथवा अभाव में किसी जातीय संप्रदाय के किसी व्यक्ति के लिखे ऐसे प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ, ख्यात आदि छापे जायें, जिनका संबंध राजपूतों अथवा चारणों से हो। बारहट बालाबख्शजी का दानपत्र काशी नागरीप्रचारिणी सभा के तीसवें वार्षिक विवरण में अविकल प्रकाशित कर दिया गया है। उसकी धाराओं के अनुकूल काशी नागरीप्रचारिणी सभा इस पुस्तकमाला को प्रकाशित करती है।

बी० ए० द्वारा सगृहीत Bardic Selection नामक सग्रह भी रक्खा। इसमे वीसलदेव रासो का एक सर्ग (चतुर्थ) उद्धृत है। परीक्षा के हेतु अध्ययन करते समय उसमें मुझे अनेक अशुद्धियाँ दिखाई पड़ीं। मैंने यह बात अपने पिता स्व० बा० जगन्मोहन वर्म्मा से कही। उन्होने मुझे 'वीसलदेव रासो' की एक सपूर्ण प्रतिलिपि दी, जो संभवत काशी नागरीप्रचारिणी सभा की प्रति से नक्ल की हुई थी। यह प्रतिलिपि साफ़ नहीं लिखी थी, अत मैंने स्वय इसे साफ साफ़ अलग कापी पर लिखा और उसे अध्ययन किया। पश्चात मेरे मनमे यह बात आई कि मैं इस ग्रथ के कठिन शब्दों पर नोट दे डालूँ, जिससे अध्ययन करने में लोगों को सुविधा हो। इस उद्देश्य से मैंने 'वीसलदेव रासो' के कठिन शब्दों पर कुछ टिप्पणी दी। उसके पाठ में जब मुझे कहीं कहीं शका हुई तो मैंने इसे अपने पिता से कहा। उन्होंने मुझे एक दूसरी प्रति कहीं से मँगवा दी थी जो सवत् १९५९ की लिखी हुई थी। उस प्रति से मैंने अपनी प्रतिलिपि की हुई प्रति को मिलाया तो उसमें अनेक सशोधन करने पड़े। यह प्रकाशित ग्रथ उसी कापी के आधार पर है। उस में यत्र तत्र जहाँ कहीं मुझे कुछ शब्द छुटे हुए जान पड़े हैं, वहाँ मैंने उन्हें कोष्टक मे दे दिया है। ग्रथ के छदक्रम में मुझे अनेक स्थलों पर प्रसग के अनुसार व्यतिक्रम जान पड़ा है पर उसे ठीक करने में मुझे सकोच करना पड़ा है कि कहीं ऐसा करते समय ग्रथ का वास्तविक क्रम नष्ट न हो जाय। फिर भी एक आध स्थलों पर मुझे विवश होकर पदो के एक आध चरणों को इधर उधर करने पर विवश ही होना पड़ा है।

वीसलदेव रासो की प्रतिलिपि बहुत ही अशुद्ध है। इसीके

कारण उसमें शब्दों के रूप विकृत हो गये हैं। छंदोभग-दोष भी इसी कारण हुआ है। प्रतिलिपि के अशुद्ध होने का यह कारण है कि यह 'रासो' बहुत दिनो तक मौखिक रहा पीछे किसी ने किसी को गाते हुए सुनकर लिपि-बद्ध किया होगा, यही हाल जगनिक के 'आल्हा' का हुआ है।

बीसलदेव रासो स्वय कवि 'नरपति नाल्ह' ने कभी लिपि-बद्ध नहीं किया, इस बात की पुष्टि स्वय कवि के कथन से होती है। प्रथम स्वर्ग मे 'नाल्ह' कहता है—

'नाल्ह' रसायण नर भणइ।
हियडइ हरषि गायण कइ भाइ॥ पृ० ३

अर्थात्—'नाल्ह' रसज्ञ नर (कवि) कहता है हृदय में हर्षित होकर गाने (गीत) की भाँति। पुनश्च वह कहता है—

सरसति सामणी करउ हउ पसाउ।
रास प्रगासउँ बीसल—दे—राउ॥
खेलाँ पइसइ मॉडली।
आखर आखर आणाजे जोड़ि॥ पृ० ४

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

इससे प्रकट है कि उसने किसी समाज में यह 'रास' जोड़ कर (छंदो-बद्ध करके) उसी समय लोगों को सुनाया था। इस प्रकार 'रासो' में जहा कहीं इस प्रकार का वर्णन है वहा 'नाल्ह' ने 'गाता हूँ' 'कहता हूँ' या 'आरभ करता हूँ' इत्यादि ही लिखा है। यथा—

(१) गायो हो रास सुणै सब कोइ।
सॉभल्यॉ रास गगा-फल होइ॥ पृ० ५

(२) कर जोड़े नरपति कहइ ।
रास रसायण सुणै सब कोई ॥ पृ० ५.

(३) पहिलइ खड कहइ छइ व्यास ।
राजमती राय पूरीय आस ॥ पृ० ३?.

(४) दूजौ पड चय्यो परिमाण ।
जे नर सूणइ ते गगा न्हाण ॥
'नाल्ह' रसायण नर भणई ।

(५) तीजो खड चयो परिमाण ॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

वीसलदेव रासो के मौखिक ग्रथ होने का एक प्रमाण यह भी जान पडता है कि 'रास' श्रोताओं को सबोधन करके कहा गया है क्योंकि कवि ने यत्र तत्र यही लिखा है कि 'सब लोग सुनो,' रास सुनने से गगा फल होता है* इत्यादि। इससे स्पष्ट है कि वीसलदेव रासो को कवि ने लिपिबद्ध नहीं किया था, उसने केवल सुननेवालों के लिये गीत रूप में इसे छदोबद्ध किया था और वह उसे गाकर सुनाता फिरता था ।

निर्माण-काल ।

कवि नरपति नाल्ह वीसलदेव रासो मे निर्माण-काल यों लिखता है—

बारह सै बहोत्तराहा मझारि ।

---

*—सयल सभा सामलो हो सयोग ।
गगा-फल 'नरपति' कहइ ॥
पुत्र कलत्र नवि हुवई विजोग । पृ० १००

* * * *

जेष्ठ वदी नवमी बुध वार ॥
'नाल्ह' रसायण आरभई ।

इससे प्रकट है कि कवि नाल्ह ने वीसलदेव रासो सवत बारह सै वहोत्तर में जेष्ठ बदी नवमी बुधवार को आरभ किया था। बारह सै बहोत्तर का अर्थ लोगों ने कई प्रकार से किया है। बाबू श्यामसुन्दर दास जी ने सन् १९०० कि हिन्दी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज की रिपोर्ट मे इसे १२२० शक् सवत माना है * इसी का अनुकरण मिश्र-बन्धुओं ने भी 'विनोद' में किया है। लाला सीताराम ने अपने Bardic selection नामक पुस्तक में इसे १२७२ विक्रम सवत माना है जो ठीक नहीं है। क्योंकि गणना करने से विक्रम सवत के १२७२ में जेठ वदी नवमी बुधवार को नही पडती।

'बारह सै बहोत्तर' का स्पष्ट अर्थ १२१२ होगा। 'वहोत्तर' यह 'वरहोत्तर' 'द्वादशोत्तर' का रुपान्तर है जिसका अर्थ होगा † द्वादशोत्तर बारह सै अर्थात् १२१२। इसी प्रकार 'सोलोत्तरां' 'सतोत्तर' ‡ क्रमश सोलह (१६) और सात (७) के लिए

---

* The author of this chronicle is Narpati Nalha and he gives the date of the composition of the book as Samvat 1220 This is not Vikram Samvat

† दामो कृत—लक्ष्मण सेन पद्मावती की कथा का समय संवत 'पदरह सो सोलोत्तरा मझारि। संवत—१५१६—देखो—Report Hindi Search 1900 P 76

‡ हरराजकृत—ढोला माह की कथा का समय-सवत सोलह सतोतरइ—सवत १६०७। देखो—वही—Pag 84

मिलते हैं। गणना करने पर विक्रम सवत् १२१२ में जेष्ठ बदी नवमी को बुधवार पड़ता है। अत गणना से भी यह ठीक उतरता है।

नरपति नाल्ह ने 'रासो' में संवत् स्पष्ट नहीं लिखा है पर राव बहादुर पडित गौरीशकर हीराचँदजो ओझा ने मुझे एक पत्र मे लिखा है कि 'राजपूताने में विक्रम सवत ही लिखा जाता था शक सवत नहीं।' अतः यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि विक्रम सवव १२१२ में नरपति नाल्ह ने वीसलदेव रासो की रचना की। इस निर्माण-काल की पुष्टि एक प्रकार से और भी होती है।

नरपति नाल्ह ने अपने ग्रथ में प्राय सर्वत्र वर्तमान-कालिक क्रिया का प्रयोग किया है। इससे यह निश्चय होता है कि कवि वीसलदेव का समकालीन या। वीसलदेव विग्रहराज चतुर्थ का दूसरा नाम है। वीसलदेव के शिलालेख सवत १२१० और १२२० के प्राप्त हैं। अजमेर बसने के पश्चात् केवल यही वीसलदेव हुआ है। यह अर्णोराज का पुत्र और जगदेव का छोटा भाई था। यह अपने वडे भाई जगदेव के जीते जी उससे राज छीन कर गद्दी पर बैठा था। इसको विद्या का बड़ा प्रेम था। इसका रचा हुआ हरकेलि नाटक है। यह नाटक वि० स० १२१० (सन् ११५६) की माघ शुक्ला पचमी को समाप्त हुआ था। यह उक्त सवत में शिला पर खुदवा दिया गया था जो अजमेर में 'ढाई दिन का झोपड़ा' नामक स्थान मे खुदाई करने पर प्राप्त हुआ है। इसी स्थान में वीसलदेव द्वारा स्थापित पाठशाला थी।

वीसलदेव वडा वीर और प्रतापी था। दिल्ली की प्रसिद्ध

फीरोजशाह की लाट पर वि० स० १२२० वैशाख शुक्ला १५ का इसका एक लेख है। जिसमें लिखा है—

"इसने तीर्थ यात्रा के प्रसग से विन्ध्याचल से हिमालय तक के देशों को विजय कर उनसे कर वसूल किया और आर्यावर्त से मुसलमानों को भगा कर एक बार फिर भारत को आर्यभूमि बना दिया। इसने मुसलमानो को अटक पार निकाल देने की अपने उत्तराधिकारियों को वसीयत की थी।" †

अब यह निश्चय है कि वीसलदेव सवत् १२१०-१२२० तक अजमेर का शासक था। अत: नरपति नाल्ह का दिया हुआ वीसलदेव रासो का सवत् १२१२ माननीय है और वह वीसलदेव का समकालीन था।

कथा

वीसलदेव रासो में दी हुई घटनाओ की ऐतिहासिक जाँच करने के पूर्व उसकी कथा का साराश जान लेना आवश्यक है। यह ग्रथ चार खडों में है *। इस ग्रथ का साराश यों है—

† आविन्ध्यादाहिमाद्रे विरचितविजयस्तीर्थयात्रा प्रसगा–
दुद्ग्रीवेषु प्रहर्पान्नृपतिषु विनमत्कधरेषु प्रयत्न ।
आर्यावर्तं यथार्थ पुनरपि कृतवान्म्लेच्छविच्छेदनाभि–
र्देव शाकम्भरीन्द्रो जगति विजयते वीसल क्षोणिपाल ॥
ब्रूते सम्प्रति चाहुमानतिलक शाकम्भरी भूपति–
श्रीमान विग्रहराज एष विजयी सन्तानजानात्मन ।
अस्माभि करदव्यधायि हिमवद्विन्ध्यान्तरालभुव
शेष स्वीकरणीयमस्तु भवतामुद्योगशून्य मन ॥

* * * * *

* ग्रथ छपते समय भ्रम से पहले खण्ड के आदि में 'प्रथमसर्ग' छप गया अत पीछे अन्य तीनों 'खण्डों' को भी 'सर्ग' लिखना पड़ा। काव्य में 'सर्ग' का होना बुरा नहीं। पर नाल्ह ने 'खड' के अनुसार विभाग किया है।

प्रथम खंड—

कवि नरपति नाल्ह पहले सरस्वती की और फिर गणेश की वन्दना करता है और संवत् १२१२ जेष्ठ वदी नवमी बुधवार को बीसलदेव रासो आरंभ करता है। धार नामक एक नगरी है जहां भोज परमार राज करते हैं। इनके अस्सी सहस्र हाथी और पांच अक्षौहिणी सेना है। इनकी राजवल्लभा बहुत हैं। भोज की पुत्री अत्यन्त रूपवती है। इसका नाम राजमती है। एक दिन भोज की रानी उनसे कहती है "राजा! अपने रहते ही पुत्री का विवाह कर दो। इसके लिये वर ढूँढो।" भोज अपने पंडित (पांडे) को वर खोजने के लिये भेजता है। राजा भोज का पुरोहित वर ढूंढता हुआ चारों ओर जाता है। वह जेसलमेर, तोडा, अयोध्या, दिल्ली, मथुरा आदि स्थानों में वर ढूँढता है पर कोई उसे राजमती के योग्य नहीं जँचता। तब वह अजमेर जाता और बीसलराय को देखता है। यह वर उसके मन बैठता है और वह आकर भोज से इस की सूचना देता है। भोज लगन सोपारी लेकर उसे बीसलदेव के यहां अजमेर भेजता है। वह वहां जाकर मानिक मोती से चौक पुरा कर बीसलदेव का पैर पखाल कर उसे राजमती का वर करार देता है। तिलक चढने का समाचार सारे नगर में फैलता है और सब अजमेर निवासी प्रसन्न हो जाते हैं।

बरात पहले चित्तोरगढ जाती है, वहाँ से पुरपाटन होकर बीसलपुर पहुँचती है फिर प्रस्थान करके मालवगिरि पहुँचती है। यहाँ से 'धार' नगर नजदीक है। धार के निकट थोडी दूर पर डेरा डाला जाता है। मालवगिरि में बड़ा उत्सव होता है, आठ

सहस्र ब्राह्मण इस उत्सव मे वेदोच्चारण करते हैं। सब आए हुए लोग भाँति भाँति के पकवान भोजन करते हैं। माघ पडित 'अगुवानी' की वेला बतलाते हैं और बारात अगुवानी के लिये चलती है। सब सरदार भिन्न भिन्न घोड़ो पर सजकर चलते हैं और उज्जैनी में मिलते हैं। दोनो ओर के लोग मिलते हैं। दोनो ओर से पान बीड़ा बाँटा जाता है। लोग जनवासे मे ठहराए जाते हैं। विवाह के लिये वीसलदेव विवाह मडप मे आता है स्त्रियाँ आरती उतारती हैं। माघ पडित के कहने पर राजमती वीसलदेव के गले मे जयमाल डालती है। माश्रम ज्योतिषी, देश्रम व्यास, माघ अरिजन और कवि कालिदास वेदोच्चारण करते हैं। राजमती और वीसलदेव का व्याह होता है। सब लोग प्रसन्न होते हैं।

पहली फेरी मे राजा भोज वीसलदेव को आलीसर और कुडाल देश देता है। दूसरी फेरी में बहुत से घोड़े और बहुत सा धन और मडोवर सौराष्ट्र और गुजरात देश देता है। तीसरे फेरे मे साँभर, तोडा, टोंक देश देता है। चौथे फेरे में वीसलदेव नीरवाड़ा देश माँगता है। चेटी कहती है 'भोज तुझे फिर बहुत देगा तू क्यो चित्तोड़ माँगता है। हे साभर के राजा राजमती को अगीकार कर। अगर माँगना है तो धार माँग, उज्जयनी माँग, चदेरी खेडला माँग, अयोध्या माँग पर चित्तोड मत माँग, क्योंकि वह देवता को भी अलभ्य है।' अत में राजमती के कहने पर भोज उसे चित्तोड़ भी देता है। बहुत सा धन देकर भोज वीसलदेव का मान रखता है। विवाह के अनतर पहिरावरणी होती है। और बहुत सी दासियाँ, घोड़े आदि देकर भोज वीसलदेव को विदा करता है। राजमती को हाथी पर बैठा कर वीसलदेव अजमेर के

लिये प्रस्थान करता है। रास्ते में उसे 'आना सागर' मिलता है। अजमेर पहुँच कर वह राजमती को लेकर अव पुर में प्रवेश करता है और उसकी अनुपम सुन्दरता अन्य रानियाँ देखती हैं। राजा वीसलदेव राजमती के साथ सुख भोग करता है। 'नरपति' हाथ जोड़ कर कहता है कि तुम पर तैंतीस कोटि देवता प्रसन्न हैं। अत' तू ने (कवि) राजमती के स्वयवर का वर्णन कह कर समाप्त किया।

द्वितीय खड—

गौरीनदन की वदना करके 'नाल्ह' कहता है साभर के राजा वीसलदेव ने गर्व करके कहा है कि मेरे सदृश और कोई राजा नहीं है। इस पर राजमती ने कहा "मेरे पति। गर्व न करो, वहुत से राजा आप से बडे हैं। लकापति रावण गर्व ही से नष्ट हुआ। तुम सरीखे अनेक राजा हैं। एक उडीसा का राजा है, जिसके यहाँ हीरा खान उगहा जाता है।" यह सुन कर राजा के मन मे क्रोध हो गया और उसने कहा "मैं भूला था तू ने मुझे चेता दिया। या तो मेरे हीरे की खान होगी नहीं तो मैं प्राण दे दूँगा।"

राजमती कहती है "राजा, क्रोध छोड़ो, मैंने यह हँसी में कहा था। मुझे छोड कर चले जाओगे तो मेरा जीना कैसे होगा ?" वीसलदेव पूछता है "तेरा जन्म तो जैसलमेर मे हुआ, तू विवाहित होकर १२ वर्ष की अवस्था में अजमेर आई। तुझे उड़ीसा के जगन्नाथ के विषय में कैसे ज्ञात हुआ। तू अपने पहले जन्म का वृतान्त कह।" राजमती अपने पूर्व जन्म का वृतान्त राजा से यों कहती है "मैं पूर्वजन्म मे हरिणी थी और वन मे रहती हुई निर्जला एकादशी (ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी) का व्रत किया करती थी। एक दिन एक अहेरी (शिकारी) ने मेरे हृदय में बाण मारा

जिससे मैं मर गई। इसके उपरान्त मेरा जन्म जगन्नाथपुरी मे हुआ। वहाँ मृत्यु के समय मैंने शख, चक्र, गदाधारी विष्णु का ध्यान किया। उनके प्रसन्न होने पर मैंने वर माँगा कि मेरा जन्म पूर्व देश में न हो।" इस पर राजा बीसलदेव पूछता है कि तू ने क्यों पूर्व देश को छोड़ा वहाँ तो पाप का प्रवेश नहीं है। वहाँ के लोग बड़े चतुर होते हैं। वहाँ गगा, गया, काशी (वाराणसी) आदि तीर्थ हैं, जहाँ नहाने से पाप का नाश होता है। राजमती कहती है "पूरब के लोग पान फूल आदि भक्षण करते हैं। बड़े कजूस और अभक्ष्य पदार्थों के भक्षक होते हैं। ग्वालियर के लोग और दक्षिण के लोग बड़े भोगी होते हैं।" राजा कहता है कि तेरा जन्म मारू के देश (मारवाड़) में हुआ तू बड़ी सुन्दरी है। रानी कहती है "हे साँभर के राजा, तुम परदेश क्यों जाते हो तुम्हारी ६० रानियाँ हैं। तुम इन्हें छोड कर परदेश मत जाओ।" राजा कहता है कि हे राजकुमारी, तू दुखित मत हो मैं तेरे लिये उड़ीसा जाकर लाख टका का हार लेकर जगन्नाथ को पूज कर आऊँगा। रानी कहती है "तू मेरे घर भेज कर असख्य धन मँगा सकता है, परदेश जाने की कोई आवश्यकता नहीं।" रानी ने बहुत समझाया पर राजा ने एक नहीं मानी और पुरोहित को बुला कर चलने का मुहूर्त्त पूछता है। रानी ने पुरोहित को बुला कर कहा कि कातिक तक मुहूर्त मत देना। इस प्रकार एक मास का विलब करना। उसने वैसा ही किया फिर इसके बाद राजा फिर चलने के लिये तय्यार होता है। राजमती और राजा बीसलदेव की भावज (जगदेव की स्त्री) ने बहुत समझाया उसने कहा कि तुम सात वर्ष पहले बाहर रहे, जन्म भर इधर

ऐतिहासिक तत्व

ग्रंथ के अध्ययन से निम्नलिखित ऐतिहासिक बातों का पता चलता है ।

(१) वीसलदेव का विवाह धार के राजा परमार-वंशीय भोज के यहाँ हुआ था । इनकी पुत्री का नाम राजमती था और उसकी माता का नाम भानुमती था ।

(२) वीसलदेव तीर्थयात्रा के प्रसग में उडीसा गया और वहाँ पर विजय करके बहुत सा धन लाया ।

(३) वीसलदेव का बडा भाई उस समय जीवित नहीं था जब वह उडीसा गया केवल उसकी भावज वर्तमान थी । वीसल-देव की बहन का नाम अकन कुँवरि था ।

(४) वीसलदेव उड़ीसा जाने के पूर्व भी एक बार सात वर्ष के लिये बाहर गया था ।

(५) उडीसा जाते समय उसने अपने भतीजे को अपना स्थानापन्न बनाया था ।

(६) वीसलदेव की अवस्था उड़ीसा जाते समय २२ वर्ष की थी ।

(७) राजमती की अवस्था व्याह के समय १२ वर्ष की थी।

(८) वीसलदेव को घर से अजमेर लौटते समय 'आना सागर' नामक सागर मिला था ।

(९) वीसलदेव के अन्य सर्दारो में एक मुसल्मान भी था।

(१०) वीसलदेव के उड़ीसा जाते समय उसे अपने पिता का श्राद्ध करना पड़ा था अत वह उस समय पितृहीन था ।

उपरोक्त ऐतिहासिक तत्त्व की ऐतिहासिक परीक्षा लेने के पूर्व यह कह देना उचित है कि हमें यह न भूलना चाहिये कि यह ग्रंथ किसी इतिहासज्ञ द्वारा नहीं प्रणीत हुआ था । एक भाट ने लोक-मनो-रजनार्थ कुछ तुकबंदियाँ की थी और वह उन्हें जाकर लोगो को

सुनाता फिरता था। पीछे कई शताब्दियों तक यह मौखिक रूप में लोगों में प्रचलित था और तदुपरान्त किसी ने उसे लिपिबद्ध किया। प्राय तीन शताब्दी से अधिक जो ग्रथ मौखिक रहा हो उसमें कितने परिवर्तन हो जाते हैं तथा उनका रूप कितना मूल से विरूप हो जाता है। यह सहज ही में अनुमान किया जा सकता है। हिन्दी साहित्य में 'आल्हा' तथा अमीर खुसरू की 'पहेलियाँ' इनके जीते जागते उदाहरण हैं।

इन बातों के होते हुए भी हमें इन तत्त्वों पर एक बार ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकाश डालना ही पडेगा और अन्य कठिनाइयों तथा दोषों के होते हुए भी इनमें ऐतिहासिक सत्य जो उनमें बीजरूप से अन्तर्हित हैं। कुछ न कुछ अवश्य हस्तगत होगा।

(१) कवि 'नरपति नाल्ह' के अनुसार वीसलदेव का विवाह भोज की कन्या राजमती से हुआ था। राजा भोज परमार वशीय थे और कवि के कथनानुसार वे वीसलदेव के यहाँ आये थे। अत वे वीसलदेव के समकालीन थे ऐसा मानना पडेगा। इतिहास देखने पर यह बात असत्य जान पडती है।

परमारवशीय भोज बडा प्रतापी था। इसके शिलालेख विक्रम सवत १०७६ और १०७९ के प्राप्त हैं। उसके उत्तराधिकारी जयसिह (प्रथम) का दानपत्र वि० स० १११२ का मिलता है। अब ऐतिहासकों ने भोज का समय वि० स० १०७६ से ११९० तक माना है। वीसलदेव रासो का नायक वि० स० १२१२ में वर्तमान था। अत भोज से यदि हम तात्पर्य परमारवशीय प्रसिद्ध भोज से लें तो वीसलदेव और भोज का समकालीन होना सर्वथा असभव है। हमरा अनुमान है कि कवि 'नरपति' का तात्पर्य्य किसी

अन्य 'भोज' से है। इस अनुमान की पुष्टिमें दो बातें होती है।

(१) पृथ्वीराज विजय नामक काव्य में लिखा है कि मालवा के राजा उदयादित्य ने विग्रहराज से उन्नति पाई और उसके दिए हुए घोड़ों से गुजरात के राजा कर्ण को जीता। इस से यही कहा जा सकता है कि उदयादित्य ने चौहानो से मेल कर अपने वशपरपरा के शत्रु गुजरात के सोलकी राजा कर्ण को परास्त किया। ऐसी दशा मे यह माननीय है कि मैत्री करने के लिये भोज वशीय किसी नृप ने वीसलदेव को अपनी लडकी व्याह दी हो।

(२) हम्मीर काव्य के कवि ने भोज द्वितीय के लिये 'भोजो भोज इवापर' लिखा है। अत यह भी अनुमान किया जा सकता है कि भोजवशीय किसी अन्य के लिये कवि 'नाल्ह' ने भोज शब्द का व्यवहार किया है।

साराश यह कि हम यह कह सकते हैं कि वीसलदेव ने परमारवशीय किसी राजा की लडकी से विवाह किया जिसे कवि नरपति ने भोज लिखा हो*। 'राजमती' वास्तव में परमारवशीय किसी राजा की पुत्री थी इसका जानना कठिन है। 'वीसलदेव-रासो' के अतिरिक्त अन्य कही भी उसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। बीजोलियाँ के शिलालेख में विग्रहराज तीसरे को 'राजदेवी' का पति कहा है—

तत्तोपि वीसल नृप श्रीराजदेवी प्रिय —
पृथ्वीराजनृपोथ तत्तनुभवो रासल्लदेवो विभु —

सभव है कि इस 'राजदेवी' के कारण भ्रम से कवि ने वीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) की रानी का नाम 'राजमती' कर दिया हो। पर ये नाम वास्तविक नहीं माने जा सकते, ये कल्पित हैं।

* 'पृथ्वीराज रासो' में लिखा है कि बीसलदेव के एक पमार वशीय रानी था। देखो-भूमिका H Search Report 1900

(२) 'नरपति नाल्ह' के कथनानुसार राजमती के कहने पर वीसलदेव उड़ीसा चला गया था और वहाँ बारह वर्ष तक रह-कर लौटा था। इस बात की पुष्टि मे केवल एक यही ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध है कि वीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) ने 'तीर्थ यात्रा के प्रसग में विन्ध्याचल से लेकर हिमालय तक के देशों को विजय किया था' *। अत यह निश्चय है कि वीसलदेव रासो का नायक तीर्थयात्रा करने उड़ीसा गया था और वह वहाँ के राजा को विजय करके और असख्य धन लेकर लौटा था।

राजमती के कहने पर वीसलदेव उड़ीसा गया या अन्य किसी कारण से गया इसके लिये कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।

यहाँ पर एक बात सोचने की यह है कि 'नाल्ह' के कथ-नानुसार वीसलदेव बारह वर्ष तक जगन्नाथ की पूजा करता रहा। पर वास्तव में क्या यह ठीक है ? विचार करने पर यही मानना पड़ेगा कि कवि ने अपनी अनभिज्ञता के कारण वीसलदेव की अनुपस्थिति (१२ वर्ष) का कारण जगन्नाथ का पूजन दिया है। पर जान पड़ता है कि वीसलदेव को पूर्व देश के राजाओ को विजय करने मे इतने दिन लगे थे।

नरपति नाल्ह ने 'रासो' सवत् १२१२ में निर्माण किया। यदि उसी वर्ष या उसके एक वर्ष पूर्व वीसलदेव उड़ीसा से लौटा था, तो यही मानना पड़ेगा कि वह सवत् १२०० में या ११९९ मे घर से निकला था और उसका विवाह राजमती से सवत् ११९७ या ११९९ में हुआ होगा, क्योंकि विवाह के बाद ही वह बाहर गया था।

---

* देखो 'भारत के प्राचीन राजवंश' पृ० २४४.

वीसलदेव के पिता अर्णोराज के शिलालेख संवत् ११९६ के मिलते हैं और उसका संवत् १२०७ तक जीवित होना माना जाता है *। अत यदि हम वीसलदेव का प्रवास १२ वर्ष का मानें तो जिस समय वह उडीसा गया, उस समय उसका पिता वर्त्तमान था। पर वीसलदेव रासो से यह बात प्रतीत नहीं होती कि उस समय उसका पिता जीवित था। अब यदि यह कहा जाय कि वीसलदेव उस समय उडीसा गया, जब उसका पिता मर चुका था,† तो यही मानना पडेगा कि वह १२०७ या १२०८ में गया होगा। अत उसके प्रवास के १२ वर्ष नहीं माने जा सकते। संभव है कि कवि ने योंही १२ वर्ष लिखा हो। (जैसे राम के प्रवास की अवधि १४ वर्ष थी।)

(३) वीसलदेव का बड़ा भाई जगद्देव था। उसने अपने पिता को मारकर उससे गद्दी छीन ली थी। इसकी और इसके पिता अर्णोराज की मृत्यु संवत् १२०७ और १२१० के बीच में किसी समय हुई ‡। वीसलदेव रासो के अनुसार उसके उडीसा जाते समय उसे उसकी भावज ने समझाया था। नरपति नाल्ह ने जगद्देव या वीसलदेव के बडे भाई का कहीं उल्लेख नहीं किया है। इससे यह अनुमान होता है कि वह उस समय वर्तमान नहीं था। इसकी पुष्टि एक और बात से भी होती है। वीसलदेव को बाहर जाते समय अपने राज्य का अधिकार अपने भतीजे

* देखो ना० प्र० पत्रिका, भाग १ अंक ४ पृ० ३८६

† उड़ीसा जाने के पूर्व वीसलदेव अपने पिता का श्राद्ध और पिंडदान करता है। देखो वीसलदेव रासो, पृ० ५२.

‡ देखो ना० प्र० पत्रिका—भाग १ अंक ४ पृ० ३८६.

को देना पड़ा और उसने यह सर्व सम्मति से किया था *। अत यह निश्चय है कि उसका बडा भाई जगदेव उस समय नहीं था। चाहे उसकी उस समय मृत्यु हो चुकी हो या वह पितृ हत्या † करने के कारण देश बाहर कर दिया गया हो। ऐसा प्राय होता भी है। मेवाड़ के महाराणा कुभकर्ण को मारकर उसका बड़ा लडका उदयसिंह मेवाड का राजा बना, परतु सरदारों ने उसकी अधीनता न स्वीकार कर उसके छोटे भाई रायमल को राजा बनाया और उदयसिंह को राज्य के बाहर निकाल दिया था। सभव है कि उसके रहने पर भी कवि ने उनकी चर्चा न करनी चाही हो। बीजोल्या के वि० स० १२२६ के शिलालेख में तथा पृथ्वीराज विजय में भी इसका कोई उल्लेख नहीं है ‡। साबा-

---

* देखो बा० दे० रासो पृ० ५६। 'सब मिलि मन्त्र तिथि ठाद।

† वा० रासो में एक स्थान पर राजमती कहती है—

मइ काँइ नवि बोलियो। देवर मनावइ अरी बड़ो जेठ॥ पृ० ५४

सभव है कि यहाँ कवि का तात्पर्य बीसलदेव के छोटे भाइ सोमेश्वर और बड़े भाई जगदेव से हो। ऐसी दशा में यही मानना पड़ेगा कि उसका बड़ा भाइ वर्तमान था, पर वह गद्दी से उतार दिया गया था। उसके भाई के विषय में एक स्थान पर और लिखा है कि बीसलदेव के लौटने पर वह अपने भाई भतीजे से मिलता है। (भाइ भतीजा राव का। माथ्या महा नन बीसलराय॥ पृ० ९६) सभवत यह उसके छोटे भाई के विषय में है।

‡ परन्तु हम्मीर महाकाव्य और प्रबधकोष की हस्तलिखित पुस्तकों के अन्त में दी हुई चौहानों की वंशावली में उसका नाम जगदेव मिलता है। (ना० प्र० पत्रिका, भाग १ (नवीन सस्करण) अक ४ पृ० ३९६.)

रणत' राजपुताने के कविगण ऐसे अन्यायी राजाओं का उल्लेख नहीं करते थे।

केवल नरपति नाल्ह के कथन से यह पता चलता है कि उसकी बहन का नाम अकन कुँवर था*। इसके विषय में और कहीं कुछ उल्लेख नहीं है।

(४) उडीसा जाते समय बीसलदेव को उसकी भावज समझाती है और कहती है—'तुम सात बरस पहले भी बाहर रहे इस प्रकार जनम भर बाहर रहते हो' †इत्यादि। इससे यह ज्ञात होता है कि बीसलदेव उडीसा जाने के पूर्व भी सात वर्ष के लिये बाहर युद्धार्थ गया था और वह प्राय अपना अधिक समय बाहर युद्धों में व्यतीत करता था।

बीसलदेव का राजत्व काल सं०१२१०–१२२० तक माना जाता है। उसने इन्हीं दस वर्षों में विन्ध्य से लेकर हिमालय तक की भूमि विजय की हो और आर्यावर्त को मुसल्मानों से रहित किया हो, यह माननीय नहीं है। इस भारी काम के लिये उसे कम से कम बीस वर्ष लगे रहे होंगे। यह असत्य तथा असभव नहीं कि वह उडीसा जाने के पूर्व भी एक वार सात वर्ष तक युद्धार्थ बाहर रहा हो। अपनी वीरता और युद्ध-कौशल ही के कारण वह अपने भाई का उत्तराधिकारी बनाया गया था।

(५) बीसलदेव ने उडीसा जाते समय तथा राजमती को

---

* म्हारइ राइ–बहनड़ी अकन कुँआर। पृ० ५७

† सात बरस पेहलो रह्यो।

× × ×

लाहो लेना जनम गो। पृ० ४४

लिवाने धार जाते समय अपने भतीजे को राज सौंपा था *।

इतिहास से इस बात का प्रमाण मिलता है कि वीसलदेव का उत्तराधिकारी उसका भतीजा जगदेव का पुत्र (पृथ्वीभट) हुआ। इस पृथ्वीभट ने वीसलदेव के पुत्र अमरगागेय से राज छीना था। पृथ्वीभट का पहला शिलालेख वि० स० १२२४ का हाँसी में मिला है †।

मेवाड राज्य के जहाजपुर जिले के धौड गाँव के पास के रूठी राणी के मदिर के स्तभ पर वि० स० १२२५ ज्येष्ठ वदी १३ का पृथ्वीदेव (पृथ्वीभट) का एक लेख खुदा है । उसमे उसे 'रण खेत मे अपने भुजबल से साकभरी के राजा को जीतने-वाला लिखा है' ‡।

पृथ्वीराज विजय में लिखा है—'पृथ्वीराज के द्वारा सूर्यवश (चौहानवश) की उन्नति को देखते हुए यमराज ने इस (विग्रह-राज के पुत्र) अमरगागेय को हर लिया ×।' इससे पता चलता है कि वीसलदेव का पुत्र अमरगागेय अधिक दिनों तक जीवित नहा रहा । उसके पश्चात् (चाहे उसे मारकर) पृथ्वीभट, जो वीसल-देव का भतीजा था, सवत् १२२४ में उसका उत्तराधिकारी हुआ ।

यहाँ चिंतनीय बात यह है कि वीसलदेव ने उडीसा तथा वहाँ से लौट कर घर जाते समय भी अपने भतीजे को राज

---

* देखो वीसलदेवरासो, पृ० ५६

† देखो Indian Antiquary Vol XIV p 218

‡ देखो ना० प्र० पत्रिका भा० १, अक ४, पृ० ३६७

× सुनोप्यमरगाङ्गेयो निन्येस्य रविसूनुना ।
उन्नति रविवशस्य पृथ्वीराजेन पश्यता ॥ सर्ग ८, ५४

सौंपा था। अत यही मानना पड़ेगा कि दोनो अवसरो पर उसको पुत्र नहीं था। उडीसा जाने का समय यदि हम विक्रम सवत् १२०७—८ ही मानें। तो उस समय उसके पुत्र अमरगागेय का जन्म नहीं हुआ था, यह मानना पड़ेगा। पर यदि हम उर्डीसा प्रवास के वाद बीसलदेव का लौटना सवत् १२१२ ही माने, तो उस समय भी उसके पुत्र का होना नही मान सकते। सभव है कि उसके पुत्र का जन्म उसके पश्चात् हुआ हो। ऐसा हो भी सकता है, क्योंकि बीसलदेव के पश्चात् उसके पुत्र का कोई शिलालेख नहीं मिलता। इस से यह अनुमान होता है कि उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र की मृत्यु अल्प काल ही मे हुई होगी। बीसलदेव तथा उसके पुत्र दोनों की मृत्यु सवत् १२२१ और १२२४ के बीच किसी समय हुई, यह निश्चित है *। अब यदि अमरगागेय की अवस्था मृत्यु के समय दस या बारह वर्ष मानी जाय, तो उसका जन्म १२१२ के बाद ही होगा। अतएव बीसल-देवरासो के निर्माण काल के समय बीसलदेव के पुत्र का जन्म नहीं हुआ था, इसी लिये उसे अपने भतीजे को राज्यभार सौंपना पडा था।

बीसलदेव रासो मे नरपति नाल्ह ने लिखा है—

कोक भतीजौ सूँपजए राज।

इस से कुछ लोगों ने यह मान लिया है कि उसके भतीजे का नाम कोक या कोकि था। वास्तव मे यह बात प्रतीत नहीं होती कि कवि का तात्पर्य किसी नाम विशेष से है। 'कोकि'

---

* देखो ना० प्र० पत्रिका भाग १, अक ४, पृ० ३८७

का साधारण अर्थ बुलाकर होगा। 'कोकना' का अर्थ कोलाहल करना या पुकारना होगा। कवि ने कई स्थानों पर इस शब्द का प्रयोग किया है, यथा—

(१) अतेवर सहू कोकियो।
(२) कोकि भतीजौ सौंप्यो राज।
(३) कोकै पाड्यौ अरि परधान।

(६) बीसलदेव के उड़ीसा चले जाने पर जब राजमती पाँडे को उसके पास पत्र लेकर भेजती है, तब वह कहती है—"पाँडे मेरे प्रिय की बाइस की अवस्था है, इत्यादि।"*

राजमती ने बीसलदेव के कई वर्ष उड़ीसा में रहने पर पाडे को भेजा था। यदि हम बीसलदेव का उडीसा जाना सवत् १२०७ ८ में माने, जैसा ऊपर मानना पड़ा है और उसका वापस आना सवत् १२११—१२ ही माने तो यह मानना पड़ेगा कि पाडे सवत् १२१०में उडीसा गया होगा। उसे उड़ीसा पहुँचने में सात मास लगे थे†। यदि इतना ही समय बीसलदेव को उडीसा से आने में लगा माने तो उसके अजमेर पहुँचने और पाडे के वहाँ जाने के समय मे लगभग चार मास का अतर होगा। बीसलदेव के उड़ीसा से लौटने पर राजमती धार गई, बीसलदेव धार गया और वापस आया। इसके लिये भी यदि ४, ५ मास रखें तो सब मिला १९, २० मास होगे। यदि हम यह भी मान लें कि इन सब बातों के होने के

---

* प डवा "हाँ को प्रिय छइ इण तो सहिनाण।
बरस बावीस की बालो-वेस।
दन्त कवाड्या, सिर चिलनकिना केस॥ पृ० ७७

† मासमइ मास पहू तउ वो जाई। पृ० ७६

पश्चात् कवि ने उसी वर्ष (सभवत बीसलदेव के धार से लौटने पर) रासो रच कर गाया, तो हमे यह मानना पडेगा कि सवत् १२१२ के जेष्ठ के १९, २० महीने पूर्व पाडे उड़ीसा गया होगा। अत. उसका जाना १२१०—११ में हुआ होगा। उस समय यदि बीसलदेव की अवस्था २२ वर्ष मानें, तो उसकी मृत्यु सवत् १२२१—१२२४ मे ३२—३६ वर्ष की अवस्था में हुई होगी। यदि ऐसा हुआ तो उसका जन्म सवत् ११८९ के लगभग हुआ होगा। इस अवस्था में यह मानना पडेगा कि उसने अपने पिता के जीवन काल (सवत् १२०७—८) में ही युद्धादि मे सम्मिलित होना आरभ कर दिया होगा और वह राजा होने के समय २२ वर्ष के लगभग रहा होगा।

यद्यपि यह अवस्था ठीक प्रमाणिक नहीं मानी जा सक्ती, फिर भी कवि नरपति नाल्ह के कथन मे सत्य कुछ न कुछ है। बीसलदेव अधिक अवस्था को प्राप्त होकर नहीं मरा, क्योंकि उसका पुत्र उसकी मृत्यु के समय अल्प अवस्था का था, जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है। यदि बीसलदेव की अवस्था उसकी मृत्यु के समय ३६ मानें, तो उसके पुत्र का जन्म उसकी २४ वर्ष की अवस्था मे हुआ होगा और उसके पुत्र का जन्म उसके उडीसा से लौटने के पश्चात मानना पडेगा। बीसलदेव के अन्य किसी पुत्र का उल्लेख भी नहीं मिलता। केवल एक ही पुत्र अमरगागेय था। ऐसी दशा में यही मानना पडेगा कि यह उसका प्रथम पुत्र था और बीसलदेव की अल्प अवस्था मे मृत्यु होने के कारण तथा उसके पुत्र के अल्प अवस्था में होने के कारण उसके भतीजे ने उससे राज्य छीन लिया।

(७) वीसलदेव उड़ीसा जाने के पूर्व राजमती से बात चीत करते समय कहता है—तू बारह वर्ष की गोरी (स्त्री) है*इत्यादि। यदि हम कवि प्रथा के अनुसार नाल्ह का 'बारह बरस की गोरडी, लिखना किसी युवती स्त्री के लिये मानें, तो यह भी ठीक नहीं होगा, क्योंकि स्त्रियों की युवावस्था का समय १५, १६ वर्ष मानना युक्त है। राजमती का अल्प अवस्था में विवाह होना हो सकता है, क्योंकि हिन्दुओं में उस समय अधिकतर लोग 'अष्ट वर्षा भवेन् गौरी दश वर्षा च रोहिणी' पर अध विश्वास करते थे।

(८) वीसलदेव जब राजमती को लेकर धार से लौटा, तब उसे रास्ते में आनासागर मिला †। आनासागर के विषय में बाबू श्यामसुन्दर दास जी का मत है कि वह अनार्पण देवी के नाम पर बना था ‡। अन्य लोगों का मत है कि यह सागर अर्णोराज का बनवाया हुआ था ×। बाबू साहब वीसलदेव में आए हुए आनासागर और अर्णोराज द्वारा निर्मित आनासागर में भेद करते हैं। यह बात चिंतनीय है।

जाँच करने पर यह बात मालूम होती है कि 'आनासागर' केवल एक ही है और वह अजमेर के निकट कुछ दूरी पर है। यह

---

* नवमा गोरी तू, जैसलमेर।
परणी आवा गढ अजमेर॥
बारह बरस की गोरडी॥ पृ० ३४

† दाढउ आनासागर ममद तणी बहार॥ पृ० २७

‡ देखो ना० प्र० पत्रिका, सन् १९०१ (भाग ५) पृ० १४१

× देखो 'भारत के प्राचीन राजवंश' पृ० २४०

बहुत सुन्दर सागर है। वास्तव में यह प्राकृतिक झील ही जान पड़ता है जिसके एक तरफ कृत्रिम बाँध बना हुआ है, जिसके कारण उसमें पानी एकत्र हो जाता है। सभव है कि इस बाँध का निर्माण अर्णोराज ने कराया हो। यह बात प्रचलित किवदती से भी पुष्ट होती है।

नरपति नाल्ह के समय में अर्णोराज (वीसलदेव के पिता) का बनवाया हुआ यह सागर नवीन रहा होगा, उसकी शोभा उस समय बहुत ही सुन्दर रही होगी। जान पड़ता है कि कवि ने अपने समय के नवीन निर्मित सागर की अतुलनीय शोभा का तथा वीसलदेव का वर्णन करते समय उसके पिता की कीर्ति का स्मरण दिलाने के लिये ही इसका उल्लेख किया है। साराश यह कि नाल्ह द्वारा वीसलदेव रासो में उल्लिखित आनासागर वही आनासागर है, जो उसके पिता अर्णोराज ने बनवाया था।

(९) नरपति नाल्ह ने वीसलदेव रासो में वीसलदेव के सरदारों में एक मुसलमान का उल्लेख किया है *। यह तो ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध है कि वीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) ने मुसल्मानों से युद्ध किया था †। अत उस समय में नरपति नाल्ह का उसके सरदारों में किसी मुसलमान के होने, का उल्लेख अनुचित नहीं है। उसने वीसलदेव रासो में बहुत से फारसी अर्बी, शब्दों का व्यवहार किया है। उन शब्दों में अधिकतर शब्द ऐसे हैं जो राजकीय तथा सैनिक बोल चाल के हैं। यवनों की सगति से ऐसे

---

* चढ़ि चाल्यो है मीर कबीर। पृ० १७

† देखो 'भारत के प्राचीन राजवश' पृ० २४४—४५।

शब्दों का प्रयोग हिन्दू राजाओं के यहाँ भी होने लगा था। उन शब्दों पर विशेष रूप से बीसलदेव रासो की भाषा पर विचार करते समय लिखा जायगा।

(१०) बीसलदेव को उडीसा जाने के पूर्व अपने पिता का श्राद्ध करना पडा था *। इससे पता चलता है कि उसका पिता उसके उडीसा जाने के पूर्व मर चुका था। उसके विवाह (राजमती से) के समय भी जान पड़ता है कि उसका पिता जीवित नहीं था, क्योंकि नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो में इसका कोई जिक्र नहीं किया है। पर उसकी माता जीवित थी †।

साराश

ऊपर के सारे कथन का साराश यह है कि बीसलदेव रासो का नायक बीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) ही था और उसने धार नृप भोजवशीय किसी प्रतापी राजा की कन्या से विवाह किया था। इसके पश्चात् वह तीर्थयात्रा के प्रारभ में उडीसा गया और उसने वहाँ के राजाओं को विजय किया। उड़ीसा जाने के पूर्व वह राजा हो चुका था। अपनी अनुपस्थिति मे उसने अपने

---

* पानरपड भरावइ छइ राइ।

* * *

मराय सराव्यो बीसलराव।

† माई तेड़ावा राव का।

मत्र मिलि मत्र कियो तिणि ठाइ।

* * *

माता भूरइ राव की।

भतीजे को राजा बनाया था। संवत १२१२ तक इसके कोई पुत्र नहीं हुआ था। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। उसकी माता जीवित थी। उसने स्वयं मुसलमानों से युद्ध किया था। उसके यहाँ मुसल्मान सरदार नौकर थे। उसके समय में बहुत से मुसल्मानी शब्द राजकीय बोलचाल में आ गए थे। उसका भाई जगदेव पितृहत्या करके राज्याधिकारी होने पर गद्दी पर से उतार दिया गया था।

भाषा

बीसलदेव रासो की भाषा हिन्दी भाषा का प्राचीनतम उदाहरण है। यद्यपि इस ग्रंथ के कई शताब्दियों तक मौखिक रहने के कारण इसका रूप कुछ बदल गया है, फिर भी इसके अंतस्थल में प्राचीनता का ढाँचा अब भी वर्तमान है। इस विषय पर भाषा विज्ञान की दृष्टि से विवेचन करने के पूर्व पहले इस ग्रंथ की भाषा से उस भाषा का संक्षिप्त व्याकरण दे देना उचित जान पड़ता है।

संक्षिप्त व्याकरण

(१) कारक

बीसलदेव रासो में कारक दो प्रकार से व्यक्त होते हैं। कुछ में तो विभक्तियों का प्रयोग हुआ है, कुछ में कारक-चिह्न लगे हैं। इस प्रकार इसकी भाषा में कारकों की संयोगात्मक और वियोगा- दोनों अवस्थाएँ मिलती हैं।

	अवासाँ, सवाराँ, प्रधानपणइ, देसा आगणाँ	
संबोधन०	पाड्या, एकदन्तो, सखी, रूत, वीर	

(ख) वियोगात्मक अवस्था ।

	एक०	बहु०
कर्ता०	ॐ	ॐ
कर्म०	को, थे	
करण०	नी, नइ ॐ	
सपक०	सौं, सू	
सम्प्र०	को, लियाँ	
अपा०	सु सू, सों, सू, ते, थी, सौं, सो, हुइ (भ्यस्–सइ–से)	
संबध०	क, का, कइ, के, कै, की, को, कौ, तणा तणी, तणइ, तणे, तणौ, रा, री	
अधि०	माँ, महँ माँहि, माँहु, मँझारि, तर, माही	

ॐ १ इन्द्रनी उपायो आप हइ । पृ० २४.
२ राणी नइ दियो कोडि टका बलि हार । पृ० ८८

	एक०	बहु०
अन्य०	दीठो, किया, दियो, पडी (स्त्री०) वधीयो, चाली (स्त्री०), परूसज्यो, हुई (स्त्री०), हणी (स्त्री०) पहुँती, जन्मी (स्त्री०), विध्वसी (स्त्री०) चमकियो, बॉध्यो-इत्यादि—	

(२)

[है, था, थी, या (छइ) लगाकर बना हुआ भूतकाल ।]

	एक०	बहु०
उत्तम०	. . .	
मध्यम०	... . ..	
अन्य०	जोयो छै, उठी छै, फेखो है, हुवउ हो, चाल्यो हइ, मोकलावी छइ, जुहारी छइ, आव्यो छइ, ऊभो छै, कह्यो हो, पहुतो छइ, गलीयो छइ, पहुँतो छइ, पलारायो छइ, छायो है, जिमावइ छइ, वैसाड़ी छइ, दिखाली छइ, पुजाई थी, दीई थी,	

बगनो, ताजीनो, लवाजिवा, ताजी, खुदकार, खुरासान, पायगाह, किसमत, चाबुक इत्यादि ।

ये शब्द जैसा कि पहले कहा जा चुका है, मुसलमानों के ससर्ग से भाषा में आ गए हैं ।

अभी तक हिंदी साहित्य मे सब से प्राचीन ग्रथ पृथ्वीराज रासो माना जाता है, पर वास्तव मे यह बात नहीं है। निर्माण काल तथा भाषा की दृष्टि से बीसलदेव रासो को पृथ्वीराज रासो से प्राचीन मानना पडेगा । पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता के विषय में भी अभी विद्वानों को सदेह है । उस की भाषा को देखते हुए तो यह कोई नहीं कह सकता कि वह ग्रथ बहुत ही हाल में लिखा गया है, पर यह अवश्य कहा जा सकता है, कि उसकी भाषा बोल चाल की तत्कालीन स्वाभाविक भाषा नहीं है । उसमे कृत्रिमता तथा साहित्य-पन अधिक है। बीसलदेव रासो के विषय मे यह बात नहीं है । इसकी भाषा बोल चाल की भाषा है । हमारा तो अनुमान है कि पश्चिमी हिन्दी का प्राचीनतम उदाहरण अभी तक यदि कहीं मिल सकता है, तो इसी ग्रथ मे। इस ग्रथ की भाषा उस समय की माननी चाहिए, जब हिन्दी बोलचाल की भाषा हो चुकी थी, पर उसे साहित्य में स्थान नहीं मिला था ।

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति कब हुई, इसका कोई निश्चित समय बतलाना असमव है। पर साधारणतया यह मानना पड़ेगा कि ईसवी १० वीं शताब्दि के पश्चात् उसका विकास आरभ हुआ और १२ वीं शताब्दी तक वह साहित्य में प्रवेश पाने लगी। नरपति नाल्ह ने अपने रासो का निर्माण उस समय किया, जब हिन्दी का साहित्य में विशेष आदर नहीं था। उस समय भी

दिहाड़उ, हियड़इ, गोरडी, मोचड़ी, मूदड़ड, वइहनड़ी, ऑंखडी—इत्यादि ।

भाषा की प्राचीनता

बीसलदेव रासो की भाषा यद्यपि बहुत कुछ नवीन रूप में हो गई है, तो भी उसकी प्राचीनता एक दम लुप्त नहीं हो गई है। प्राय कारकों, क्रियाओ और सज्ञाओं के रूप प्राचीन हैं ।

कारकों के विषय मे इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कुछ कारक-चिह्नों का रूप नवीन हो गया है । पर जिस समय की यह पुस्तक है, उस समय कारकों के वियोगात्मक तथा सयोगात्मक दोनो रूप थे । हाँ, इतना अवश्य था कि वियोगात्मक रूप का विकास हो रहा था और सयोगात्मक रूप क्रमश लुप्त होता जा रहा था ।

क्रियाओं मे यह बात हम स्पष्ट देख सकते हैं कि कुछ क्रियाओ का रूप प्राचीन सस्कृत तथा प्राकृत की क्रियाओं के रूप से निकला है। कुछ नवीन वनी हैं, जैसे वे क्रियाएँ जिनमें कालभेद खडी वोली की भाँति 'है' क्रिया के लगने से होता है । भविष्य-कालिक क्रिया का रूप प्राचीन है और वे सस्कृत की भाँति 'स्यति' आदि के रूपान्तरों से के मेल से वनी है ।

सज्ञाओं के विषय मे इतना कहना आवश्यक है कि कुछ तो सस्कृत, प्राकृत और अपभ्रश से आई है, कुछ देशज हैं । इनमे से अधिकाश का रूप प्राचीन ही है । यहाँ एक बात याद दिलाना आवश्यक है कि वीसलदेव रासो मे कुछ सज्ञाएँ ऐसी आई हैं जो हमारी भाषा की नहीं हैं। जैसे-महल, इनाम, नेजा,

धगनी, ताजीनो, तवाजिवा, ताजी, खुदकार, खुरासान, पायगाह, किसमत, चाबुक इत्यादि ।

ये शब्द जैसा कि पहले कहा जा चुका है, मुसल्मानों के संसर्ग से भाषा में आ गए हैं।

अभी तक हिंदी साहित्य में सब से प्राचीन ग्रंथ पृथ्वीराज रासो माना जाता है, पर वास्तव में यह बात नहीं है। निर्माण काल तथा भाषा की दृष्टि से बीसलदेव रासो को पृथ्वीराज रासो से प्राचीन मानना पड़ेगा। पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता के विषय में भी अभी विद्वानों को संदेह है। उस की भाषा को देखते हुए तो यह कोई नहीं कह सकता कि वह ग्रंथ बहुत ही हाल में लिखा गया है, पर यह अवश्य कहा जा सकता है, कि उसकी भाषा बोल चाल की तत्कालीन स्वाभाविक भाषा नहीं है। उसमें कृत्रिमता तथा साहित्य-पन अधिक है। बीसलदेव रासो के विषय में यह बात नहीं है। इसकी भाषा बोल चाल की भाषा है। हमारा तो अनुमान है कि पश्चिमी हिन्दी का प्राचीनतम उदाहरण अभी तक यदि कहीं मिल सकता है, तो इसी ग्रंथ में। इस ग्रंथ की भाषा उस समय की माननी चाहिए, जब हिन्दी बोलचाल की भाषा हो चुकी थी, पर उसे साहित्य में स्थान नहीं मिला था।

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति कब हुई, इसका कोई निश्चित समय बतलाना असंभव है। पर साधारणतया यह मानना पड़ेगा कि ईसवी १० वीं शताब्दि के पश्चात् उसका विकास आरंभ हुआ और १२ वीं शताब्दी तक वह साहित्य में प्रवेश पाने लगी। नरपति नाल्ह ने अपने रासो का निर्माण उस समय किया, जब हिन्दी का साहित्य में विशेष आदर नहीं था। उस समय भी

लोग साहित्य की भाषा संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश ही रखते थे। हमारा कवि साधारण भाट था, पर था उत्साही और निर्भीक। उसने प्रचलित भाषा में तत्कालीन शासक के विषय में चार खण्डों का एक काव्य बना डाला। उसके काव्य का प्रचार लोक में बहुत हुआ होगा। इसका कारण उसके काव्य के नायक (तत्कालीन शासक) की सर्वप्रियता और प्रसिद्धि भी थी। बीसल देव प्रतापी राजा था। जनता उससे बड़ी प्रसन्न रहती थी। उसकी अचल कीर्ति सभी गाते फिरते थे। नरपति नाल्ह ने ऐसी स्थिति में लोक मनोरंजनार्थ अपने रासो की रचना की थी और इसी कारण उसे प्रचलित भाषा का आश्रय लेना पड़ा था।

नरपति नाल्ह की भाषा का ढाँचा पश्चिमी है। हमें तो यह कहने का साहस होता है कि उसकी भाषा आधुनिक खड़ी बोली की नानी या दादी है। इसमें हम खड़ी बोली की प्रायः सभी विशेषताएँ पाते हैं।

(१) खड़ी बोली में क्रिया का काल प्रायः 'है' लगाकर व्यक्त किया जाता है। सो यह हम देख ही चुके हैं कि नरपति नाल्ह ने वर्तमान तथा भूत कालिक क्रियाओं में 'है' के पूर्व रूप 'छइ' का व्यवहार किया है।

(२) खड़ी बोली मे क्रियाओं में लिंग भेद होता है। यह भी हम इस रासो में पाते हैं। यथा—

(क) अकर्म० क्रिया में—

(१) सा धन खलती कसोरज्यु।

(२) जणिक बैठी प्रिय की खोलि।

(३) राजी-कुँवर हरखी फिरई।

(ख) सकर्मक क्रिया में—

(१) चीठी आपी तणी राई।

(२) वचन बोल्या तिणि ठाई।

(३) वाँची उपली आलि।

(४) चीरी रही घन हीयडउ लगाई।

(३) खड़ी बोली में कर्त्ता (वास्तव में करण) के साथ 'ने' का प्रयोग होता है और सकर्मक भूत क्रिया का लिंग और वचन भी कर्म के अनुसार होता है। नरपति नाल्ह ने अपने रासो में 'ने' का प्रयोग कम किया है। कारण यह जान पडता है कि कविता में 'ने' का अधिक प्रयोग खटकता है। पर फिर भी उसने एक आध स्थान पर किया ही है। यथा—

(१) इन्द्रनी उपायो आपहइ। पृ० २४

(२) राणी नइ दियो कोडि टकावलि हार। पृ० ८८

(४) खडी बोली के कारक-चिह्न वियोगावस्था में हैं। ऊपर हम देख चुके हैं कि 'नाल्ह' की भाषा में कारक-चिह्न दोनों अवस्थाओं में हैं। उस समय उनका कोई निश्चित रूप नहीं था। प्राय दोनों प्रकार के रूपों का प्रयोग होता था।

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट है कि खडी बोली की सारी विशेषताएँ बीसलदेव रासो की भाषा में वर्तमान हैं। अत यह मानना पडेगा कि उस समय खड़ी बोली का अस्तित्व था और उसकी जन्मभूमि पश्चिम (मथुरा के पश्चिम राजपूताने तक) में

थी। धीरे धीरे इसका प्रचार बढ़ा और अब वह सारे भारत का व्यवहारिक भाषा हो रही है।

बीसलदेव रासो की भाषा वास्तव में उस समय (सवत् १२१२•) की भाषा है, इसकी भी परीक्षा कर लेना आवश्यक है, क्योंकि कुछ लोगों का मत है कि यह ग्रथ भी पृथ्वीराज रासो की भाँति किसी भाट ने इतिहास-काल की तिमिरावस्था में रचा है, अत यह बहुत पीछे लिखा गया है।

इसके उत्तर में दो बातें कही जा सकती हैं। एक तो यह कि पृथ्वीराज रासो की भाँति यह कोई बृहद् ग्रथ नहीं और न इसमें कवि ने अपने या अपने नायक के विषय मे बडी बडी बातें लिखकर अपने आप को प्रसिद्ध करने की इच्छा ही की है। ऐतिहासिक दृष्टि से तो यह ग्रथ लिखा ही नहीं गया है।

ऐतिहासिक दृष्टि से जो कुछ थोडी बहुत इस ग्रथ की परीक्षा हो सकती थी, वह ऊपर हो चुकी है। दूसरे, अब भाषा की दृष्टि से इसकी थोड़ी परीक्षा कर लेना उचित है। इसकी भाषा के सक्षिप्त व्याकरण में इसका ढाँचा स्पष्ट हो गया है। ऊपर कहा जा चुका है कि जिस समय यह ग्रथ निर्मित हुआ, उस समय साहित्य की भाषा कुछ और थी। प्राय देखा जाता है कि साहित्य की भाषा अपने समय की भाषा से कुछ प्राचीन होती है। काव्य में वही भाषा चल सकती है, जो पहले से परिमार्जित और प्रयुक्त होते होते मँज गई हो। एकाएक कोई अच्छा कवि अपने समय की बोल चाल की भाषा में काव्य रचने का साहस नहीं करता। यदि करे भी तो वह सफल मनोरथ न होगा। काव्य या गद्य मे तत्कालीन भाषा का प्रयोग वही लेखक करते हैं जो

प्राचीन या परम्परागत साहित्यिक भाषा से अनभिज्ञ रहते हैं और जो अपनी अनभिज्ञता के कारण अपने समय की (यही नहीं वरन् अपनी) भाषा का प्रयोग करने के लिये विवश होते हैं।

नरपति नाल्ह न तो कोई बड़ा कवि था, न बहुत पढ़ा लिखा ही था। उसने प्रचलित भाषा में तुकबन्दियाँ की थी, अत उसकी भाषा उसी समय की माननी पड़ेगी जब उसने ग्रथ निर्माण किया था। हिन्दी भाषा के कुछ प्राचीन नमूने और मिले हैं जिनसे उस समय की भाषा का अन्दाज हो सकता है।

(१) होहिन्ति एत्थ वसे पुरिसा एहइय गाख महग्घा ।
इअ हाविऊण जेण पालीस परिग्गहो गहिओ ॥
(सवत् १०९९)

(२) विसामित्त गोत्त उतिम चरित त्तिमल पविचो गाण ।
अरघइ धड़णो ससिजय द्ववड्ढो भूवाण ॥
द्ववड्ढो पटि परिठिअऊँ खत्तिय विजय-पालु ।
जेणे काइउ रणि विजिणिउ तइ सुअ भुवण पालु ॥
कलचुरि गुजर ससहरह दखिणचइ सुख अड ।
चहुरा अहरण विजिणण हरिसराह भवज दड ॥
सधरि भगरि रण रहसु गउ हरिसरुअ कि अग्र ।
ह्यइव पठियर सुहउ समुहु न कोवु समत्र ॥
जेणे रजिऊ जग पउरिण वु ग्राम महागठ हेठि ।
विजय सीह सुर अठि अह अरियणनियहिंत पेठि ॥
जो चित्तोडह जुझियउ जिण ठिली दलु जितु ।
सो सुपससहि रभइ कइ हरि सर आविय सुत्त ॥
चेदिअ गुजर गौदहइ कीय अधिय भारि ।

विजय सीह कित सहलहु पौरिस कह ससार ॥
भुमुक देवह पत्र पएधि पभडि अकित्ति सभव्व ।
विजय सीह दिढ चित्तु करि आरभिअ सुरा सव्व ॥

यह लेख एक शिला पर खुदा हुआ है जो, दमोह जिले में मिली थी। इसकी भाषा पृथ्वीराज रासो की भाषा से बहुत कुछ समानता रखती है। क्योंकि यह भी उसकी भाँति बोल चाल की न होकर साहित्यिक है। पर फिर भी उसमें और वीसलदेव रासो की भाषा में कुछ समानता है। उदाहरणार्थ—

(१) सर्वनाम—जेणो, जिण, (येन) सो (स), और जो (य)—मिलाइये नरपति नाल्ह के 'जिण' सा (स्त्री०) और ओ (वह) से।

(२) क्रियाएँ—आरभिअ, सहलहु, कह, और कीय (भूत०) मिलाइए वीसलदेव रासो के 'आरमइ', 'साँभलों', 'कहई', और 'कियो' से।

(३) विभक्ति—करण के लिये 'एण' (जेणो), अधिकरण के लिये 'ह' और 'इ' (जैसे चित्तोडह और रणि मे) का प्रयोग हुआ है प्राय ऐसी ही विभक्तियाँ वीसलदेव रासो में प्रयुक्त हुई हैं।

उस शिलालेख की मँजी हुई भाषा को यदि हम 'नरपति' की बोल चाल की भाषा में परिणत करें, तो उसके रूप में बहुत ही कम अंतर पडेगा। उदाहरणार्थ हम उक्त शिलालेख की दो पक्तियों को लेते हैं—

नोट—ये अवतरण ना० प्र० पत्रिका भाग ६ अक १ (स्वत् १९८२) पृ० ७,५ से लिए गए हैं।

(१) जो चित्तोडह जुम्झिग्रउ जिण ढिली दलु जित्तु ।
(२) विजय सिंह कित सहलहु, पौरस कह ससारि ।
नरपति की भाषा में उसका रूप सभवत यह होगा—
[१] जो चितोडाँ (या–चितोडइ) जुम्झियो ।
जिण ढीली दल जीतज्यो ॥
\+ \+ \+
[२] विजय सिंहह कीति सॉभलो ।
जह (या जास) पौरिस कहइ ससार ॥

उपर्युक्त कथन का तात्पर्य यह कि यद्यपि १२ वीं शताब्दी की साहित्यिक भाषा और नरपति के बोल चाल की भाषा में पूर्णतया साम्य नहीं, तो भी अशत समानता अवश्य है । इस से यह बात स्पष्ट होती है कि नरपति नाल्ह की भाषा १२ वीं शताब्दी की है । यह बात अवश्य है कि नरपति के रासो के बहुत दिनों तक मौखिक रहने के कारण उसकी भाषा मे परिवर्तन हो गया है । पर इससे यह नहीं कहा जा सकता यह ग्रथ जाली है और अपने उल्लिखित काल से बहुत पीछे निर्मित हुआ है ।

ग्रंथ की उपयोगिता ।

इस ग्रथ की साहित्यिक उपयोगिता का कारण यह है कि यह साहित्य का प्राचीनतम ग्रथ है । पर इसका विशेष साहित्यिक मूल्य नहीं है क्योंकि इस दृष्टि से यह ग्रथ उच्चकोटि का नहीं है । ऐतिहासिक मूल्य भी इस ग्रथ का उतना अधिक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि न तो यह किसी इतिहास लेखक द्वारा ही प्रणीत हुआ है और न इतिहास की दृष्टि से ही इसका निर्माण हुआ है । इस

ग्रंथ का यदि किसी प्रकार अमूल्य उपयोग हो सकता है, तो भाषा विज्ञान की दृष्टि से।

हिंदी साहित्य का प्राचीनतम ग्रंथ होने के अतिरिक्त यह ग्रंथ इस बात का प्रमाण है कि १२ वीं शताब्दी में भारतवर्ष में हिन्दी भाषा का भली भाँति प्रचार था और वह सर्व साधारण की भाषा थी। सर्व साधारण की भाषा होने के अतिरिक्त वह साहित्य की भाषा होने का भी प्रयत्न कर रही थी। इस प्रयत्न में भाट और चारण गण उसके विशेष सहायक थे।

खड़ी बोली की उत्पत्ति के विषय में अनुसन्धान करनेवाले सज्जनों को इस ग्रंथ की भाषा देखते हुए विश्वास हो जायगा कि पश्चिमीय प्रान्तो की बोलियों ही से खड़ी बोली की उत्पत्ति हुई है, और यह प्राय उन्ही स्थानों में उत्पन्न हुई है, जहाँ अपभ्रश का प्रचार पहले बहुतायत से था। इस ग्रंथ की भाषा को देखते हुए यह बात भी स्पष्ट हो जायगी कि रासो (पृथ्वी०) की भाषा हिन्दी भाषा का प्राचीनतम उदाहरण नहीं है। वह बहुत पीछे की है, और वह बहुत कुछ कृत्रिम और विकृत की हुई है। यह सब उसे साहित्यिक साँचे में ढालने की इच्छा रखनेवालों के कारण हुई है, यहाँ विषयान्तर में जाने के भय से हम पृथ्वीराज रासो की भाषा पर विशद रूप से अपना विचार प्रकट करना उचित नहीं समझते। पर सक्षेप में यह कह देते हैं कि पृथ्वीराज रासो के लेखक का आदर्श रासो लिखते समय अपभ्रश और प्राकृत के सुन्दर विकट काव्य थे। उसी कारण उसे रासो की भाषा को विरूप करना पड़ा। पीछे के कुछ उसके प्रशसकों और भक्तो ने भी उस पर बहुत कुछ कृपा की है, जिसके कारण हमें आज उसका विराट, भया-

नक और विकट रूप देखकर हमें, उसके विषय में अनेक शंकाएँ करने का अवसर मिलता है।

कवि

कवि नरपति नाल्ह कौन था, यह जानने के लिये हमें अन्यत्र कोई सामग्री अभी तक हस्तगत नहीं हुई है। कुछ लोगों का यह अनुमान कि यह कोई राजा था, ठीक नहीं है। उसने स्वयं अपने को स्थान स्थान पर 'व्यास' 'रसायण' आदि लिखा है। इससे प्रकट है कि वह कोई भाट था। 'नरपति' उसका नाम है 'नाल्ह' उसका कौटुंबिक नाम है। राजपूताने में अभी तक 'नरपति' 'महीपति' आदि नाम मिलते हैं, जिन्हें अब 'नापा' 'महपा' कहते हैं *। 'नरपति' साधारण भाट था जो इधर उधर तुकबन्दियाँ करके गाता फिरता था। यह कोई राजा नहीं था। कवि, चाहे जो कुछ हो, हमारी प्रशंसा का पात्र है। उसने प्रचलित भाषा में विजयी बीसलदेव का यश गान करके तत्कालीन भाषा को अमर कर दिया, उसी ही की कृपा से हम उस समय की प्राचीन भाषा के अब भी दर्शन कर सकते हैं। इस श्लाघनीय कार्य्य के लिये उसका नाम हिन्दी साहित्य के पृष्ठों पर सदा स्वर्ण अक्षरों में लिखा रहेगा।

---

* श्रद्धेय गौरीशंकर हीराचंद ओझा जी ने मुझे यह बात अपने एक पत्र द्वारा सूचित की है।

वक्तव्य

इस ग्रंथ के प्रकाशन के लिये मैं नागरीप्रचारिणी सभा और उसके प्रधान मंत्री बाबू श्यामसुन्दर दास जी को धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता। वास्तव में इस ग्रंथ के सम्पादन में मुझे जो कुछ सफलता हुई है वह मेरे विद्यागुरु श्रद्धेय बाबू श्यामसुन्दर दास जी ही के कारण हुई है। उन्हीं के निरन्तर प्रोत्साहन तथा अमूल्य उपदेशों ने मुझको इसके सम्पादन करने का साहस दिलाया है। हिन्दी साहित्य क्षेत्र में मैंने अभी पैर रखा है। किसी ग्रंथ का सुचारु रूप से सम्पादन करना मेरे लिये दुष्कर ही नहीं वरन् असंभव है। पर माननीय गुरु की आज्ञा स्वीकार कर के मैंने यह प्रथम प्रयास किया है। यह संभव नहीं कि मुझ से अनेक भूलें और त्रुटियाँ न हुई हों। सहृदय पाठक तथा माननीय विद्वज्जन उन्हें सुधारने तथा मुझ पर क्षमा करने की कृपा करेंगे।

उस ग्रंथ में आए हुए नामों की एक अनुक्रमणिका इस के साथ जोड़ दी गई है जिसके बनाने में मेरे मित्र पं० अयोध्यानाथ शर्मा एम० ए० ने मुझे बहुत सहायता दी है, जिसके लिये मैं उनका चिरकृतज्ञ हूँ। अस्तु—

बसंत पंचमी,
संवत् १९८२
काली महल, काशी।

सत्यजीवन वर्म्मा।

बीसलदेव रासो



प्रथम सर्ग

हस गाहणि मिग लोचनि नारि।
सीस समारइ[1] दिन गिणइ॥
जिण सिरजइ[2] उलिगण[3] घरनारि।
जाइ दिहाडाउ[4] झूरिताँ[5] ॥१॥
गौरी – नदन त्रिभुवन – सार। 1
नाद वेदाँ[6] थारै[7] उदर भँडार॥ 2
कर जोडे 'नरपति' कहइ। 5
मूषा वाहन तिराक सँदुर॥

---

१ शीश सँभालती हुइ (बाल सुलझाती हुई)। २ सिरजना–रचना करना। ३ उलिगण (उद्गता) बाहर गए हुए, मुसाफिर, युद्ध पर गए हुए। ४ दिहाडा = (दिवस) दिन, पुरानी हिंदी मे 'ड' या 'डल' प्रत्यय अल्प, कुत्सित, स्वार्थ के अर्थ म आता हे। यथा–सन्देसडा, मोरडा [सन्देश, मोर (मयूर)] ५ झूरना सूखना पछताना, विलाप करना। झूरता = विलाप करती हुई, (विरह मे) दुखित होती हुइ। ६ वेदों का। ७ तुम्हारे (तिहारे)।

वक्तव्य

इस ग्रंथ के प्रकाशन के लिये मैं नागरीप्रचारिणी सभा और उसके प्रधान मंत्री बाबू श्यामसुन्दर दास जी को धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता। वास्तव में इस ग्रंथ के सम्पादन में मुझे जो कुछ सफलता हुई है वह मेरे विद्यागुरु श्रद्धेय बाबू श्यामसुन्दर दास जी ही के कारण हुई है। उन्हीं के निरन्तर प्रोत्साहन तथा अमूल्य उपदेशों ने मुझको इसके सम्पादन करने का साहस दिलाया है। हिन्दी साहित्य क्षेत्र में मैंने अभी पैर रखा है। किसी ग्रंथ का सुचारु रूप से सम्पादन करना मेरे लिये दुष्कर ही नहीं वरन् असंभव है। पर माननीय गुरु की आज्ञा स्वीकार कर के मैंने यह प्रथम प्रयास किया है। यह संभव नहीं कि मुझ से अनेक भूलें और त्रुटियाँ न हुई हों। सहृदय पाठक तथा माननीय विद्वज्जन उन्हें सुधारने तथा मुझ पर क्षमा करने की कृपा करेंगे।

इस ग्रंथ में आए हुए नामों की एक अनुक्रमणिका इस के साथ जोड़ दी गई है जिसके बनाने में मेरे मित्र पं० अयोध्यानाथ शर्मा एम० ए० ने मुझे बहुत सहायता दी है, जिसके लिये मैं उनका चिरकृतज्ञ हूँ। अस्तु—

वसंत पंचमी,
संवत् १९८२
काली महल, काशी।



सत्यजीवन वर्म्मा।

बीसलदेव रासो



प्रथम सर्ग

हस वाहणि मिग लोचनि नारि।
सीस समारइ[1] दिन गिणइ॥
जिण सिरजइ[2] उलिगण[3] घरनारि।
जाइ दिहाडाउ[4] झूरिताँ[5] ॥१॥
गौरी – नदन त्रिभुवन – सार। 1
नाद वेदाँ[6] थारे[7] उदर भँडार॥ 2
कर जोडे 'नरपति' कहइ। 5
मूषा वाहन तिलक सँदुर॥

---

१ शीश सँभालती हुई (बाल सुलझाती हुई)। २ सिरजना—रचना करना। ३ उलिगाण (उद्गता) बाहर गए हुए, मुसाफिर, युद्ध पर गए हुए। ४ दिहाडा=(दिवस) दिन, पुरानी हिन्दी मे 'ड' या 'डल' प्रत्यय अल्प, कुत्सित, स्वार्थ के अर्थ म आता है। यथा—सन्देसडा, मोरडा [सन्देश, मोर (मयूर)] ५ झूरना-सूखना पछताना, विलाप करना। झूरन्ता=विलाप करती हुई, (विरह में) दुखित होती हुई। ६ वेदों का। ७ तुम्हारे (तिहारे)।

[२]

एक दतउ मुख झलमलइ[1]।
जाणिक[2] रोहणीउ[3] तप्पई सूर ॥२॥
'नाल्ह' रसायण[4] रस भरि गाई।
तुठी[5] सारदा त्रिभुवन-माई॥
उलिगणाँ गुण वरणतौं[6]।
कुकठ[7] कुमाणसाँ[8] जिण कहई रास[9]॥
अस्त्री-चरित-गति को लहइ?।
एकई आखर रस सवइ विणास[10] ॥३॥
तुठी सारदा त्रिभुवन-माई।
देव विनायक लागू हूँ पाय॥

---

१ झलमलाना चमकना। २ जानो-मानों। ३ रोहणी नक्षत्र में। ४ रसज्ञ-(कवि)। ५ तुष्ट हुई। ६ वर्णन करते हुए। ७ कुकथ्य-अकथ्य। ८ कुमनुष्यों का। ९ रास = गीत। १०. स्त्री चरित्र को कौन जान सकता है, अर्थात् जैसे स्त्री के चरित्र की गति जानना कठिन है, उसी प्रकार काव्य का भी मर्म जानना दुष्कर है। एक ही अक्षर (दुष्ट अर्थ वाला) सब रस नष्ट कर देता है। यह भाव भवभूति के "स्त्रीणां तथा वाचा साधुत्वे दुर्जनो जन" से मिलता है। 'आखर' के स्थान में 'अखइ' भी पाठ मिलता है। तब उसका अर्थ होगा —स्त्री के चरित्र को लेकर अर्थात् शृंगार रस को लेकर (मैं कविता करता हूँ) यही एक अक्षय (अखइ) है और सब रस (शृंगार के अतिरिक्त) विनष्ट हो जाते हैं। विणास = विनाशी, विनाश-शील। पहला पाठ अच्छा जान पड़ता है।

तोहिं लवोदर वोनमूँ[1]।
चउसठि जोगिनि का अगिवाँण[2] ॥
चउथ जोहारूँ खोपरॉ[3]।
भूलेउ अक्खर आणजें[4] ठाइँ ॥४॥
हँस-वाहणि देवी कर धरइ वीण। ।
कुकठ कथूँ वोलूँ कुल हीण ॥
तो तूठॉ[5] वर[6] आपिजइ।
भूलउ हो आखर आणि वहोडि[6] ॥ ५
वीसल-दे-रास प्रगासतॉ[7]।
'नाल्ह' कहइ जिणि आवइ हो खोडि[8]॥५॥
कसमीरॉ पाटणह[9] मॅझारि।
सारदा तुठी ब्रह्म - कुमारि ॥
'नाल्ह' रसायण नर भणइ।
हियडइ[10] हरपि गायण कइ भाइ[11] ॥
खेलॉ मेल्हा[12] मॉडली।
वइस[13] सभा मॉहि मोहेउ[14] छइ राइ ॥६।

१ विनय करता हू। निनऊँ-(अवधी)। २ अग्रगामी। ३ नारियल। ४ आगने-(आ + नयेत्) लाना। ५ तुष्ट होने पर-(तुष्टन्या)। ६ वहोडि = वाहुडना, पुन स्मरण होना। ७ प्रकाश करते हुए, कहते हुए। ८ कमी-(त्रुट-टुट, छोटा, खोटा, खोर, खोरि खोडि)। ९. पटन के वीच। पटन एक नगर। १० हृदय। ११ गायण कइ भाइ = गान के सदृश, गीत की तरह। १२ एकत्र किया, मिलाया, (मेल्ना)। १३. बैठ कर। १४ मोहा है।

सरसति[1] सामणी तूँ जग जीण[2]।
हँस चढो लटकावै वीण॥
उरि कमलाँ[3] भमराँ भमई।
कासमीराँ मुख मडणी[4] माइ॥
तो तूठाँ वर प्रापिजइ।
पाप छ्यासी जोयण[5] जाइ॥७॥
सरसति सामणी करउ हउ पसाउ[6]।
रास प्रगासउँ वीसल दे-राउ॥
खेलाँ पइसइ[7] माँडली।
आखर[8] आपर आणजे जोडि॥
कर जोडि 'नरपति' कहइ।
'नाल्ह' कहइ जिण लावइ खोडि॥८॥
बारह सै बहत्तरा हाँ मँझारि।
जेठ वदी नवमो बुधवारि॥
'नाल्ह' रसायण आरभइ।
सारदा तुठि ब्रह्म-कुमारि॥
कासमीरां — मुख — मण्डणी।
रास प्रगासों वीसल - दे - राइ॥९॥

---

१. सरस्वती। २ जीवन। ३ हृदय के कमल (माला में)। ४ मुख मण्डनी मुख की शोभा बढ़ाने वाली माता। ५ योजन, या, योनि का। ६. प्रसाद। ७ खेल में प्रवेश करती हुई मण्डली। ८ अक्षर।

गायो हो रास सुणै सब कोइ।
साँभल्याँ[1] रास गंगा फल होइ॥
कर जोडे 'नरपति' कहइ।
रास रमायण सुणै सब कोइ॥१०॥
गावणहार माँडइ[2] (अ)र गाई।
रास कइ (सम)यइ वंसली[3] वाई[4]॥
ताल कई समचइ[5] घूँघरी।
माँहिलो[6] माँडलो छीदा[7] होइ॥
बारली[8] माँडली साँघणा[9]।
राम प्रगास ईणी विधि होइ॥११॥
'नाल्ह वखाणइ'[10] छइ नगरी जू धार।
जिहाँ वसइ राजा भोज पँवार॥
अमीय सइहस सजे करि मैमत्ता।
पञ्च खोहण[11] जे कइ मिलइ नरिंद॥
कर जोडे 'नरपति' कहई।
विसुन पुरी जाणे वसइहो[12] गोब्यद॥१२॥

---

१ सुनने से–(संवारना (रूढ़) स्मरण करना, सुनना)। २ मंडन करे–बनावे, स्वर इत्यादि को ठीक करके। ३ बाँसुरी-बंशी। ४ बजे-(वाद्य) ५ साथ। ६ मध्य की। ७ क्षीण, कम सघन। ८ बाहर की। ९ सघन १ बखानता है, कहता है। ११ अक्षौहिणी। १२ बसता है, या बसाई है।

धार नगरी राजा भोज नरेस।
चउरास्या[१] जे कै वसइ असेस[२] ॥
राजनेलावल[३] अति घणई ।
राज कूंवरि अति रूप असेस ॥
वेटी राजा भोज की।
ऊनत[४] – पयोहरवाली – वेस ॥१३॥
राजा भोज कइ मिल्यो दिवाण।
मील्या सुर नर इन्द्र विमान ॥
राई राणा चहु देसी का।
राणी पूछई सुणि राइ नरवद ॥
वारइ वहतई[५] आपणई ।
कुँवर परणावौ,[६] सोझउ[७] वींद[८] ॥१४॥
पाड्या[९] तोहि वोलावइ हो राय।
ले पतडो[१०] जोसी वेगो तु आई ॥
सूदिन[११] कहे रूडा[१२] जोवसी[१३]।
चतुर नागर ईसउ[१४] आण ज्यों चद ॥

१. जागीरदार-(चतुरास्या-चारों ओर वेठने वाले, मुसाहिब-जागीरदार) २ अशेप-असख्य। ३ राजवल्लभा, रानियाँ। ४ उन्नत पयोधरवाली अवस्था = युवावस्था। ५ वार जाते हुए = आयु वीतते हुए अपने। ६. परणावों-व्याहो-(परिण का प्रेणा० क्रिया)। ७ सोधो-खोजो-तलाश करो (अनुसधान करो)। ८ वींद-वीरेन्द्र-वर। ९ पाडे। १० पत्रा-पञ्चाग। ११ सुदिन, शुभ दिन। १२ रूडा-अच्छा, चतुर। १३ ज्योतिपी। १४ ऐसा (ईदृक्)।

सुर , नर मोहई देवता ।
जिम गोवल माहि सोहइ गोव्यद ॥ १५ ॥
राजा भोज बोलइ तिणी[1] ठाई ।
चिहुँ पड जोवज्यो[2] भूपती राय ॥
तेडउ[3] पुरोहित राव कउ ।
महूरत लगन गिणे तिणि ठाई ॥
कर जोड राजा कहइ ।
राजमती को करउ विवाह ॥ १६ ॥
ले महुरत चाल्योऊ तिणि ठाई ।
चिहु पड जोवज्यो भूपति राय ॥
प्रोहित राजा भोज कउ ।
हियडइ हरिय मनि रग अपार ॥
चद-वदन कइ कारणइ[4] ।
कुण[5] वर वरसी[6] भोज कुँवार ? ॥ १७ ॥
जोयो[7] छै तोडउ[8] जेसलमेर ।
जउओ छइ नयर[10] अयोध्या को देश ॥

---

१ ठाँव स्थान । २ जोहना ढूँढना देखना । ३ टेरा-बुलाया ।
४ कारणे-वास्ते-लिए । ५ कोन वर । ६ वरैगा-(वरिष्यति) ।
७ जोया ह, जोहा हे-देखा है ढूढा है । ८ एक नगर का नाम
(जेपुर के राज्य म) । ९ जैसलमेर (नाम) १० नगर ।

ढीली[1] मडल पुणि जोईयउ।
जउयो छइ मथूरां मडण[2] राय॥
एको चित्त न मांनीयो।
नयणे[3] दीठो तव बीसल राय॥ १८॥
पाड्यो तोहि बोलावइ राय।
लगन सोपारी लेकरि जाहि॥
गढ अजमेरां गम[4] करउ।
चउरों[5] बइसी पपालज्यों[6] पाव॥
बेटी राजा भोज की।
राजमती वर बीसल राव॥ १६॥
पांड्यो—प्रधान चल्यो तिणी ठाई।
गढ अजमेर पहूता[7] ,जाई॥
जाई[8] करी राय जुहारीयउ[9]।
माणिक मोती चउक पूराय॥
पाव पपाल्या राव का।
राजमती दीई बीसलराव॥ २०॥

---

१ दिल्ली मडल (प्रदेश या प्रान्त)। २ मथुरा मडन के राजाओं को। कुछ लोगों का मत है कि यह नाम है—मडल राय (?)। ३ नयन से (नयनेन) देखा (दीठो—दृष्ट)। ४ गमन किया। ५ चँवरी में बैठ कर। ६ पखालजो—धोना (प्रक्षालन)। ७ पहुँचा। ८. जाई करी = जाकर। ९ जुहारा—प्रणाम किया।

हुई सोपारी[1] मनि हरष्यो छइ राव।
वाजिन्त्र[2] वाजइ नीसांणो घाव॥
गढ माहि गूडी उछली[3]।
घरि घरि मगल तोरण च्यारि॥
चहुआण वस उधरउ[4]।
जो घरि आवी जाति पमार॥ २१॥
ब्राह्मण समदइ[5] छइ वीसलराय।
हासलउ[6] घोडउ कुलह[7] कबाई[8]॥
दीन्हउ सोनउ सोलहउ[9]।
पाट[10] पटोला बीडा पान॥
कर जोडे 'नरपति' कहइ।
पाड्यां थोडउ[11] म्हाको राषज्यौ[12] मान॥२२॥
देइ कुवर चाल्यो तिणि ठाई।
राजा भोज जुहारबउ आई॥

---

१ सोपारी हुआ—सगाई हुई। ब्याह होने के पूर्व एक रीति जिससे ब्याह होना निश्चित समझा जाता है। २ वाद्ययन्त्र—बाजे। ३ उत्सव मनाया गया—विवाह इत्यादि शुभ अवसरों पर गुड्डी उछली है। (मान) कवि ने भी (राजविलास) में विवाह के अवसर पर लिखा है कि 'गोरि (गोडि गुड्डी) घन ऊछली'। ४ उद्धार हुआ। ५ समदाना—विदा करना। ६ कडभूरग। ७ टोपी—कुलाह (फा॰)। ८ लम्बा अचकन (फा॰)। ९ सोलहवा सोना—उत्तम सुवर्ण। १० पाटपोटला—रेशमी वस्त्र। ११ थोड़ा है (स्तोक)। १२ रखना—रखिएगा।

सुणि हरख्यो मनि अति घणइ ।[1]
वावे[1] जवारा राजकुमार[2] ॥
चिहुँ दिसि नौता मोकल्या[3] ।
पड पड रा[4] आवीया राइ ॥२३॥
फिरइ वीनउला[5] राज कुमार ।
पड पड का मील्या खधार[6] ॥
नयरी नई माँढे[7] वीचइ ।
हस्ती पायक[8] अंत न पार ॥
भोज तणई[9] नउँतइ मील्यौ ।
जाणे उदयाचल उगइ छइ भाण[10] ॥२४॥
फिरइ विनउला वीसलराय ।
वाजित्र वाजइ नीसाणे घाई[11] ॥
जीमणवार[12] साजत हुइ ।
कुँ कुँ चन्दन पाका[13] पान ॥
कर जोडे राजा कहई ।
चालउ चउरासी राव की जान[14] ॥२५॥

---

१ वावे–वोआने। ओ गेना। एक रीति है जिसमें जौ बोते है। २ कुमारी (भोजपुत्री)। ३ भेजा। ४ का। ५ एक रीति जिसमें विवाह के पूर्व वर अथवा कन्या के मित्र उसे खिलाते है। ६ खण्डाधीश–मालिक–राजा। ७ कन्या के पितृ गृह में। ८ पदातिक–पैदल। ९ कन्या–तनया। १० भानु–सूर्य्य। ११ घाव–निसान पर घाव अर्थात् बाजा बजना। १२ ज्योनार–भोजन। १३ पक्के–(पक्व)। १४ यान–बारात।

परणवां[1] चाल्यो वीसलराय।
चउरास्या सहु[2] लिया बोलाई॥
जान तणी[3] साजति[4] करउ।
जोरह[5] रगावली पहिरज्यो[6] टोप॥
घोडा वेसज्यो,[7] हांसला।
कडि,[8] सोनहरी, हाथे जोडो॥२६॥
जान सजाई वीसलराव।
खेह, उडी रवि गयो लुकाई॥
कोतिग,[9] आव्या देवता।
कोतिग आव्या इन्द्र विमान॥
लूण,[10] उतारे अपछरा[11]।
धनि धनि हो वीसल चहुँवाण॥२७॥
पूजी विनायक चाल्यो छइ जान।
चौरास्या सहु दीधउ[12] छइ मान॥
आठ सेहस नेजा[13] — वणी।
पालखी वइठा सहस पँचास॥

---

१ परिणयार्थ-विवाह करने के लिये। २ सब (सर्व)। ३ तणी = की। मिलाइये तणौ = को। ४ तेय्यारी-साज। ५ कवच (زره)। ६ पहना। ७ बैठा-चढ़ा। ८ कंकण-कडे। ९ कौतुक-(देखने)। १० लवण-नमक उतारना-एक रीति। ११ अप्सराएँ। १२ दिया। १३ नेजा (نیزه) भाला बरदार।

मनमाने जे पलाणजइ[1]।
हिव[2] चालो ठुकराला[3] सामहा[4] जानि ॥ ३६ ॥
राजा कोउ बोल हुवइ परिमाण।
सिरेका[5] ताजो लेहि पलाण ॥
१ छार दहीय, पलाणज्यो।
सावहू पेड़ा नेतरवार ॥
दुदुभी सीग मोचाववो।
चलता चालज्यों आपण माण[6] ॥ ४० ॥
चल्या ठकुराल्या न लावीय वार[7]।
भोज तणॉ[8] मिलिया असवार ॥
वीरमदे[9] चढीयो जग रूप[10]।
महल[11] पलारायाे ताज दी [न] ॥
खुरसांणी[12] चढी चाल्यो गोड[13] ॥ ४१ ॥
अवर[14] सौ चढ़ि चाल्यो छे भाण[15]।
कुँवर पलारायो छे केकॉण ॥
ताजो चढ़ीयो खेत सी[16] [ह]।

---

१ पलानी कसना–जीन कसना। २ अभी। ३ ठाकुर लोग। ४ बरात की अगुआनी करने। ५ अव्वल सिरे का–उच्च श्रेणी का, उम्दा। ६ मान–इज्जत। ७ वार–देर। ८ तणा–का ९, १३, १५, १६, सरदारों के नाम। १०, ११, १२, १४, घोडों के नाम।

पाटसूत[1] दीयो चद परमार ॥
हर्स[2] पलारायो वीर[3] जी ।
मेघनादै[4] चढि उभौ राण ॥ ४२ ॥
चढि चाल्यो छै मीर[5] कबीर ।
खुद कार[7] तुह्म दुकेदुर्क[8] धीर ॥
अमल[9]- खलीती घरि रही ।
भीना पौसत[10] छाड्या, छाणि ॥
उभा वगितारा[11] करइ ।
दोड, सीताब[12] वगनी[13] भरि लाव ॥ ४३ ॥
जाणिक इन्द्र चल्यो भुवाल ।
खइराड्या[14] आया खुर[15]सॉण ॥
गोड[16] चल्या गज केसरी[17] ।
कछवाह[18] कहु नीर[19] – वाण ॥
केई सोलकी[20] सॉपला[21] ।
के चावडा[22] केइ चहुवॉण ॥
केई पीची[23] केई देवडा[24] ।
केई गहिलोत[25] सरिस परमार ॥ ४४ ॥

१,२,४,६,नाम घोडोंके ३ नाम सर्दार ५ मीर पदवी ७ नौकर, ([illegible]) ८ टुकएक धीरज धरो। ९ अमल (नशे) की थैली। १० भीना पोस्ता, भींगे पोसते (Poppy) ११ पुकारता है–चकचक करता है। १२ शीघ्र जल्दी। १३ वधनी (वर्द्धन) एक बरतन जिसे मुसल्मान काममें लाते ह। १४ खेडारसे आये। १५ खुरासानी ([illegible]) घोड़े। १६ गौड (राजपूत), १७ हाथीका नाम १८,१९,२०,२१,२२,२३,२४,२५,नाम क्षित्रयवंशोंके -

सोनीगरा[1] का छू करू घणांण।
हाडा — बुदी[2] का धणी[3]॥
नग्र उजेणी जाई दीयो मेल्हांण।
चउरास्या सहु तिहा मिल्या॥
उढीय छे पेह न सूझे भाण॥ ४५॥
हुओ सॉमेलो[4] जुहार जुहार।
पान अटागर काथ श्रीकार॥
उतरेव लाट — लवाजीवा[5]।
जांन को कटक[6] असीय हजार॥
जांणे उदयाचल ऊलट्यो।
परदेसी जाइ लोपी[7] छह धार॥ ४६॥
कूवर चढावती बोले बोल।
अगर चदन कीजइ पोल (र)॥
भला भला ताजी चढै।
आचरै[8] बीडा पाका पान॥
ऊटां लीजइ आकरा[9]।
चालीय चतुरास्या सॉमहा[10] जान॥ ४७॥
धार नगरी आव्यो बीसलराय।
पच सपो मिली देपिवा जाय॥

---

१ सोनगिरवालों का। २ बूँदी। ३ स्वामी। ४ अगुआनी। ५. ४०,/,/ लाव, लश्कर। ६ सेना। ७ छा। लिया, घेर लिया। लोपना (लेपन)। ८. आचरण करते हैं—बाँटते ह। ९ आकर-तेज। १० सामने।

मोती थाल भराविया[1]।
माँहि बीजउरउ[2] तिलक सिंदूर॥
अमली समली आरती।
जाणि प्रतक्ष उगीयो सूर॥ ४८॥
बीसल आव्यौ धार मॅझार।
मन हरषो घन[3] राज कुमार॥
चाल्यौ सषी करी आरती।
सकल दिसो जीसो[4] पुनिमचंद॥
सुर नर मोहे देवता।
जिम गोवल[5] माहि सोहइ गोव्यद॥४६॥
धार नग्री आयो बीसलराव।
जानीवासउ[6] दीयो तिणि ठाव॥
चउरास्या सहु ऊतर्या।
वाजइ ढोल निसाणे घाव॥
आडि धिनउला[7] सचखउ।
तोरण आवीयो बीसलराव॥५०॥
देस मालागिर भोज छइ राव।
राजमती को रच्यो हो बीवाह॥

---

१ भराया। २ बीजौरा—छोटा कलश(?)। ३ बहुत। ४ जैसा।
५ गोपों में। ६ जनवासा। ७ एक रीति।

जान माहइ नौता[1] फिरइ।
चउथ ब्रहसपतिवार आवीत ॥ १
नावी[2] फीरइ उतावला।
स्वाति नषत्र आठमी परखीत ॥५१॥
तोरण आव्यो वीसलराय।
पच सखी मिली कलस वदावि ॥
मोती का आपा किया।
कुँकुँ चदन तिलक सिंदुर ॥
अमलो समलो आरति।
जाणिक तोरण उगीयो सूर ॥५२॥ ×
तोरण आवीयो वीसलराय।
वर - वेहडा[3] वदावइ नारि ॥
जूसल मूसल[4] वदीया।
कुँकुँ चदन अग विलास ॥
माथै मुकट सोना तणौ।
राजा[5] इन्द्र सभा मोहै कविलास ॥५३॥
माघ पडित घोलइ तिणि ठाय।
हथलेवो[6] वेगो मँगाय ॥

१ नवेद। २ नाई। ३ एक रीति। मिट्टी के छोटे कलशों को 'वर वेहडा' कहते हैं। ४. विवाह में वर के अगों से मूसल इत्यादि का स्पर्श करा के पूजा करते हैं। ५ कैलाश। ६ पाणिग्रहण के लिये। हथलेवा के लिये। देखो–दियो हियो सँग हाथ के, हँथलेवा ही हाथ (बिहारी)।

माघ[1] पडित ईम उचरई।
ब्राह्मण वेदतणां झुणकार॥
मगल गावई कामनी।
राज – कुवर घाली[2] वरमाल॥ ५४॥
माश्रम[3] जोसी देश्रम व्यास[4]।
माघ-आचारज कवि कालिदास[5]॥
ए च्यारइ वेद उचरइ।
चउरी दीसउ माडह्या माहि॥
राजमती राही[6] [या] जी सी।
इस कुवरि नहीं त्रिभुवन माहि॥ ५५॥
माह मास सीय[7] पडे अति सार।
रामजती धन अखय – कुमारि॥
देही कण इगार[9] जू तपै।
राजर माघ भयउ उगतउ भाण॥
माघ पडित ईम उचरई।
चउरी कुवर वैसाडी छुई आणि॥ ५६॥
पच सखी मिलि वइठी आई।
राजा हे माय[10] पूजावण जाई॥

---

१ ३ ४ ५ नाम। २ घालना डालना पहनाना। ६ राधिका–(प्रा० राहिआ—राइआ, राधा) ७ शीत—सीय—'जायसी' ८ अक्षय कुमारी। ९ अँगार के समान, अग्नि के तुल्य। १० मृत्तिका, मातृका पूजन।

मोती का आखा किया।
काथ सोपारी पाका पान॥
हइ हथलेवउ जोडीयउ[1]।
जाणिक रुकमिणी मिलीयो कान्ह॥ ५७॥
पाटै वइठा दुई राजकुमार।
पहिरी वस्त्र जाद्र—सार[2]॥
कांन्हे कुडल आडीया[3]।
सरव सोनारो[4] मुकुट लीलाट॥
रूप देखि राजा हसई।
त्रिभुवन माहइ छुइ जाति पमार॥ ५८॥
चउरी मांहि वइठउ छुइ राई।
पच सखी मिलि मगल गाई॥
मोती चउक पुरावीया।
वाजीत्र वाजै घुरइ निसांण॥
चहुवाण वश उधर्यो।
जइ घरि आवी जाति पमार॥ ५९॥
देस मालागिर हूयउ हो उछाह।
राज कुवर को हूवउ विवाह॥
चन्दन काठ को मांडहो[5]।
सोना की चौरी, मोती की माल॥

---

१. जोडा—पाणिग्रहण कराया। २ एक प्रकार का वस्त्र। ३ लटकते हैं। ४ सोने का। ५ मढा हुआ या—मँडवा (मडप)।

पइहलइ फेरइ राय देडाइचौ[1]।
आलीसर[2] सौं देइ कुडाल[3] ॥ ६० ॥
दूजइ फेरो जव फेरइ छे राय।
सहु अतेवर[4] लियो बोलाइ ॥
राजमती ' · दाडाइचौ ।
दीया साधन[5] अरथ भडार ॥
दीयो देस मडोवरो[6]।
समद सोरठ[7] सारी गुजरात ॥ ६१ ॥
तीजो फेरो जव फेर्यो छइ राय।
पाट महादे[8] राणी लीई छइ बुलाई ॥
राज कुंवर दाडाइचौ।
दीधा सँभर नागर[9] चाल ॥
तोडा[10] टोंक[11] विछाली[12] छो।
माडल गढ से ऊपर माल ॥ ६२ ॥
चउथइ फेरइ जवि दीज्यो छइ धोल[13]।
नौरवाडी का जाचत डोल[14] ॥

---

१ दहेज (दाइज) मे दिया। २ ३ देशों के नाम। ४ अन्त पुर। ५ साधन में। ६ एक देश। ७ सौराष्ट्र (काठियावड) ८ पट्टमहादेवी। ९ एक स्थान (मारवाड़) १०-११ नाम देश। १२ विशाल। १३ थोड़ा (स्तोक)। १४ नीरवाडा (?) का देश माँगता है।

हस्यारथ[1] करे चेलकी[2]।
भोज घणां देसी[3] तेइ वहोड।
कहइ समझाई, कर पेलवी[4]।
राजा कीसीव तु मागि चितोड ॥ ६३ ॥
कुवर अवधारइ[5] सुणि साभख्या राव।
? वीनती म्हांकी चितइ सुहाई।
भोज मया कर वीसलराय ॥ ६४ ॥
रहि रहि कुवर न बोली अयाण।
धार सू लछउ[7] मागी उजेणी ॥
मांगी चदेरी, पेडले।
मागी अजोध्या देवता मोड ॥
इद्रनी [उ] पायो[7] आपहइ।
सरग का देवता अलभ चितोड ॥ ६५ ॥
धी को बोलनू[8] मानीयो वाप।
काई न मारी[9] राजा पाई वचन ॥
काई कहैसी[10] सासरइ[11]।
गांव न उतख्यो हीया[12] थी एक ॥

---

१ हँसी। २ चेरी-(चेटकी)। ३ देगा (दास्यति)। ४ प्रणाम-(पेलगी-पेर पर लग कर)। ५ अवधारण कर-स्वीकार कर। ६ सहित लक्ष के। ७ उपजाया। ८ बोलना। ९ मारी=मेरी। १० कहेगी (कथयिष्यसि)। ११ ससुराल में। १२ हृदय से=गले से।

लका कउ माल परणतै[1] लीयउ।
थारउ काई होसी ईणी चीतोड विसेष॥ ६६ ॥
उचितयो राजा वचन दीयो भोज।
सूणि वाई! वचन ते कह्या चौज[2]॥
ज्यानकी लिय पटतरइ[3]।
धीय तणइ सिर सोवन मोड॥
धीय थी सग[4] राजा हुवो, धीय[1]।
इवइ धीहहे धमि[5]आपीयो[6] चीतोड॥ ६७ ॥
परणइ, राजा, वीसलराय।
माघ पडित है हुवउ पसाव॥
वमण भाट तेडावीया।
दीधा ताजी[7] उतिम ठाईं॥
दीधो सोनो सोलहो।
दीधी सुरह सवछो[8] गाईं॥ ६८ ॥
हुई पहिरावणी[9] हरपीउ राई।
अचल वधी राजकुमार॥
चौरी चढीयो भोज की।
वाजइ वरगू भूगल भेर॥

१ व्याह करते ही। २ सुन्दर, चोज ३ पटतरइ = बराबरी करती हुई। (केहि पटतरिय विन्ह कुमारी–तुलसी०) ४ धी (पुत्री)। धी (पुत्री) से राजा (वीसल) भी सगा हुआ। ५ धम करके। ६ अर्पण किया (अर्पित)। ७ ताजी घोड़े (تازی) ८ सवत्सा = बछड़े सहित। ९ एक रीति।

हुवउ पधारउ[1] रावलइ।
धार कउ द्विज चाल्यो अजमेर ॥ ६६ ॥
राजा भोज आयो तिणि ठाई।
गउरोउ[2] जीमाड्यो छे वीसलराय ॥
चउरास्या सहुको मील्यौ।
पालो परिघउ सयल असेस ॥
पहिरावणी राजा करइ।
दे वर दपोणां लागइ छइ पाय ॥ ७० ॥
सासू जुहारवा[3] चाल्यो छइ राई।
वाजित्र वाजै निसांणे घाई ॥
कुलीय छत्तीसइ साथ छई।
माणिक मोती भरया नारेल[4] ॥
भाणमती[5] आसीस दइ।
अविचल राज कीज्यो अजमेर ॥ ७१ ॥
मोकलावी[6] छइ भोज कुवार।
दीधी दासी सहस दुई चारि ॥
दीधी वाला[7] पालपी।
दीधा हाथी उतम ठाई ॥

१ एक रीति। २ भात खिलाया। ३ जुहारने के लिये = प्रणाम करने के हेतु। ४ नारियल (नारिकेल) ५ भानुमती = राजमती की माता (भोज की पट्टमहिषी) ६ विदा करते हैं। ७ वाला पालपी = जनानी पालकी।

कुवर वलावे वाहुड्या[1]।
राजमती मूकलावी सुभाई ॥ ७२ ॥
राजमती मुकलावी सुभागी।
सारी जान मांहइ हुओ हो उछाह ॥
सुणी प्रधान राजा कहई।
मोहि[2] तुठो छइ सिरजणहार[3] ॥
आपर लिखाया वेहका[4]।
जाइ सूखासण वइठो छइ राय ॥ ७३ ॥
अयरापति[5] चढि चाल्यो राय।
ली अस्त्री अरधग वइसाय ॥
ज्यू ईश्वर सँग गोरज्या[6]।
चहुवाण वस हुव [उ] उछाह ॥
राजा कहइ परधान सु।
गढि अजमेर पहुँता जाई ॥ ७४ ॥
दीठउ आनासागर[7] समद तणी वहार।
हस-गवणी मृग-लोचणी-नारि ॥

---

१ लौट आया (स० व्यावृदित)। २ मुझ पर। ३ ईश्वर = रचनेवाला। ४ वेह (वेधस्) विधाता। ५ ऐरावत = बड़ा हाथी। ६ गौरी = पार्वती। ७ एक सागर = यह एक प्राकृतिक झील है जो 'अना' अथवा 'अनापण' देवी के नाम पर बनाई गई थी और जिसके तीर पर ऐसा कहा जाता है कि बान ऋषि ने प्राचीन समय में बहुत काल तक वास किया था।' बा० श्यामसुन्दर दास-ना०प्र०पत्रिका-भाग पचम पृ०१४१।

एक मरइ बीजी[1] कलिरव करइ।
तीजी घरी[2] पीवजे ठडा नीर॥
चौथी घन सागर जू घूलई[3]।
ईसो हो समद अजमेर को चीर॥ ७५॥
हुवउ [4]पइसारोउ बीसलराव।
आवी सयल अतेवरी[5] राव॥
रूप अपूरब पेपीयइ[6]।
इसी अस्त्री नहीं सयल[7] ससार॥
ईसीय [8]न देवल - पुत्तली।
जइ घरि आवी भोज - कुवार॥ ७६॥
जाइ सिंघासण बइठो छइ राय।
डोरों[8] छोरी, जुहारी छइ माय॥
सेज पधारी राव की।
अतिरग स्यामी सु मीली राति॥
बेटी राजा भोज की।
राजमती रग बीसलराव॥ ७७॥
परणी आयउ बीसलराव।
वाजइ गुहिर नीसांणो घाव॥

---

१. द्वितीय-दूसरी। २ खडी। ३ घूलती है-पानी में पैठती है, प्रवेश करती है। ४ पइसार प्रवेश प्रौढार-[विवाह करके लौटे हुए वर का घर में प्रवेश] ५ अन्त पुर-महल। ६ देखता है (स० प्रेक्षति) ७ सब-सकल। ८ ककण छोड़ा।

गढ माँहि गुडी उछली ।
गण गोत्रज जूहारि माई ॥
चउरास्या सहू वाहुड्या ।
राजा सेज पहुँतो जाई ॥ ७८ ॥
धन धन, पिता, धन तोरी माय ॥
जीणी प्रणाउँ राजा वीसलराव ॥
भोज — तणी चउरी चड्यो ।
राजमती परणी रग माहि ॥
व्यास वचन ईम उचरई ।
"दिन, दिन प्रतिपे[1] वीसलराई" ॥ ७६ ॥
तोही आँणू भइरव[2] चापा का फूल ।
चोवा चन्दन अग कपूर ॥
पाका पान घउटहुली[3] ।
जाई सेवती, नीरवाली[4] का फूल ॥
साझ समइ राय वोलसी ।
हँसि हँसि वोल(ई) अवला[5] मूध[6] ॥ ८० ॥
भयो हो सवारौ[7] वीसलराय ।
भोज कुँवर हइ चित्त लगाय ॥

---

१. प्रदीप्त हो—प्रताप बढ़े । २ भैरव देवता । ३ नागर वेल, नागवल्ली ।
४ निवारी—(फूल) । ५ अवला—स्त्री । ६ मूध—मुग्धा । ७ सवरा—प्रात काल ।

द्वितीय सर्ग

गवरी को नंदन आव्यो छइ भाव[1]।
दोय कर जोडे लागु हो पाय॥
'नाल्ह' रसायण रस भणइ।
भूलो अषिर आणजो ठाई॥
एकदंतों[2]! करूं वीनती।
रास प्रगासु वीसल-दे-राई॥ १॥
गरव करि ऊभो छइ सामखो-राय[3]।
मो सरीखा नहीं ऊर[4] भुवाल॥
म्हां घरि सांभर उगहइ[5]।
चिहु दिस थाण जेसलमेर॥
लाप तुरी पाषर पडइ।
राजिकउ थानिक[6] गढ अजमेर॥ २॥
गरव न बोलो हो मो भरतार[7]।
वाजा[8]-वाजे राजा असिय हजार॥
लंकापति रावण धणी।
सात समद विच घस्ती फेर॥

---

१ मन मे-ध्यान मे। २ एक दन्त-गणश जी। ३ साँभर का राजा-वीसलदेव। ४ और। ५ उगहना-एकत्र होना-वसूल होना। उद्ग्रहण (स०) उग्गाहन (प्रा०)। ६ राजकीय स्थान-राजधानी। ७ भरता = पति, प्रेमी। ८ कोई कोई (بعض بعض)।

"लंका विधुसो[१] वानरा।
थे काई सराहो राजा गढ अजमेर ॥ ३ ॥
गरभि[२] न बोलो हो साभरया राव।
तो सरीखा घणा और भुवान ॥
एक उडीसा को धणी।
वचन हमारइ तु मान जु मानि ॥
ज्यु थारइ साभर उगहइ।
राजा उणि घरि उगहइ हीरा खान" ॥ ४ ॥
"धणक[३] बोल पस्यो मन माहि।
चित चमकियउ[४] वीसलराय ॥
हु वीसल्यो[५] तें वेदिठा[६]।
म्हा तु बरस बारइ की लाव[७] ॥
कइ[८] म्हारइ हीरा ऊगहई।
नहीं तो गोरी ! तिजूँ पराण" ॥ ५ ॥
"हूँ वराकी धणी ! मोकियउ[९] रोस।
पाव की पाणही सु कियउ रोस ॥
मे य हसती[१०] बोलीयो।
आपणइ माल हतौ मानस छइ सॉस ॥

---

१ विध्वस किया-नष्ट किया। २ गर्व। ३ धन का-स्त्री का। ४ चमक गया—चकित हो गया। ५ विध्वद्ध था-भूग्न था। ६ सचेत किया (विद्)। ७ ढान, सफर, प्रवास। ८. या तो। ९ छोडो (मोकना-(मुच)-छोडना)। १० हँसती हुई-हसी म।

पच सखी मीली वइठी छई आई।
"निगुणी! गुण होई तो प्रीव क्युं जाई? ॥
फूल पगर जू गाहजइ[1]।
थारउ आचल वध्यो नाह कु जाई?॥ १६ ॥
"राई[2] नहीं, सखी! भइस पीडार[3]।
अस्त्रीय चरित्र उलिपई[4] ही गवार ॥
लाप चरित्र आगइ मइ कीया।
चोली पालि दीखाल्या छइ गात ॥
तउ पती न उवालहो[5]।
नीहचइ[6] सपी! ओलिग जाईए हार" ॥ २० ॥
पौलि षडी प्रीय वइठउ छइ खाट।
आगणी तुरीय पलाराया छइ घाट ॥
"कमल वदन विलखी हुई।
अगइ दाह न हिये वैराग ॥
कामनि अग न आलगैह[7]।
वरस दोई स्वामी उलगि निवारि[8]" ॥ २१ ॥
राई कहई "सुणि हो पडीहार[9]।
वेगि पलांण भलाई[10] तुपार ॥

---

१ फूल पगडी में जेसे लगा रहता है उसी प्रकार प्रिय के साथ लगा रहे। गहना=(ग्रहण) पकडना। २ रानी। ३ फेटार (फणी) सर्प। ४. उल्लेख करते हैं = लिखते हैं। ५ उवला=पसीजा। ६ निश्चय। ७ अच्छा लगता है। ८ मत जा। ९ प्रतिहार। १० भले, अच्छे घोड़े।

चचल[1] चपल पलाणजइ।
ईसा तुरीय दीठा तिणि ठाई॥
कर जोडी धन वीनमइ[1]।
"मुह मरी नीसर[2] के औलगि जाई" ॥ ३२ ॥
राव कहइ "सुणि राजकुमार।
दूमनी[3] काई हीयडइ[4] वरनारि॥
कह्यो हमारउ जै सुणइ।
येक बार रहस्यु खटमास॥
देव जुहारे[5] आवस्यु[6]।
ते[7] छइ त्रिभुवन-मुगति-दातार" ॥ ३३ ॥
राई कुवरि बोलइ ईक चित।
वीप्र हुकारे[8] वेग तुरत॥
आवीयो प्रोहित राव को।
"पाड्या ! हु थारे गुणदास॥
देई [9]सचा वर वइसणइ।
महूर्त देई वीर ! कातिग मास" ॥ ३४ ॥

---

१ विनती करती हे। २ मरी निकाल कर = मरी समझ कर। निसारना (नि सरण) वीसर पाठ०। ३ दुमनी, दुखित (विमनस)। ४ हृदय। ५ पूजन कर के। ६ आऊंगा-[आगमिष्यामि] ७ वह-देवता ८. हुकारना हकारना-बुलाना। ९ सचा।

"पांड्या! वीरा! ह्यारी गुण दास।
दिन दस महूरत मौडउ[1] परगास[2]॥
मास एक वीलंवावज्यो[3]।
दूजइ फेरई[4] प्रथि समझाई॥
देइस[5] हाथ कउ मुदडउ[6]।
"सोवन सिंगी नई कपिला गाई" ॥ २५ ॥
पाडया! तोहि बोलावइ छइ राय।
ले पतडो[8] जोसी वेगो आई॥
सूदन कहे रूडा [9]जोईसी।
वाचइ पतड़ो बोलइ छइ सॉच॥
मास एकां [10]लगी दिन नहीं।
तिथि तेरस वार सोमवार॥
चद्रई ग्यारमौ देव है।
तीसरो चद्र छइ खोडोला[11]-जोगि॥
काल जोगए भद्रा नहीं।
पुष नछत्र नई[12] कातिक मास॥

---

१ मोड़ कर निकाल = देर से निकाल। २, प्रकाश-दिखा, बता। ३ विलमाना = देर करना। ४ फिर भी। ५ दूंगी-[दास्यामि] ६ मुदरी [मुद्रिका]। ७ सोने की सींग वाली। सोने से सींग मढ़ी। ८ पत्रा = पचाग। ९ ज्योतिषी। १० तक। लग। अथवा लगी [लग्न] मुहूर्त। ११. खोडीला = दूषित योग। १२ नवमी।

जीणा[1] दिन स्वामी थे[2] गम करउ।
ज्यु घणी आगइ पूरइ हो आस" ॥ २६ ॥
"पाड्यो कहु कइ परतिष (इ) भाड[3]।
झूठ कथइ छइ ने वोलइ उइ माड[4] ॥
राज – कुली महूरत कीसउ[5] ?।
म्हा तो ओलग चालस्यां आज ॥
कह्यो हमारउ जोसी ! जइ सुणई।
जाइ उडसिई[6] पूजू जगनाथ ॥ २७ ॥
पाऱ्यां छू तो ओलग जाऊ।
जाई उडीसेइ वात कहाउ ॥
कह्यौ हमारौ जइ सूणइ।
मोहइ घर की गोरडी कह्यो कुवोल ॥
मोहि न मन्दिर आलिगइ।
जाइ उडीसइ तइ राखस्यु वोल" ॥ २८ ॥
"आव दमोदर वइसि नु पाट।
कहि न वीरा म्हा का पीउ की वात ॥"
"परो हो अयाणउ उफिरई[7]।
आठमो ठाव रवि वारमो राहु ॥

---

१ उस दिन। २ तुम। ३ प्रत्यक्ष भाड = तुझे पाडे कहूँ या प्रत्यक्ष भाँड कहूं। ४ माड कर, मण्डन कर के, बात बना कर। ५ राज-कुल के लिये महूर्त कैसा (कीसउ)। ६ उडीसे में। ७ उफनाता है = जल्दी करता है।

"पांड्या! धीरा! हूं थारी गुण दास।
दिन दस महूरत मौडउ[1] परगास[2] ॥
मास एक वीलंबावज्यो[3]।
दूजइ फेरइ[4] ग्रयि समझाई ॥
देइस[5] हाथ कउ मुदडउ[6]।
'सोवन-सिंगी नई कपिला गाई" ॥ २५ ॥
पाड्या ! तोहि बोलावइ छइ राय।
ले पतडो[8] जोसी वेगो।आई ॥
सूदन कहै रूडा [9]जोईसी।
वाचइ पतडो बोलइ छइ साँच ॥
मास एकां [10]लगी दिन नहीं।
तिथि तेरस वार सोमवार ॥
चद्रई ग्यारमौ देव है।
तीसरो चद्र छइ खोडोला[11]-जोगि ॥
काल जोगण भद्रा नहीं।
पुष नछत्र नई[12] कातिक मास ॥

---

१ मोड कर निकाल=देर से निकाल। २, प्रकाश-दिखा, चता। ३ विलमाना=देर करना। ४ फिर भी। ५ दूगी–[दास्यामि] ६ मुदरी [मुद्रिका]। ७ सोने की साग वाली। सोने से सींग मढ़ी। ८ पत्रा=पचाग। ९ ज्योतिषी। १० तक। लग। अथवा लगी [लग्न] मुहूर्त। ११. खोडीला=दूपित योग। १२ नवमी।

जीण[1] दिन स्वामी थे[2] गम करउ।
ज्यु धणी आगइ पूरइ हो आस" ॥ २६ ॥
"पाड्यो कहु कइ परतिप (इ) भाड[3]।
झूठ कथइ छइ ने बोलइ छइ माड[4] ॥
राज-कुली महूरत कीसउ[5]?।
म्हा तो ओलग चालस्यां आज ॥
कह्यो हमारउ जोसी! जइ सुणई।
जाइ उडसिई[6] पूजू जगनाथ ॥ २७ ॥
पाड्या हू तो ओलग जाऊ।
जाई उडीसेइ बात कहाउ ॥
कह्यो हमारो जइ सूणइ।
मोहइ घर की गोरडी कह्यो कुबोल ॥
मोहि न मन्दिर आलिगइ।
जाइ उडीसइ तइ राखस्यु बोल" ॥ २८ ॥
"आव दमोदर बइसि नु पाट।
कहि न बीरा म्हां का पीउ की बात ॥"
"परो हो अयाणउ उफिरई[7]।
आठमो ठाव रवि बारमो राहु ॥

---

१ उस दिन। २ तुम। ३ प्रत्यक्ष भाड=तुझे पाडे कहूँ या प्रत्यक्ष भाँड कहूँ। ४ माड कर, मण्डन कर के, बात बना कर। ५ राज-कुल के लिये महूर्त कैसा (कीसउ)। ६ उडीसे में। ७ उफनाता है=जल्दी करता है।

अह गणतो अतिहि 'वीरा[1]" ।
सिर धुणी मूका[2] छइ धाह ॥ २६ ॥
"दासी होई करि निरवहु[3] ।
पाय पपारसु ढोलसुं[4] वाई[5] ॥
पुहर[6] पुहर प्रति जागसु ।
इण हर सेवस्यु आपणउ नाह" ॥ ३० ॥
"गहिली[7] हे,री तोहइ लागी छुई वाय ।
अस्त्रीय ले[8] कोई उलगि[9] जाई ? ॥
गहिली मुग्धउ तु बावली ।
चद क्यु कूडइ[10] ढांकाणउ जाई ? ॥
रतन छिपायों क्यु रहई ? ।
आगह वाचा को हीणो छइ पूरव्यो राइ[11]" ॥३१॥
चालइ उलिगाणा, धन जाण न देहि ।
"कै मोहि मारि, कइ साथि तु लेहि" ॥
अचल गहते धन रही ।
एक इकेली जोवन — पूर ॥

---

१ बुरा। २ मूकना, छोडना, धाह मूकना, धाह छोड कर रोना। ३ निर्वाह करूगी। ४ डुलाऊँगी = झलूँगी। ५ वायु = हवा। ६. प्रहर। ७ गहिली। भूत से ग्रहण की हुई, पागल। ८ लेकर। ९ परदेस। १०. कूडा = ꠰ꭩꭿ चद्र केसे कूडे में छिपाया जा सकता है। ११ पूर्व देश के राजे वचन के हीन हैं = धोखा देते हैं। उनका विश्वास करना ठीक नहीं।

सूनी सेज वीदेस पीउ।
दुइ दुख 'नाल्ह' कहइगो 'कूण[1]? ॥ ३२ ॥
"छोडि अचल धन मोहि दइ जाण।
वरस दोय रहूँ ता देव की आण[2] " ॥
"कठिण पयोहर दिव करू"।
हसि करि गोरी पूछइ छइ नाह ॥
"ए दिव [स] छइ पीउ! आकरा[3]।
ईण दिव थी सुर नर हुआ छार[4] ' ॥ ३३ ॥
उलिगाणां दिन लेपइ मत लाई।
दिन दिन एक लखो[5] णो[6] जाई ॥
जाई जोवन, धन मसले[7] हाथ।
जोवन नवि गिणइ दीह[8] ने राति ॥
जोवन राख्यो नु रहई।
जोवन प्रिय विण होसीय छार ॥ ३४ ॥
मे धणी! थारी मेल्ही आस।
जोगणी होइ सेवु वन वास" ॥

---

१ कौन २ देव की आण = देव की कसम। ३ आकरा = क्रूर, बुरे। ४ नष्ट। भ्रष्ट (योवन में) अर्थात् इस दिन म (युवावस्था में) सुर नर भी असत्य होते हैं, विश्वास योग्य नहीं रहते। ५ लाख। ६ लौं, समान। ८ मले-हाथ मलना, पछताना। ९ दिन, दिवस (दीह)।

"कइ तप तपुछु वाणारसी।
कइ जाइ भेरव[1]× पउण[2] पडाई॥
कइ पडव[3] पथ सचरू।
कइ जाय सेवस् गग-दूवार॥
कह्यउ हमारु जइ सुणइ।
उलग स्वामी! परियजी[4] वार[5]"॥ २५॥
उलगी जाण सजौ समदाव।
हसि कर गोरी पूछइ राव॥
"सात वरस पेहलो रह्यो।
चीरी[6] जणह न मोकल्ये[7] कोई॥
लाहो[8] लेता जनम गौ।
तुय[9] करै तिसी तोयी होई"॥ २६॥
अचलगह तिय यइसा[10]डी छइ आणी।
हसि गल लाई भोजी सो काण[11]॥

१ भैरव। २ पडपडाऊँगी=मरूँगी। ३ पाडवों के पथ का अनुसरण करूँ=हिमालय प्रस्थान करू। ४ परित्याग कीजिये=छोडिये। ५ दिन, प्रस्थान करने की तिथि। ६ चीठी=पत्र। ७ भेजी। ८ लाभ। ९ तू कर जैसा तुझे भावे। १० बैठाई ११ सोकाण=सहित कान=(मर्य्यादा)।

× लोग भैरव का नाम लेकर पहाड पर से या ऊँचे स्थान से कूद पड़ते थे और समझते थे कि इस प्रकार मरने से मोक्ष मिलेगा। काशी में 'करवट' भी लोग इसी विश्वास से लेते थे।

आज ऊलँभोउ[1] भाजवा।
"या धनचीरा! थारइ हियै न समाई॥
के या बोल की आकरो?।
कोणै दुख देयर! उलग जाई"॥ २७॥
उभी भावज वइ छइ सीष।
"रतन[3] कचोलो राय सापजे भीष॥
तें[4] नाउ पगसू ठलीजै।
इसी न राया[5] तणी नहीँच[6] आस॥
ईसीय न देवल पूतली।
नयण सलूणा वचन सुमीत॥
ईसीय न पाती[7] को[8] घडइ[12]।
इसो अखी नहीं रवि तले दीठ"॥ २८॥
उभी भावज सीह—दुवार॥
"सोलहो सोनो राजा काइ करौ छार?।
मरण जीवन छै पग तणइ।
कनक कचोलो उरी भयो भार[9]"॥

१ ऊलभौ = उपालभ दूँ। २ भानना = भागले को–[भानना = भागना] ३ रत्न की कटोरी राय (राजा) ने सापा भिक्षा मे [भाज ने] रत्न की कटोरी (राजमती) दान दी तुझे [ब्याह मे] ४ उसे मत पर से ठेल। ५ राया = [राज्ञाम्] = राजाओं का, ऐसी न होगी राजाओं के महल म। ६ निश्चय। ७ स्वाती = मूर्तिकार। ८ कोई। ९ कनक की कटोरी। (राजमती) हुई हृदय का बोझ। १२ घडइ घटति = रचता है, बनाता है, गढ़ता है।

"हेडाउ[1] का तुरीय ज्यु।
तुये दिन द्विन हाथ फेरलइ सौ वार"॥ ३६ ॥
"रही! रही! भावज वचन तू बोल।
राज कुवर मोहइ कह्यो हो कुबोल॥
मोहि रयणी दिन [न] विसरइ।
राज कुवर आवे जो साथ॥
तो विस खाये मरू।
बारइ वरस पूजू जगनाथ" ॥ ४० ॥
पच सखी मिली बइठी छुइ आंण।
"अरथ दरव लिया[2] जोव की हाण॥
तोहि चूरो धणी मो वीरो।
तोहि चूरो थारो घरि जाई[3]॥
अरथ दरिव गाड्यो रहई।
जीण सीरज्यो होई तेहीज[4] खाय" ॥ ४१ ॥
राजमती! तु भोज कुमार!।
तो सम त्रि नहा ईणोई ससार॥
यान समारो टाहुली[5]।
चोवा चदन अग सुहाई॥

---

१ भाडे का टट्टू, तुरीय = तुरग। २ लिये = वास्ते। ३ घर जाता हे = घर नष्ट होता हे। ४ तेहीज-तेहिये-तेम्हिका-उसी को। ५. टहल करने वाली = नोकरानी = टहलुई।

सेज पहुतौ राय की।
देही आयगन बीसलराय ॥ ४२ ॥
"चटकला', मटकला मोहि न सुहाई।
धन कइ हीयडइ हाथ न लाई॥
हाथ न लाई प्रीय स्त्री-मरम[2] मा।
निर्गुणा! थारो कीसो ही वेसास[3]॥
करकी[4] गाधू ह्र दिन गिणु रोवती[5]।
मेल्ही काई [तु] ओलगि जाई" ॥ ४३ ॥
कुमरी कहई "सुणो! साभल्या राव!।
सीस[6] हर पूनम पूरो हो जाई॥
कला सपूरण[7] भोगवइ।
चोवा चदन तिलक सोहाई॥
चरित्र चउरासी[8] ह्र आलवू[9]।
चिल विलती[10] काई मेल्हे जाई[11] ॥ ४४ ॥
"आज सखी मोहि चिहाण।
पीडवा" कह दिन कहइ लुइ जाण॥

---

१ चटकमटक=बनावट। २ मम [स्थान मे (स्तन) ३ वेसास= विश्वास। ४ हाथ की बाधी=ब्याह म हाथ पकडाई हुई। ५ रोवती= रोती हुइ। ६ शशि। ७ सम्पूण कलाओं को भोगता हे [शशि]। ८ चौरासी-८४। काम शास्त्र के ८४ आसन ९ आल्वू=आलम्बन करूँ=आचरण करूं। १० विलखती हुइ=रोती हुई। ११ परिवा।

"आज नीरालइ सीय[1] पड्यो।
च्यारि पहूर माही नू मीलो[2] अख॥
उछइ[3] पांणी ज्यु माछली।
जिव आंगु तिव उठुछु झपि[4]॥ ४५॥
बीज[5] अध्यारी नइ सुकजोवार।
महूरत नहीया कहइ वर-नार॥
महा — उपग्रह[6] उपजइ।
जै नर उलग ईण महूरत जाई॥
श्रावण का सासा[7] पडई।
जाणि हीमालइ राजा गलीया हो जाई॥ ४६॥
तीजे[8] घरि घरि मगलचार।
चिहुँ दिसी कामनी करई हो सयणार॥
रमइ सहेली काजली[9]।
घरि धरि कामिनी मडइ[10] छइ खेल॥
चद्र वदन. विलखी फिरई।
स्नेह[11] तुठी राजा औलगी[12] मेलही॥ ४७॥

---

१ शीत = सीय। २ मीली मेरी = आँख मेरना, आँख लगाना। ओछे पानी मे। ४ झपि उठना = चौंक उठना। ब्रजभाषा का 'जकना'। ५ द्विज = द्वितीया। ६ उपद्रव। ७ सासा—सशय। ८ तीज = तृतीया। ९ कजली-[भाद्रपद की]। १० खेल माडना = खेल रचना। ११ स्नेह से तुष्ट हो। १२ ओलगी = परदेश जाना।

"चउथ अघारी [दि] नई मगलवार ।
चन्द उजालउ घरि घरि वारि ॥
वरति[1] करइ घरि आपणइँ ।
चउथ जुहारउ सामत्ता – राव ॥
वचन हमारउ मानज्यो ।
हरिप के पूजो ईणी ठाई ॥ ४८ ॥
पचम कउ दिन पहुतो छइ आई ।
अउत[2] होइ घरि छौडो हो राय ॥
तु अजमेरा राजीयो ।
पुत्र कलत्र सहू परिवार ॥
सईभर[3] थाणउ वइसणइ[4] ।
राई चहुवाण ! औलगि नीवार[5]" ॥ ४९ ॥
"रही [रहीं] कामणी अचल छोडी ।
औलग जाऊँ हूँ अऊ न वहोडी ॥
देस उडीसइ गम करूँ ।"
ये वचन बोल्या तिणि ठाई ॥
छउ सातम दिन आवीयो[6] ।
निहचइ औलगि चालण हार ॥ ५० ॥

---

१. व्रत = उपवास । २ अउत = अयुक्त, अनुचित । ३ सांभर ।
४. वइसणइं = बैठ कर । ५ निवार = रोक । ६ आवीयो = आने पर ।

राज वचन सुणि राज कुमार ।
पल्यग[1] छोडि धरती पडी नारि ॥
वेटी राजा भोज की ।
उठइ[2] उछकि लेइ अकमाय[3] ॥
कर जोडे 'नरपति' कहइ ।
सातम को दिन रहीयौ हो रान ! ॥ ५१ ॥
चन्द्र—वदन दीठी धन-नाह ।
सीस हरण जाणे गलोयो छइ राह[4] ॥
आसू ढाल्या मोर ज्यू[5] ।
कामनी कत मिल्या तिणी ठाई ॥
आठमकउ[6] दिन आवीऊ ।
परत करइ घरि वीसलराइ ॥ ५२ ॥
नवमी घरि घरि मगल होई ।
घरि घरि पूज करइ सब कोइ ॥
नव दिन पूगा[7] नउरता[8] ।
वलि वाकुल[9] पूजा रचौ ठाई ॥
भोग लीयइ जगदीस्वरी ।
ईण परिपूजइ छइ वीसलराय ॥ ५३ ॥

---

१ पलग = परियक । २ उठइ = उठा कर । ३ अकमाय — अक-वार = आलिंगन । ४ शशि हरण किया मानो राहु ने । ५ मोर के समान । ६ आठवाँ—अष्टम् [कउ—'क' प्रत्यय का भ्रष्ट रूप-यथा रामक रामकउ राम का] । ७ पूगा, पूग-पूजा (पूजना-पूग होना) । ८ नवरात्र । ९ वलि वाकुल-कुल का पूजन-कुल देवताओं की पूजा ।

दसराहा को दिन पहुँतो छइ आई ।
तुरीय पलाराया छइ ठाये हौ ठाई ॥
चउरास्या सहू आवीया ।
बाजा वाजहि घूरइहि निसाण ॥
राई अहेडइ[1] चालियो ।
उडीय खेह नह[2] सूझई भाण ॥ ५४ ॥
हर वासर[3] दिन पहूतो छइ आय ।
चद्र वदन धन लागइ छे पाय ॥
वरत करु घरि आपणइ ।
पारणो कीधो द्वादशी जोग ॥
दोई दिन स्वामी थे विलबज्यो[4] ।
तेरस कइ दिन करज्यो हो भोग ॥ ५५ ॥
चवदश वरत करई भूपाल ।
सामही छींक[5] हुणेइ कपाल[6] ॥
चउरास्या सहू बोलीया ।
सउण[7] विचारे वीसलराय ॥
कुशल ओलगि करि बाहुडा ।
अमावस को दिन पहुतो छइ आय ॥

१. अहेर = मृगया, शिकार । २ नहा। ३ हर हरि शिव, रुद्र । रुद्र ग्यारह हैं, अत 'हर' का अर्थ होगा ग्यारह । वासर = दिन तिथि, हर-वासर = एकादशी । ४ विलम्ब कीजिये । ५ छाक । ६ कपाल = कपाल पर लिखा हुआ, भाग्य । ७ शकुन, शुभ अशुभ का विचार ।

पीतरपड[1] भरावइ छइ राई ।
आव्यो प्रोहित राव को ॥
सराध[2] सराव्यो चीसलराय ।
भोजन भगति राणि करइ ॥
आगलि वइसि जिमायो छइ नाह ॥ ५६ ॥
"रहि रहि कांमणी प्रीत नु मड ।
उलगि जांउ पहुधि[3] घर छडि ॥
राज राज मुका[4] संभर तणी ।
सेवइ राजा सयल[6] परिवार ॥
कुसल उलग करै चाहुड्या ।
जब लगि रूडा[5] रहज्यो नारि" ॥ ५७ ॥
"सांभलि वात कहु सुणि नाह ॥
वरस एक तू ओलग नु जाह ॥
उलग कहीय छइ एकलां[7] ।
दूजण[8] सरिस कहइ घर वास ॥
राजा रिधि[9] छइ आपणइ ।
ईण परिपूरजई[10] मन की आस" ॥ ५८ ॥

---

१ पितृपिण्ड–पिडदान २ श्राद्ध । ३ पृथ्वी–पुहुमी–भूमि–राज्य । ४ मुका–(मुचित) छोड़ा–त्याग दिया । ५ रुडा–अच्छी तरह से (सती-साध्वी) ६ सयल, सकल सब । ७ एकला–जो अकेला हो, अर्थात् सन्यासी को । ८ दूजण दो जन हे जो, दुकेला अर्थात् गृहस्थ, विवाहित । ९ रिद्धि–वैभव । १० परिपूजई–परिपूर्ण कर–सतुष्ट हो ।

"ओलग जाए की खरिय[1] जगीस[2] ।
राज—कुवर धन देसउ सीख ॥
राज माहइ ईणि परिरहई[3] ।
राज चलावकै[4] और परधान ॥
ईण सु विरोध नहु बोलिजइ ।
नावो म साहणी[5] सुघराई मान ॥
दासी सरिसा भिणा हिसोउ ।
सूनइ रावलइ[6] तु मती जाई" ॥ ५४ ॥
"उलग जाए की परीय तो सार[7] ।
राजनी[8] गति जिसी षडानि[9] धार ॥
मूरख लोक नू . जाणही ।
चोर जुवारि अनइ[10] कलाल[11] ॥
ईण सू हसि न बोलज्यो ।
राजनि उइ भीतरो गोढ[12] ॥
कान निडा[13] पग दुर रहा ।
मुहडा आडों दीजो[14] हाथ ॥

---

१ खरीय–खरी–चडी । २ जगीस–जिज्ञासा–उत्सुकता । ३ व्यवहार करना । ४ चलाने वाले को–मंत्री । ५ साहणी–घोड़ साल का दारोगा । ६ सूना रावल–निर्जन महल । ७ जल्दी । ८ रान की । ९ खड्ग की धार = तलवार की धार, विषम, कठिन । १० अन्यायी , नृशंस । ११ कलाल = मदिरा बेंचनेवाले । १२ गाँठ–ग्रंथि–कपट । १३ निडा = नियर = निकट । १४ मुख पर हाथ देना = अधिक मत बोलना ।

सांची झूठी मत .? कहइ।
राज-सभा मांहि सांची बात" ॥ ६० ॥
साधन ऊभी टेकि किवाडि।
रतन कुंडल, [के]सिर तिलक लीलाड ॥
झाल[1] जलाखो —— गोरडी।
सोवन पायल पय[2] झलकति ॥
रतन जडित सिर राखडी[3]।
सवि गति वीसरी थारी च्यत[4] ॥
रात दिवस चालण कहइ।
नित दिन उगती भाखु दीनतो[5] ॥ ६१ ॥
आडो[6] बोल खरो पछिताय।
नाह बोलावउ धन कवण मुखि जाह ॥
मइ कांई[7] नवि बेलियो।
देवर मनावई अरी वडो जेठ ॥
हरि पूजो होई[8] वाहुडो।
हुइ गोरी सु छेहली[9] भेट ॥ ६२ ॥

---

१ जल से पूर्ण (छलछलाई) हुई आँखें गोरी की। २ पग = पैर। ३ राखडी = आखडी = आड = एक आभूपण। ४ थारी च्यन्त = तेरी चिंता में। ५ दीनता से। ६ आडो = आडा, टेढा, कडा। ७ काईं = कुछ (स०—कानि)। ८. होई = होने पर। ९. पिछली = अन्तिम।

आंचली गैहती[1] बइसाडी छुइ आण।
हँसि गल लाइ नई भॉजिय[2] काण[3]॥
सा धन रोवइ पीवसुँ।
"गिरवरधणी ! तइ'नु राखी मान॥
एक सरा[4] घर आवज्यो।
था विण नीहचइ होई घरि रान[5]" ॥ ६३ ॥
"उठी ! उठी ! गोरी करि सिंगार।
लारणउ कांचवउ[6] नवसर हार॥
पहिर नु चोली नवरगी।
वावन[7] चन्दन अग सउहाई[8]॥
चित फाटा मन उचट्या।
रूठी गोरी रहइ[9] गलिलाई[1]॥ ६४॥
लांव[10] डग हेला[11] हेला उठिवार।
आगणई तुरीय पलाराया छे वार[12]॥
पेहर न आछी चूनडी।
कु कु चन्दन खौल[13] कराई॥

१, तिय, स्त्री। २ भाँजिय (भनित) भग की। ३ काण, कान = मर्य्यादा। ४ सरा = बार। ५ रान = अरण्य, जगल, उजाड।
६ कांचवउ = कचुकी, चोली। ७ उत्तम। ८ सोहाई = शोभा देता
९ गलिराना = चिल्लाना। १०, लम्बा, डग = कदम ११ हेला = जल्दी।
१२, द्वार। १३ खौर = टीका।

उठो सवारां[1] चालस्यां[2] ।"
गाढ़ो रोई गोरी गलिलाई ॥ ६५ ॥
पूरी सभा वइठो साभल्यो-राव ।
चउरास्या सहु लीयो बोलाई[3] ॥
माई तेडावी[4] राव की ।
सवी मिलि मन्त्र कियो तिणि ठाई ॥
कहेउ हमारउ जइ सुणो ।
"कोक[4] भतीजौ सूपजए राज" ॥ ६६ ॥
राइ कहई "भलो हुई आजि ।"
कोकि भतीजौ सोंप्यौउ राज ॥
थाप्या साहण वर तुरी ।
थाप्या मदिर[•] घरि कविलास ॥
थाप्या चौरा चउखडि ।
थाप्या सांभरि का रीणवास ॥
राजा चाल्यो उलगइ ।
सहु अतेवरी[5] मेल्ही नीसास[6] ॥ ६७ ॥
ओलग चाल्यो धन कउ नाह ।
सहु अतेवरी झूरई[7] राउँ ॥

---

१ सवेरे । २ चलूंगा [चलिष्यामि] । ३ बुलाई गई । ४ नाम भतीजे का । ५ अत पुर की स्त्रियाँ । ६ नि श्वास । ७ राजा के लिए दुखित होती हैं ।

भूरई[1] सहोदर[2] राव का।
कुली छतीसइ भूरइ सोही[3] ॥
धार भूरई राजा भोज सू[4]।
सामखा राव सो पडयो विछोह ॥ ६८ ॥
भूरइ राइ वइहनडी अकन[5] कुवार।
महाजन भूरई राई साधार ॥
माता भूरइ राव की।
भूरइ वभण भाट वीयास ॥
येकइ बोल कइ करिणाइ ।
चाटयो राजा मेटही निसास ॥ ६९ ॥
चाल्यो ठाकुराला पलाणि।
सावकरण[6] दियौ वीरभाण[7] ॥
हसवाहण[8] उदइ स्यगहइ[9] ।
गगाजल[10] अचला[11] चहुवाण ॥
भूतोभेरव[12] भाट कइ[13]।
काली[14]-कठ दीयो वछराज[15] ॥
कोडीधज[16] चढऊ देवजी[17]।
वइरीसाल[18] दीयो अपइराज[19] ॥ ७० ॥
अभयचद[20] दियो राई पख[21]।
सकत[22] स्यधहै दीया नीलडो[23] हस ॥

---

१ दु खित होती हैं। २ सहोदर। ३ सोही = सभी। ४ सहित ५ अकन कुवरि (नाम)। ६,८,१०,१२ १४,१६,१८,२१,२३, नाम घोडों के। ७,९,११,१३,१५,१७,१९,२०,२२,नाम सरदारों के।

मातीचुर[1] नगराज[2]-हुइ।
रायमहल[3] दीयउ छुइ कलियाण[4] ॥
भमर[5] पलारांयो देव[6] हुइ।
सेहस[7]- कला जगदे[8] - परमार ॥ ७१ ॥
प्रीय तोउ चाल्यो तुरीय पलाण।
सींगणि[9] जोडलीया करिवाण[10] ॥
आसण[11] — पडउ झलभलई।
मोचडी वाली[12] अणीयाला[13]-सेल ॥
चढि घोडों लीयउ, चावकउ[14]।
साधन गयो विलखतीय[15] मेदिह ॥ ७२ ॥
चाला चउरास्या न लावी छुइ वार।
आडी आवज्यो इंधणहार[16] ॥
होज्यो देवी[17] जीमणी[18]।
वूड[19] मल्हा लोवा[20] सीय माल[21] ॥
चाल्यो राजा जाई भोवाल ॥७३॥

१,४,५,७—नाम घोडों के। २,३,६,८ नाम सर्दारों के। ९, सीकल जिसमे तल्वार लटकाई जाती है। १० कृपाण, तलवार ११ आसन, जीन, पलानी, १२ घाली = डारी। १३ अनी वाले शल्य (भाले) १४ چابک कोडे। १५ विलखती हुई–रोती हुई। १६ गदहा (?) गदहे पर लाद कर इंधन वेंचते है, या लकडहारा। १७ देवी = सोनचिडी = (एक पक्षि)। १८ दाहनी, जीमणी = जिससे जीवते, खाते हैं। १९ वृद्ध वूढ़ा। २० लोमडी। २१ श्रगाल।

"सहस-फणालइ[1] काल भूयग।
जीमण थी उतरउ वामेइ अग॥
रुपि – चगा, विस – आगला।"
दोय कर जोडे वीनमे मुध[2]॥
"उलिगणउ घरि राजज्यो।
तुम्हा को प्रीय पाछौ वाहुडइ।
सोवन कचौली तोही पायस्यु[3] दूध॥७४॥
लावडो[4], हरणइ, सिंह, सियाल।
पहुॅत समीहोज्यो लोवा, सोयमाल॥"
धन हरिणाखी[5] ईम कहई।
"निहचई औलग चालणहार॥
डावउ[6] करवउ[7] करकरइ[8]।
महा अपसूकन होज्यो प! भुवाल" ॥ ७५ ॥
चाल्यो उलीगणो नग्र मझारि।
आडी आवज्यो ईधणहार॥
सॉड तटूकज्यो[9] जीमउइ अग।
सामही जोगणी[10] काल भुयग॥
घाट काटे मजारडी[11]।
सामही छींक हुणई कपाल॥

---

१. फणावाला। २ मुग्धा, = स्त्री। ३ पासामि = पिलाऊगी। ४ लोमडी। ५ हरिणाक्षि = मृगनयनी। ६ बॉये। ७ काक, कारव, कौआ। ८. कडकडाता है। ९ तडूकना = बोलना। १० जोगनी = नागिनी (?) ११ बिल्ली, मार्जारी।

आडी लुकडी[1] आघज्यो।
गोरडी कउ प्रीय पाछो हो वाल ॥ ७६ ॥
"नीर[2] पर्वति गोरी! कइ चलइ पाय?।
गग अपूठी[3] क्यु वहई? ॥
भ्रत्तारो[4] कम छुडइ ठामि[5]?।
सूरज पछिम किम उगमई? ॥
उलीग चालतां क्यु रह्यो आजि"? ॥ ७७ ॥
डावा सारस पहुवि[6] सियाल।
जीमणी होज्यो हरिण की माल ॥
डावी देवी बोली तिणि ठाई।
डावो[7] सांड तड़कतो जाई ॥
पूरण - कलस साम्हो हुव्वो।
सुकन सूणी हरोष्यो मन माहि ॥
चढि मद्‌र धन जोइयो[8]।
कूसल ओलग करि आवे राव ॥ ७८ ॥
छोडइ छइ तोडउ नइ जेसलमेर।
गोरडी मेल्ही गढ़ अजमेर ॥
छाड्यो नयर विछाल[9] छो।
छाड्या सांभरि का रिणवास ॥

---

१ लोहखड़ी = लोमडी। २ नीर = पानी-पर्वत पर क्यों चढ़े।
३ अपूठी = (आ) + पृष्टे, पीछे, उल्टे। ४ ध्रुव तारा। ५, स्थान-ठाँव।
६ पूर्वे = सामने। ७ डावो-बाँए। ८, जोहना = देखना। ९ विशाल।

येक यलावे[1] वाहुडूया।
नाइ उतरीगो नदीय वनास[2] ॥ ७६॥
नाइ उतरीगो नदीय वनास।
नारि का नाडि नू, हीयउ ने सास॥
धन भौभूती[3] भुइ पडी।
चोर सभाह्या[4] नु पीवई नीर॥
जाएं हीयएइ हरणी हणी।
म्रोको[5] गात उघाडिज्यो[6] जोवन पूर॥ ८०॥
लाघो चावल[7] पीलो हो खाल।
डावी देवी जीमणी [सिय] माल॥
डावी महासक्ति[8]* फैक्रइ[9]।
डावा सारस, स्यघ[10], सियाल॥
उठइ तुरीय खूदावई[11] वीसल राव॥ ८१॥
साठ तुरीय पाखस्या सजुत[12]।
वीसल-दे साथहि चीहसत[13]॥

---

१ पहुँचा कर लौटा। २ राजपूताने की एक नदी जो अजमेर और चवल नदी के बीच में है। ३ भयभीत होकर। ४ सँभालती है [सम+भृ] ५ उसका। ६ उघडा-खुला है। ७ चवल नदी। ८ महा-शक्ति-श्रृगाली। ९ फैकरइ-रोती है। फैकरना-करुणा करके रोना। १० सिंह। ११ खूदाना-घोडा कुदाना-दोडाना। १२ सयुक्त। १३ विहसत-हिन हिनाते हुए।

* लोग कहते हैं कि महाशक्ति के मुख से आग निकलती है। इसे श्रृगाल से भिन्न एक जन्तु मानते हैं।

जाई परभोमई[1] सचखो ।
कोई न जांणइ साभखा-राव ॥
उलिगांणउ होई सचखो ।
देस उडीसइ पहुता जाई ॥ ८२ ॥
राव उडीसइ पहुतउ जाई ।
देव जुहारे लागु पाय ॥
वन दिहाडउ आज कउ ।
देव उठि दीयो चउगिणउ[2] मान ॥
मेल्ही चावर[3] वइसणइ[4] ।
राव उडीसा को परधान ॥ ८३ ॥
राई प्रधानपणइ[5] रह्यो जाई ।
चउरास्या सहू लागइ पाय ॥
देश देसा का राजिया ।
देव कहइ "राजा ! म्हारो तु धीर" ॥
मेल्ही[6] चावर वइसणइ ।
मनवछित[7] भोजन अर चीर ॥ ८४ ॥
जे नर सुनइ सवाद सजूत ।
अविचल लिपमी धरे[8] राज वहूत ॥

---

१ पराये भूमि मे । २ चोगुना । ३ चँवर । ४ बेठक ।
५ प्रधानपने-प्रधानता मे । ६ मिला । ७ मन वाँछित-(इच्छित)
८ धरे-पावे, लहे ।

'नाल्ह' रसायण नर भणइ।
जू राणी सू पडइ विजोग॥
वीघन[1]-हरण जो वर दीयो।
पणिइ[2] वहोड़ करू सजोग॥८५॥
दूजौ पड चव्यो[3] परिमाण।
जे नर सूणइ ते गगा न्हाण॥
'नाल्ह' रसायण नर भणइ।
राजा रह्यो उडीसई जाय॥
वाग[4]-वाणी मो वर दीयो।
अस्त्रो[5] रसायण करू वरखाण॥८६॥

इति द्वितीय सर्ग।

---

१ विघ्न निवारण–[गणेश जी]। २ पुनरपि–फिर। ३ चयौ–कहा।
४ वाग वाणी = सरस्वती। ५ शृंगार रस का काव्य।

तृतीय सर्ग

प्रीय बोलावै धन रोवती जाई ।
सूनउ मंदिर मेल्हइ छै धाह[1] ॥
सा धन कुरलइ मोर ज्यु ।
पाच पडोसण[2] बैठी छइ आय ॥
"ओ निसतान्यौ[3] ज्या करि गयो ।
दिवसनइ रात मौ चिंताता[4] जाई ॥ १ ॥
पच सखी मिली वइठी छइ आई ।
काहरऊ[5] पीवौ न ऊषद[6] खाई ॥
दांत कष्ट वध्यो गोरडी ।
तो थी भली दमयंती नारि ॥
नल राजा मेल्हे गयो ।
पुरीप[7] समौ नहीं निगुण ससार" ॥ २ ॥
"रहि रहि वेहनडी[8] ! वच[9] न तू रोई ।
ले लोटीका[10] जल मुख धोई ॥
फटि रे हिया ! नीचालूवा[11] ।
पाथरी घडीयो, कै[12] ओघट[13] लोह ॥

१ धाह मारना–चिल्ला कर रोना । २ परोसिनें । ३ निस्सन्तान, निर्दयी । ४ चिंताता–चिंतन करते हुए । ५ काढा [क्वाथ] । ६ औषध । ७ पुरुष–आदमी । ८ बहन । ९ बोल । १० लोटिया–एक पात्र–छोटा लोटा । ११. निगोडा–निर्लज्ज । १२ या । १३. घटा है—बना है लोहे का ।

"झखझलीयो[1] फूटइ नहीं।
सगुणा प्रीतम तणो विछोह[2] ॥ ३ ॥
त्री जनम काई दीयौ हो ! महेस ? ।
अवर जनम थारे घडा[3] हो नरेस ॥
रानह[4] न सिरजी हरिणली[5] ।
सूरह न सिरजी धीणु[6] गाई ॥
वन—खड कालो कोईली ।
वइसती अव कइ[7] चप की डालि ॥
वइसती दाख[8] बीजोरडी[9] ।"
इणि दुख झूरइ अवला बालि ॥ ४ ॥
"आज सखी सपनतर[10] दीठ ।
राग[11] चूरे राजा पल्यगे वईठ ॥
ईसो हो झभारो[12] मइ झपीयो[13] ।
जो हु सोहीणइ[14] जाणती साँच ॥
हठि कर जातो[15] राखती ।
जब जागु जीव पडी गयो दाह" ॥ ५ ॥

---

१ जर्जरित हो गया है। २ वियोग—[विच्छेद] । ३ घडाँ-अधिक। ४ रानह–रान–[अरण्य] जगल की। ५ हरिणी, [ली]—अल्पार्थक है। ६ धेनु। ७ कइ—या—[के] । ८ दाख–(द्राक्षा)–अंगूर। ९ बी–द्वी–जोरडी–जोडे अर्थात अपने जोड के साथ। १० स्वप्नान्तर–स्वप्न में। ११ राग रग–प्रेम–(अर्थात अनुराग में)। १२ झझट में। १३ झखी–जकी–दुखित हुई। १४ स्वप्न मे भी। १५ जाते हुए को।

तोडर[1] पायल पइहरणी पाय।
सोवभ – घूघरी वाजती जाई॥
रतन जडित की काँचली[2]।
श्री कसी कंचूवउ परउ ह्रो सुमोड़॥
दन्त दाडिम कुली[3] जी सी।
मुखी अमृत, जांणे बाजै कै वीण॥ ६॥
ससि वदनी जीत्यौ मात-गयद।
श्रापडीया[4] .. रतनांलियां॥
भौहरा[5] जाणे भमर भमाय।
मूँग—फली सी श्रांगुलो॥
कूसम—कली, कर—नंख जीसा।
कनक कुडल धज सोहइ कान॥
राय—श्रांगणि रांणी फिरई।
उणी सोलइ सइ रांणी कउ ऊतार्‌यो मान॥७॥
"प्रीय तो चालीयो कातिग मास।
सूना मदिर घर कविलास॥
सूना चउरा चोखण्डी।
नयण गमायो[6] पथि सिर जाई॥

---

१ तोडा–एक आभूषण। २ कचुकी–चोली। ३ कुल-समूह या कुल, वशज–दाने। ४ आँखें रतनाली–रत्न के समान चमकती हुई। ५ भौंह। ६ गमायो–चलायो, फेरी–डाली।

आक[1] दयत्ता वनदह्यो ।
चोली माहि थी दाधउ[2] छइ गात ॥
धणीयनतकां[3] धण ताकजे ।
तुरीय पलाणि वेगो घरि आव ॥
जोवन छत्र ऊचाईया ।
ईणि कत ! काया मांहि फेरो छइ आंण[4]" ॥ ११ ॥
"फागुण फरक्या कप्या[5] रूप ।
चित चमकी नींद न भूख ॥
जू जोवन जूहै[6] सखी ।
मूरिख लोक नू जांणइ ससार ॥
दिण परषौ दिस पालटइ ।
सखी वाय [7]फरूकती जाइ ससार ॥
चैत्र मासां चतुरगी नारि ।
प्रीय विण जीवू कवण अधार ? ॥
चूडे भीजे जण हसौ ।"
पच सखी मिली बईठी छइ आई ॥
"दत [8]कवाड़्या नह रग्या ।
चालउ सखी होली खेलवा जाई" ॥ १२ ॥

---

१ आक–मदार । २ दग्ध हुआ । ३ स्वामी के होते हुए भी स्त्रि औरों से देखी जाती है। ४ हुकूमत । ५ काप्या रूप, (रुख)–वृक्ष में कोंपल लगी। कोंपना-कोंपना कोंपल लगाना । ६ जूझै–नष्ट हो (युद्ध)। ७ फरुकना–फूँकना, जलाना । ८ दन्त कपाट नहीं रगे ।

"सूणी ! सहेली कहु ईक । वात ।
म्हाहरइ फरकइ छइ दाहीणो गात ॥
आज दीसई ते ईक दिन माहि ।
म्हा क्यु होली खेलवा जाई ? ॥
उलीगाणा की गोरडी ।
म्हां[1] की आँगूली देखता गिलजे वॉह" ॥ १४ ॥
"वैशाखा सखी ल्हणुजे[2] धान ।
सीला[3] पाणी पाका पान ॥
कनक काया घट सींचजै ।
मूरिख नाह[4] नू जाणै [सं] सार ॥
हाथि लगामी[5] ताजिणी[6] ।
पार[7] कइ सेवइ राज - दुवार" ॥ १५ ॥
"देषि जठाणी ! लागो छइ जेठ ।
मूखी कुमलाणी[8] अरि सूकइ छइ छइ होठ[9] ॥
सनेहा सारण[10] वहई ।
वरती पाई[11] न देणउ[12] जाई ॥
अनवलई[13] दव[14] परजलई[15] ।
हस सरोवर छडइ छइ ठाइ[1] ॥ १६ ॥

---

१ म्हा–मेरा । २ ल्हवना–काटना । धान–शस्य–फसल । ३ शीतल
४ नाथ, पति । ५ लगाम–रास । ६ ताजियाना–कोडा ४,५,६;७
७ परका–पराये का । ८ कुम्हलाया–(कुम्लान) । ९ ओष्ठ–अधर ।
१० रोग । ११ पर । १२ दिया–(दत्त) दीनउ । १३ अनवलई–बिना
जलाये । १४ दवाग्नि–अग्नि । १५ प्रज्वलित होता है ।

"धुरि असाढ धडुकया[1] मेह ।
खलहल्या[2] पाल्या, वहि गई खेह ॥
अजी न असाठां वाहुड्यो[3] ।
कोईल कुरलइ[4] अब की डाल ॥
मोर टहूकइ[4] सीखर[5] थी ।
माता मइगल ज्यु पग देई[6] ॥
सदी मतवाला ज्यु घलई[7] ।
तिणी धरी ओलगी काई करेसतो[8] ?॥ १७ ॥
श्रावण वरसइ छइ छाडीय[9] धार ।
प्रीय विण खेलइ कवण आधार ॥
सखीय ते खेलइ काजली ।
चीडीय कमेडी[10] मडिय आस ॥
पपीहो पीऊ ! पीऊ ! करई ।
सखी असलसलावइ[11] मौ श्रावण मास[12] ॥१८॥
भादवउ वरसइ छइ मगेहर[12] गभीर ।
जल, थल ,महोयल सह्व भरया नीर ॥

१ गरजना–टहूकना, दडकना । २ खलयान । वह स्थान जहाँ काटकर फसल रखकर माडते हे । ३ अभी आसाढ़ में भी नहीं लौटा (प्रिय) ४ तहूकै–बोले । ५ शिखर, चोटी (पर्वत या प्रासाद की)। ६. मत्त मयगल (हाथी) की भांति पैर देती है। चलती है। ७ ढुलई–चले–(ढुरना) ८ कर सकती है(करिष्यति)। ९ छोडकर धार, मुसलाधार। १० एक पक्षि । ११ अलसाता है, आलस्य उत्पन्न करता है। १२ मेघ, अथवा मघा नक्षत्र।

आये सरवर[1] ऊलटइ ।
एक अधारी बीचजी[2] वाय[3] ॥
सूनी सेज विदेश पीव ।
दोई दुख 'नाह' क्यु सइहणा[4] जाई ॥ १९ ॥
आसोजां[5] धन मडीय आस ।
माड्या मदिर घरि कविलास ॥
माड्या चौरा चऊखडी ।
माड्या सांभरि का रणिवास ॥
एक चलावै[6] वाहुड्या ।
"नाह उत्तरी गयौ गगा के पार" ॥ २० ॥
असी बरस की हो बूढि वेसि ।
दांत कवाड्या[7] सिर पाड्रा[8] केस ॥
आई अवासा[9] सचरी ।
गलि लागइ ने रुदन कराई ॥
"किम भव"[10] नीगमीस कामिनी ? ।
राति दिवस मौ थारीय चित ॥
कहाउ हमारउ जइ करउ ।
तोह नइकईसो[11] "पटवो[12]" करि देउ मीत[13] " ॥२१॥

---

१ सरोवर २ बीचली–विद्युत–बीज-(जायसी) बिजुली । ३ वाय–वायु । ४ सहा जाय । ५ आश्विन–कुँआर । ६ चलावे–साथ में गया हुआ–आदमी । ७ कपाट–दंत-कपाट । ८ पाडुर–स्वेत–सफेद । ९ गृह–ग्रह, महल । किस प्रकार (भव) संसार में अपना दिन काटती है कामिनि । १०. नायक से । १२ पटाना–ठीक करना । १३ मित्रता ।

"धुरि असाढ धडुकया[1] मेह ।
खलहल्या[2] पाल्या, वहि गई खेह ॥
अजी न असाढां वाहुड्यो[3] ।
कोईल कुरलइ अंब की डाल ॥
मोर टहुकइ[4] सीखर[5] थी ।
माता मइगल ज्यु पग देई[6] ॥
सदी मतवांला ज्यु घलई[7] ।
तिणी घरी ओलगी कांई करेसतो[8] ?॥ १७ ॥
श्रावण वरसइ छइ छाडीय[9] धार ।
प्रीय विण खेलइ कवण आधार ॥
सखीय ते खेलइ काजली ।
चीडीय कमेडी[10] मडिय आस ॥
पपीहो पीऊ ! पीऊ ! करई ।
सखी अलसलसलावइ[11] मौ श्रावण मास" ॥१८॥
भाद्रवउ वरसइ छइ मगैहर[12] गंभीर ।
जल, थल ,महीयल सहू भरया नीर ॥

---

१. गरजना–टहूकना, टडकना। २ खलयान। वह स्थान जहाँ काटकर फसल रखकर माडते है। ३ अभी आसाढ़ में भी नहीं लौटा (प्रिय) ४ तहूके–बोले। ५ शिखर, चोटी (पर्वत या प्रासाद की)। ६ मत्त मयगल (हाथी) की भाति पैर देती है। चलती है। ७ ढुलई–चले–(ढुरना) ८ कर सकती हे(करिष्यति)। ९ छोडकर धार, मुसलाधार। १० एक पक्षि। ११ अलसाता है, आलस्य उत्पन्न करता है। १२ मेघ, अथवा मघा नक्षत्र।

जाणे सरवर' ऊलटइ ।
एक अधारी वीचखी' वाय' ॥
सूनी सेज विदेश पीव ।
दोई दुख 'नाल्ह' क्यु सइंहणा' जाई ॥ १६ ॥
आसोजा' धन मडीय आस ।
माड्या मदिर घरि कविलास ॥
माड्या चौरा चऊपडी ।
माड्या सामरि का रणिवास ॥
एक वलावै' वाहुड्या ।
"नाह उत्तरी गयौ गगा के पार" ॥ २० ॥
असी वरस की हो वूढि वेसि ।
दात कवाड्या' सिर पाडूरा' केस ॥
आई अवासा' सचरी ।
गलि लागइ ने रुदन कराई ॥
"किम भव" नीगमीस कामिनी ? ।
राति दिवस मौ थारीय चित ॥
कहाउ हमारउ जइ करउ ।
तोह नइकईसो" पटचो" करि देउ मीत" " ॥२१॥

---

१ सरोवर २ वीचखी–विद्युत–वीज-(जायसी) विजुली । ३ वाय–वायु । ४ सहा जाय । ५ आश्विन–कुँआर । ६ वलावै–साथ में गया हुआ–आदमी । ७ कपाड–दत कपाट । ८ पाडुर–स्वेत–सफेद । ९ गृह–घर, महल । किस प्रकार (भव) ससार में अपना दिन काटती है कामिनि । १०. नायक से । १२ पटाना–ठीक करना । १३ मित्रता ।

"उठि! उठि! गोरी करि सींणगार ।
गलि पइहरउ मोतीय कौ हार॥
नाग-फणा का तड-कली[१] ।
छोटि कसण पयोहर खींची" ॥
"प्रीय म्हां कउ चाल्यो उलगइ ।
जु हु जोबन राखूं सची[२]" ॥ २२ ॥
इतो कहे जब चाली छइ ऊठि ।
ले पाटो[३] अरि पटकी छइ पूठि[४] ॥
"नाक पाट फडाउ हू कुटणी[५] ।
ते तू देवर अरो बडो जेठ ॥
जीभ काढु जीणी बोलियो ।
थारो नाक सरीखा ऊपलो[६] होठ" ॥ २३ ॥
सासु कहइ "बहु! घर माहि आव ।
चद कइ भोलइ[७] तोहि गीलसइ[८] राहु ॥
चद पूलाणो[९] बनी गयो ।
खीर[१०] की तौलडी क्युं रहइ सेर ॥

---

१. ताटक-तरौना, कर्णाभूषण, तरकी । २ सचय करके=रक्षा करके । ३ पाट, पीढा = पीढ़ । ४ पीठ पर = (पृष्ठे-पिठे) । ५ कुट्टिनी । ६ उपला (उत्पल) = गोबर का बना हुआ उप्पला, अथवा ऊपर का । ७ भोले में धोखे में, भ्रम मे । ८ निगलेगा-ग्रसेगा । ९ पूर्णिम । पूनम । १०. खीर की तौल्ड्री (तौली-एक पात्र) में किस प्रकार रहे शेर । छोटी वस्तु में बड़ी वस्तु कैसे रह सके ।

धणी थाका[1] धन ताकजइ ।
राव ऊडीसइ तु अजमेर" ॥ २४ ॥
"जे के घरि हरिणाषी – नारि ।
तो किम भमइ पार कइ बारि[2] ? ॥
कइ मूवा कइ मारिया[3] ।
वलेन पूछी धन की सार[4] ॥
नयण ते सारग होइ रह्यो ।
धन मरती नवी लागइ वार" ॥ २५ ॥
राव उडीसइ रहीया जाई ।
राजमती अजमेरा माहि ॥
दस वरस ईम नीगम्या[5] ।
वरस ईग्यारमउ पहतऊ आई ॥
राजा अजु[6] न वाहुड्यो ।
तेडो ब्राह्मण जण [ह] पठाई ॥ २६ ॥
कातिग मासा जण [ह] चलाई ।
कोरो कागल[7] गुपती लीखाई ॥

---

१ थकां = रहते हुए (बँगला का 'थाके') - पति के रहते हुए खि दूसरों से देखी जाती है। २ वह क्या फिरे दूसरे के दर्वाजे = द्वार पर। ३ मर गई या मारी गई। इसकी कुछ भी खबर नहीं ली। ४ हाल। ५ (निगम) = बीत गया। ६ आज भी नहीं। ७ कागद = कागज, पत्र।

आप हस्त लिखे गोरडी ।
जिम जिम वाचइ तिम तिम चेत ॥
धणी उपाहौ[1] उलगइ ।
राव चलावौ धरा अचेत ॥२७॥
पच सखी मिली वइठी छइ आय ।
"तेरय[2] लीखी सखी ! मांही सुणाई ॥
लालच[3] लीपीया वहनडी ।
सामहे हीयडइ डावी कूँपी[4] ॥
दोई नख लागा देव का" ।
आपस माणा करत आल[5] ॥
धन विसहर[6], प्रीय गारुडी ।
जागी धणी थारा डक[7] समाल" ॥२८॥
चीरो लिखी धन आपणइ हाथ ।
जणइ चलायो हेडाऊ[8] के साथ ॥
सातसइ कोसकइ आंतेर[9] ।
जीण परि वोलज्यु न रीसाई[10] ॥
कुहणी फाटइ कांचुवउ ।
पोपरि[11] फाटइ धन को चीर ॥

---

१ उपालभ देती है । २ तेरा । ३ प्रेम । ४ कुक्षि = कोख । ५ आल = हँसी । ६ विशधर = सर्प । ७ डक दंश = काटना । ८ हेडाऊ = केराये पर जानेवाला—दूत । ९ अन्तर पर । १० रोष से । ११ सॉपड़ी = सिर पर ।

जाणे दूध दाधी लोंकडी[1]।
दूबली हुई झूरइ ईम नाह॥
डावा हाथ को मूदड़उ।
आवण लागो जीवणी बॉह[2] ॥२६॥
पाड्यो चाल्यो ओका प्रीय कई देश।
"हुँ कहुँ वीरा! सोई कहेस॥
एक सारा[3] घरि आवज्यो।
वाट वूहारूँ सीर का केस॥
विरह महा-जल उलटई।
थाग[4] न पावइ मुध नरेश!" ॥३०॥
"जोसी कहई वीरा! धन की नाह।
तो यो दीई थी जीमणी बॉह॥
दोव पुजाई थी वाभणी।
चद सूरिज दुई दीया साख[5]॥
पानी पवन अरि धूर अकासि[6]।
हुँ नचि जाणु य ईम करे॥
मुसी[7] हे! नणद हुँ ईणी विसास[8]" ॥३१॥

---

१ लोमडी। २ मुन्दरी नाह में आने लगी। 'मुद्रिका को कङ्कण की पदवी देना।' केशवदास ने भी ऐसा किया है। विरह के कारण कृपता का वर्णन है। ३ बार। ४ थाह। ५ साक्षि = गवाह (व्याह के समय)। ६ जल, वायु, पृथ्वी, आकाश-विवाह में ये सब साक्षि होते हैं। ७ ठगी गई हू। ८ विश्वास (के कारण)।

"भूली है वइहनडी ! ईणे वीसास ।
हूँ नीव जाणू औलगि[1] जास ॥
वरजती वाप रखावती[2] व्याह ।
अकन[3]-कुँवारी रहती सखी ! ॥
ओढण[4] लोवडी[5] काटती भाड[6] ।
खेत कमाती[7] जाट[8] ज्यु ।
मई कांई सिरजी उलिगाणा घरि नारि" ॥३२॥
जे दुप 'नाल्ह' कहेइगो कोण ? ।
परहरी पल्यग नइ जीय तोज्यो न्हाण ॥
काय सोपारी तै विख वडौ ।
करि जप माला थरि जपइ नाह ॥
आंगुली गीणता दिन गया ।
काग * उडावतां दुपइ[13] छइ वॉह ॥३३॥
चीरी दीधी जनोई[9] की गांठि ।
गिणि सोनईया[10] वाध्या छइ साठि ॥
वरस दीहॉ[11] की सेवलो[12] ।
घी घणौ खाज्यो पगाह[13] पराण ॥

---

१ परदेश। २ रोकनी = स्थगित करवाती। ३ आजन्म क्वारी। ४ ओढन = ओढ़ना। ५ लोई = कम्बल। ६ झाडी। ७. कमाना, खेत में काम करना। ८ दुखना, दर्द करना, पीडा होना। ९ जनेऊ। १० सोने का मोहर। ११ दिन का। १२ सम्बल = रास्ते का खर्च। १३ पैरों में।

* प्रिय के आगम का समय निश्चय करने के लिये विरहिणी स्त्रियाँ कौआ उड़ाया करती है।

पाये पाणही सावरी[1]।
चउपड़या माह दीई मिलाण ॥३४॥
"कहि न गोरी! थारा प्रीय का सुहिनांण[2]।
जीणी अहिनाणहु[3] लेउँ पीछाणी[4] ॥
कोण उणिहारइ[5] कोण सारिखो ?"।
"ऊचइ गोलइ कडी जिम दाढ ॥
ऊरि चोडौ कडि[6] पातलौ।
माहीले[7] कौये जीमणां अपी ॥
कालौ तिल भमर[8] जीसो।
सीस तिलक उगतई विहाण[9] ॥
पाय लखोणी मोचणी[10]।
मूँछ करियाण छै डावइ हाथी[11] ॥
लाख मीत्या माहि लज लहई।
पाड्या 'म्हाको प्रीव छइ इण तो सहिनाण"॥३५॥
"वरस वाीस कौ वाली वेस।
दन्त कचाड्या, सिर किलकिला[12] केस॥

---

१ सावर (एक प्रकार का चमड़ा) का जूता। २ (सज्ञान) पहचान। ३ (अभिज्ञान) = पहचान। ४ पहचान लूँ। ५ सदृश। ६ कटि = कमर। ७ मध्य के कोये में (ओंठ के)। ८ भँवर जैसा काला। ६ विभात = सवेरा। १० जूती (मोचा)।११ डावइ = बाएँ हाथ में तलवार की मूँठ है। १२ घूँघुर वाले केश।

हाट विहारया[1] कइ जोवज्यो।
कइ जोवज्यो राज - दुवारि" ॥३६॥
"वाहुडि गोरी! तु घरि जाह।
हुँ लेई आवऊ थारउ हौ नाह" ॥
सोना तो बांध्यो गाठडी[2]।
दीधी सोपारी दोय कर च्यार ॥
"ज्यु बोलइ ते नरिवाहज्यो[3]।
बचन तुमारइ लागी छइ नार" ॥३७॥
वाहुडि गोरी देखाली छै वाट।
ऊचा पर्वत दुर्घट घाट ॥
लांवी वाह देखालियां[4]।
देखितो चालिजे देस की सीम[5] ॥
"छाडही धूप थे भीणी[6] गीणी।
चीरी[7] राखज्यो धन कौ जीव" ॥३८॥
कोस पयांणउ पाडीयो जाई।
सात अगा[8] कर बैठो हो खाय ॥
सूतो चालै पग ठवै[9]।
चालता गोरी कह्या हो सदेस ॥

---

१ व्योहरिया = वनिया। २ गाँठड़ी = गठरी में। ३ निर्वाह करना = पूर्ण करना। ४ देखाया। ५ सीम = सीमा। ६ निन = मत ७ चीठी। ८ अगा, वाटी = आँटे की बनी लीटी। ९ थके।

ते सघला[1] वीसरी गयौ।
पाड्यो सभाले आपणउ पेट ॥३९॥
पाड्यो चाल्यो जगनाथ के देश।
छाळ्या मंदिर सयल[1] असेस।
चाल्यो प्रोहित राव को।
जाई पर भूमि कियो प्रवेश ॥
घाट दुर्घट ते लांघीया।
सातमइ मास पहुतउ हो जाई ॥४०॥
अचरिज बात ईम सयल असेस।
वलद[3] ते मानजें[4] हलि वहइ[5] गाय॥
इसो चरित तिहाँ अति घणउ।
साँड विहूणी ब्यावइ छइ गाई ॥
माँड पीवइ कण रालजे[6]।
लाल[7] विहूणी वाजे छे घंट ॥
ईसी सकति[8] तिहाँ देव की।
चोर नाहर[9] नहीं देव कइ पंथ ॥४१॥

---

१ सकल, सब। २ शेल = पर्वत। ३ वलद = वलीवर्द = बैल। ४ मानजे = तरह, समान। ५ हल में जोते हैं। वहइ = वहन करते हैं। ६ रालना = डालना फेंकना या एकत्र करना। ७ लोल, लटकन, जो घंटे की मध्य में होता है जिसके हिलने से वे बजते हैं। ८ शक्ति। ९ नाहर, सिंह।

फिर फिर जोयो राजा नयर[1] मझार।
करि जमदाढ[2] खांडो तरवार॥
खेडौ रूले[3] खोपरि समंड।
पाट की फूदा[4] रुलती झूल॥
सॉभर-धणी जोउल[5] छोड।
जे सहिनाण[6] कह्या था मूध॥४२॥
पाड्या जाई कीयो परवेस।
ले विजउरो दुज मीलइ नरेस॥
कुसल कुसल समसत्र हुवो।
जब लगि गंग जमुना वहै नीर॥
जा लगी चंद सूरज तपै।
ता लगि राजा सयल परिवार॥४३॥
"पाड्या तु आव्यौ कौण कइ साथ?।
लाघ्या कूँ पर्वत दुर्घट घाट?"॥
"तुम कारण दूत रमिरा[7]।
सूना सॉभर का रिणवास॥
सूना चउरा चउखडी।
सूना मन्दिर मढ कविलास॥४४॥

---

१ नगर। २ यमधर—(एक प्रकार की तलवार)। ३ रूले = झूले।
४ फुलरा। ५ जोयल = जोहा, ढूंढा। ६ पहचान। ७ रमिरा = भेजा।

राजा प्रोहित येकणि[1] साथी।
चाह लागा पूछइ धनी बात॥
नयनी रूप में रूवडौ।
कोट कोसीसा[2] अंत न पार॥
देव—नयर छइ रूवडउ।
प्रोहित जोवइ पौली पगार॥ ४५॥
पठइ पोथी रामा[3] की छे।
प्रोहित निरखै पालि पगार॥
चंदन तिलक अगी खोल कराय।
कंठ जनोई पाटकी।
रगत[4] चंदन की पीली किमाड॥
सीसम सार की पाटली।
ऊचा घरि घरि तोरणवार॥
ऊचा दादुर[5] झलमलइ।
घरि घरि तुलछी[6] वेद पुराण॥
तिण भई[7] पाप न छीपहीं[8]।
तिहां फिरई जगनाथ की आंण॥ ४६॥
धन! धन! देव! देव! जगनाथ!।
अमर काया रतनालीय आंख॥

---

१ अकेले में = एकांत में। २ कोसीसा (कुस्थित) दुर्गम। ३ रामायण की। ४ रक्त, लाल। ५ कलश = मुंडेरा, धौरहर। ६. तुलसी। ७. भय, ८ छिपे।

अमर स्यघासण[1] वइसणइ ।
जीण दिन कठ न ओअइकार[2] ॥
जिण दिन मेरु न मेदनी ।
जिण दिन स्वामी चद न सूर ॥
जिण दिन पवन पाणी नहीं ।
जिण दिन स्वामी अभ[3] न गभ ॥
ये तो जुग सूना गया ।
तदि तो दीप नोपायो[4] हो आप ॥ ४७ ॥
पाल्या परधान तेडावीयो आणि ।
देसू जव लगि चउगुणो मान ॥
मेलही छइ चावर बइसणई ।
कौण देसांरी[5] पूछै छे वात ॥
कौण कारणि ओलगि करउ ? ।
तु अजाणे काई पूछेई वात ? ॥ ४८ ॥
पाल्या कहै "सूणी धरह नरेस ! ।
उणी गुणवती कह्योउ सदेस ॥
तुम वीरा मे वहनडी ।
लाडिलौ धणी सांभरी कौ राव ॥
तु उडीसा को धणी ।
थारउ उलिगांणउ घरि वेगि पठाव" ॥ ४६ ॥

---

१ सिंहासन । २ कठ में ओंकार नहीं था । ३ अभ्र—आकाश । गर्भ—पृथ्वी । ४. उत्पन्न किया । ५. देश की ।

पाड्यो ऊसारे[1] तेड्यौ छइ राई।
"छीनी उलगी[2] माई सू कही॥
मां ईम कहीयो देव सू।
राई चलायो चउगिणइ मान॥
लाज पापर आंगइ जुडइ[3]।
देस उडीसा कउ परधान" ॥ ५० ॥
"वेगि मया[4] करि तू घरि चालि।
कठिण पयोहर छाडि छइ ठामि॥
सिखर ते धरती रहइ नीम्या[5]।
अधला[6]! असूर[7]! असती! अचेती॥
एक सरीं धरी थानू।
असौ गेली[8] राम वाच्यो सूरा सेत ॥ ५१॥
जाणायउ[9] राजा थारीऊ ही जाण[10]।
दुई का मील्या छै येक पराण॥
जेकिम यछै[11] दूरी था।
कूलह[12] की वेडी, सीयलै जजीर॥"

---

१ ओसारा-मकान का बरामदा। २ एकान्त मे। ३ एकचित्त हुए। ४ कृपा। ५ निम्नस्थित—नीचे झुके हुए। ६ अंधा। ७ कायर। ८ गेली—के लिये (कृते) ९ जनाया—ज्ञात हुआ-देखा गया। १० ज्ञान—जानकारी। ११ यछे-यचै, याचे = चाहे, सन्तुष्ट हो। १२. कूलह = कुल की-मर्यादा की, (ह) 'भ्यस्' का रूपांतर। १२ शील, लज्जा, कान।

"जोवन राखो चोर ज्यु।
पगी पगी स्वामी लागु हु पाय॥
ईणी भवि[1] उलिगाणी हुवौ।
आवतइ[2] भव होई कालो हो सांप॥ ५२॥
हेम की कूपी[3] मयण[4] की मुध'।
सा धन समरई जीम मात गयद॥
चौवास्या कई चौखडी।
घाव न वाजे[5], नू तपे सूर॥
बादल छायो है चद्रमा।
औ की गात उघाड्या जोवन-पूर" ॥ ५३॥
"देव! मया करि तू घरि चालि।
थारइ घरि होसी अरथ की हाणि॥
कह्यो हमारउ जे सूणइ।
थारी गोरड़ी मरई उगत-विहांण॥
कर जोडे 'नरपति' कहै।
वेगी करि राव भवर[6] पलाण" ॥ ५४॥
"पाडया! ते गोरडी कीणइ दुख दीठ?'।
"चावल वीणती गोखी[7]" वयठ॥

---

१ जन्म। २ आनेवाले = आगामी-जन्म। ३ कुप्पी = पात्र। ४. मोम। ५. वाजे = वहे। ६ नाम घोडे का। ७ गोखी = गवाक्ष-झरोखा।

मुख मइलइ चितउ उजलइ।
दुई पगि उतरी कह्यो हो सदेस ॥
एक सरा घरा आवज्यो।
चढतो जोवन कहा लहेस ?" ॥ ५५ ॥
"पाड्या! ते गोरडी किणइ दुप दीठ?"।
"सदेसोई कह्यो धन नीठ[1] ॥
आसू पडै जगी रेलिया[2]।
दुवली हुई सरीय कक[3] ॥
आपडीया रतनालीयां।
तुटी[4] पडैलो, धन की लक" ॥ ५६ ॥
जीम जीम पाडयो कहै सदेस।
तिम तिम झूरइ घरहु नरेस ॥
"कइ तु कामणी कामणै।
केतु भरीयो सयल[5] जजीर ॥
कइ तु वधण वधीयो।
एक सरां राई घरह सीधाव[6] ॥
साधन नल प्यगल हुई।
ओकई आगणई सूकइ[7] चपकी माल" ॥ ५७ ॥

---

१ नीठि = मुश्किल से—कठिनाई से। २ ससार में आँसू पानी होकर बहा। ३ ककाल = ठठरी। ४ टूट पडेगी। टूट पडनेवाली है। अति क्षीण है। ५. शील। ६ सिधार = जा, प्रयाण कर। ७ सूकइ = सूखे।

दुष्ट वचन बोल्या तिणि ठाई।
ले चीठी आपी[1] तणी राई॥
ईसा गूपती वचन ती वचीया[2]।
नव जोवन नवरगो नेह॥
अहि-निसि समरई गोरड़ी।
सांभला – राजा तणौ सनेह॥ ५८॥
चीरी वाची देखी तव राई।
ततखिण देव पधारो जाई॥
"काई राजा मन विलखीयो?।
सूना पाटण देस पधोर"॥
कर जोडे [इ] नै राई वीनई[3]।
"देहि विदा मौ मुगती[4] दातार!॥ ५६॥
चीरी वाचइ छुइ दोही राई।
करणौ[5] जोसी उभौ[6] तीणी ठाई॥
आजि चलावै देव हइ[7]।
वचन हमारउ मानो नू मान॥
कर जोडे दूज[8] वीनमे।
थे घरि चालो, नू लावो हो वार"॥ ६०॥

---

१ अर्पी, दिया, अर्पण किया। २ पढा, वाँचा। ३ विनय करता है। ४. मुक्ति। ५ कर्ण ज्योतिषी। ६. बोला। ७ पास। ८ द्विज = ब्राह्मण।

कोकै[1] पांड्यो अरी परधान।
दीधौ छै जब तिहां चउगुणउ मान॥
चौकी चावर वइसणइ।
नव गज ऊचा हाथी च्यार॥
आण्या छै अरथ थे दरब भंडार।
आण्या हीरा पाथरी॥
दीधा ताजी मात गयद।
कबाइ[2] पइहराइ नव — लखी॥
चाल्यो राजा मास बसन्त॥ ६१॥
भीतर सचर्यो दोई राई।
पाट-महा दे-राणी लीय बोलाई॥
उलागाणउ घरि चालीयौ।
सह सदेसी नया उपरि पान॥
"म्हां बइठां थे आचरउ[3]।
रहो उडीसा का परधान"॥ ६२॥
राजा राणी लेई बोलाई।
गलि लागै अ[व] रुदन कराई॥
उलिगाणउ घरि चालियौ।
नमि नमि दूणौ करै जुहार॥

---

१ बोलावे = कोकना-बुलाना, चिल्लाना। २ चोगा। ३ मेरे रहते तुम राज्य करो।

"राज कीज्यो घरि आपणइं"।
राणीनइ[1] दीयो कोड़ि टकावली[2] हार॥ ६३॥
"रहि रहि प्रधान तु जी मतो जाई।
दोती[3] कराउ थारो छु व्याह॥
एक गोरी दूजी सांमलो।
राई भतीजी नयण सूतार[4]॥
वहन देवाडू[5] देवकी।
थारो व्याह करू गगा कई पार"॥ ६४॥
"रहि रहि वइहन तु वचन नू हारि।
म्हारइ छइ साठि अतेवरी-नारि॥
एक एका थी आगली।
एक अस्त्रिय छइ रतन ससार॥
प्रेम प्रीयारी वाल हो[6]।
जे कइ "पोहर[7] छै वाई! मांडव धार"॥ ६५॥
सेवा पूरी[8] चाल्यो घरी राव।
गली लागै मीले छइ राई॥
पूठिते उघाडी हुई।
सगा सुणी जाता कसी पूठि॥

---

१ नइ-(ने)-। यह सस्कृत विभक्ति 'पुण' से निकला है। २ कोटि टका का, करोड रुपये का। ३ दो से। ४ सूतार=अच्छी सुतारका। ५ दिलाऊँ। ६ वाला है। ७ पोहर है=(पितृ गृह) पिता का घर। ८ पूजी, पूर्ण हुआ।

कलिजुग पाप ज अघतस्यो।
राजि के कारण विणसस[1] लरू॥ ६६॥
छत्र दियो सिर साभरइ राव।
वाजित्र वाजै निसाणे घाव॥
देव[2] वलावै वाहुड़्या।
साभरि गमन करे छइ राई॥
गढ अजमेरा राजीयो।
जोगी एक भेट्यो तिणि ठाई॥ ६७॥
राजा पाज्यो लीयो हो बोलाई।
अगइ वात कह्यो समझाय॥
थे घरि चालौ देवता।
"मूरिख राजा अपढ अयाण॥
हुँ किम चालु एकलो?।
आगइ गोरी तीजइ[3] पराण॥ ६८॥
एक अपूरव जोगी राई।
मन करे तौ साभरी ते जाय॥
चचल चपल अरि चालणइ[4]।
रूप अपूरव वालिय वेस॥
ज्यौं मागौ ज्यु आलज्यौ[5]।
पाटण सरिसा[6] नयर असेस॥ ६९॥

---

१ विनास होता है। २ उड़ीसा का राजा। ३ तजे = छोड़े।
४ चलने वाला। ५ अच्छा लगे, इच्छा हो। ६ सदृश, समान।

जोगी कहइ "सूणी धरइ नरेस।
वीण उणीहारउ[1] कहां उ लहेस॥
राज घणी राणी घणी[2]।
उचै गोलइ लॉबइ नाक॥
जीव पराया ओलखई[3]।
चीरी दीज्यो प्रभु! धन के हाथ" ॥ ७० ॥
जोगी कहृ "सूणी त्रीभुवन नाथ!।
पदम कमल छै धन के हाथ॥
हिव[4] होसी काचकी कांमली।
दीस भूलउ रे प्रभु! उणीहार॥
बोलता वोलइ छई आकुली।
जोगी! गोरड्डी ईणि उणिहार" ॥ ७१ ॥
"कै धन सूत्र घडी सुत्रधार[5]?।
कै वा सचइ[6] ढालीय सुनारि? ॥
कै वा देवी देवां घरी?।
कैवा चद्र वदन उणीहार? ॥
कइवा[7] देवल - पुतली?।
ईसीय छइ प्रभुजी! अमारडी[8] नार" ॥ ७२ ॥
चालउ जोगी नृ [ला] वीवा वार।
भडली पाई भमइ तिणीवार॥

१. पहचान, सूरत। २ वहुत। ३ पहिचाने, रखले। ४ अव। ५ सूत्र है क्या स्त्री जिसे सूत्रधार ने वनाया है। सूत्र से यहाँ तात्पर्य पुतली (कठपुतली) से है। ६ साचे में। ७. क्या। ८ अमारडी = हमारी ('अमारे' वङ्गला)

मोनइ[1] वन लेई सचस्यो।
दुई सभख्या[2] बीच[3] लघ्या परवत घाट ॥
पर—देशा जाई सचस्यो।
सात सइ कोस गयो साभी वार ॥ ७३ ॥
जोगी उयण गयो तिणी ठाई।
गढ अजमेर पहुतो जाई॥
सहू महाजन हरषीया।
कोण देस ? कहो कुणि ठामि ? ॥
रावली पोले आवीया।
पौल्या[4] वेगी वधावउ जाइ॥ ७४ ॥
राव आव्या की साभली[5] वात।
नाचउ रुप मनोहर पात[6] ॥
गढ मांही गुडी उछली।
घरि घरि तोरण मगल चार ॥
रांवली। प्योल आवीया।
सहू आणद हुवउ तीणी ठार ॥ ७५ ॥
जोगी बइठो पउलइ[7] जाई।
वभूत सरी[8] सी पोल कराई॥

---

१ मुझे भी। २ स्मरण करते हैं। ३ बीच में ४ पोरिया, द्वरवान। ५ सुना = (साभरया-सुणा-याद किया) ६ पातुरी = नाचने वाली, रडी। ७ पौल = पौर-दरवाजा। ८ श्री = रोली। सी=से

जोगी कहइ "सूणी धरइ-नरेस।
वीण उणीहारउ[1] कहां उ लहेस॥
राज घणी राणी घणी[2]।
उचे गोलइ लॉवइ नाक॥
जीव पराया ओलखई[3]।
चीरी दीज्यो प्रभु! धन के हाथ" ॥ ७० ॥
जोगी कह्इ "सूणी त्रीभुवन नाथ!।
पदम कमल छै धन के हाथ॥
हिव[4] होसी काचकी कामली।
दीस भूलउ रे प्रभु! उणीहार॥
बोलता बोलइ छुई आकुली।
जोगी! गोरडी ईणि उणिहार" ॥ ७१ ॥
"कै धन सूत्र घडी सुत्रधार[5]?।
कै वा सचइ[6] ढालीय सुनारि?॥
कै वा देवी देवा घरी?।
कैवा चद्र वदन उणीहार?॥
कइवा[7] देवल - पुतली?।
ईसीय छइ प्रभुजी! अमारडी[8] नार" ॥ ७२ ॥
चालउ जोगी नृ [ला] वीवा वार।
मडली पाई भमइ तिणीवार॥

१. पहचान, सूरत। २ बहुत। ३ पहिचाने, लखले। ४ अब। ५ सूत्र है क्या स्त्री जिसे सूत्रधार ने बनाया है। सूत्र से यहाँ तात्पर्य पुतली (कठपुतली) से है। ६. साचे में। ७ क्या। ८ अमारडी = हमारी ('अमारे' बङ्गला)

मोनइ[1] वन लेई सचखो।
दुई सभख्या[2] वीध[3] लघ्या परवत घाट ॥
पर—देशा जाई सचखो।
सात सइ कोस गयो साँझी चार ॥ ७३ ॥
जोगी उयण गयो तिणी ठाई।
गढ अजमेर पहूतो जाई ॥
सहू महाजन हरषीया।
कोण देस ? कहो कुणि ठामि ? ॥
रावली पोले आवीया।
पौल्या[4] वेगी वधावउ जाइ ॥ ७४ ॥
राव आव्या की सामली[5] वात।
नाचउ रूप मनोहर पात[6] ॥
गढ माही गुडी उछली।
घरि घरि तोरण मगल चार ॥
रांवली[7] प्योल आवीया।
सहू आणद हुवउ तीणी ठार ॥ ७५ ॥
जोगी बइठो पउलइ[7] जाई।
वभूत सरी[8] सी पोल कराई ॥

---

१ मुझे भी। २ स्मरण करते है। ३ बीच म ४ पौरिया, दरवान। ५ सुना = (साभरया-सुना-याद किया) ६ पातुरी = नाचने वाली, रंडी। ७ पाल = पौर-दरवाजा। ८ थी = रोली। सी=से

आक[1] धतूरा विस घणो।
चउलइ बोलते वचन सुठाल ॥
राय-ली प्योले आवीया।
वेगी वधावइ चप की माल ॥ ७६ ॥
राय-आगणां[2] जोगी पहूँतउ जाई।
जाई प्रधान सूणांव्यो[3] मांहि ॥
सघलौ रावलइ [लइ] लहलै
साधन पोवती[4] मोती की माल ॥
दासी जाई सूणावीयो।
तब धन उठी मोतीय राल[5] ॥ ७७ ॥
"आज सखी! म्हारै फरकै छई अग।
अग फरूकै चित हसै ॥
के ड्यारीं[6] चीर खीसे खीसे जाई।
चित जणायौ है सखी"।
"सके[7] तुझ मीलसी साभल्यो राव" ॥ ७८ ॥
पच सहेली मिली धन साथ।
चीरी म्हेली धन अपइण हाथ ॥
जाई करी वैठी चौखडी।
पेहली वाची उपली औलि[8] ॥

---

१. मदार। २ आगा में। ३ खबर दी महल में। ४ पिरोती। ५ डाल कर, फैंक कर। ६ कटि का कपड़ा। ७ शके = समझती हूँ–मुझे जान पडता है। ८ अवली = पक्ति।

सा धन खलती[1] कसोर ज्यु ।
जाणिक बैठी प्रीच को खोलि[2] ॥ ७६ ॥
चीरी रही धन हीयडउ लगाई ॥
जाणिक वाछरू है मेल्ही गाई ।
नयन ते आसू खेरिया ॥
कब म्हें भेटस्या साभला राव ॥
जीवन घडीय ते नवि रहई ।
जीणहू कागली[3] हुवा वैहार ॥ ८० ॥
"जोगी ! थां कौन कहे हो वात ।
दुधइ निहावऊँ[4] घणी हो नीवात[5]॥
भैंस को दही यर गरडा को भात ।
सूसतौ[6] जीमें वींग जोगिया ॥
पदमणि आगलि घालइ[7] छइ वाई ।
आगल वइसी जीमावींयउ ॥
हसि हसि पूछइ प्रीच की वात ॥ ८१ ॥
जोगी कहइ "सूणि मोरी माई ! ।
दिन तीसरई आवइ घरी राय ॥

---

१ खिलनी । किशोर अवस्था की भाति । २ कोडि = गोद में । ३ कागद का व्योहार = कचा व्योहार । ४ नहलाऊँ । ५ मिश्री, नवनीत, मक्खन । ६ सुस्वस्थ = अच्छी तरह । ७ हवा करती है, पखा झलती है ।

हमहै[1] देही वधामणी ।
दीधा मोती अरथ भंडार ॥
दीधा हीरा पाथरी ।
काल्ही आवई राजा एती वार" ॥ ८२ ॥
दोत[2] घरि आव्यो वीसलराई ।
राई भतीजो सामहो जाई ॥
तुरीय पलांराया राव का ।
चाल्या चौरास्यौ अरु परधान ॥
सांमही चाली छइ आरती ।
वाजइ पडह पखावज भेर ॥
राजमती इन्याम[3] दौ ।
मढी है थानीक चापानेर[4] ॥ ८३ ॥
जोगी कहे "प्रतीवृता[5] ! सुणेस हुइ नच्यत ।
प्रीव थारौ आव्यो छइ मास वसंत ॥
माणिक मोती ले वल्यो[6] ।
उठी नै गोरी तीलक सजोई[7] ॥
पांचमइ पहरो घरी आवसी[8] ।
वारमै वरस आव्यो घरि राव ॥ ८४ ॥
लाध्या देस आव्यो घरी राव ।
वाजीत्र वाजै निसाणै घाव ॥

१ हमै = हमं–मुझे–मुझको । २ द्वितीया । ३ इनाम, प्रसाद ।
४. नाम नगर, चपक नगर । ५ पतिव्रता = पतिपरायणा । ६. लौटा है ।
७. तयारी कर (सयोजन) । ८ आवेगा ।

आएया हीरा पाथरो ।
आएया हस्ती मात गयद ॥
कर जोडे 'नरपति' कहै ।
आव्यो राजा मास वसत ॥ ८५ ॥
वारमइ वरसे आव्यो वरी राव ।
वाजित्र वाजइ नीसाणे घाव ॥
गढि माही गूडी उछली ।
घरि घरि तोरण मगल चारि ॥
राजी – कुवर हरखी फिरई ॥
जीव घरि आव्यो धन को नाह ॥ ८६ ॥
फागुण मासी आव्यो वरि राव ।
फागी रमै सहू वर – नार ॥
राजमती हरोपी फिरई ।
सरव चउगास्या सरिसौ राव ॥
होली खेले राव हरोपीयो ।
राज कुवर होली खेलवा जाई ॥ ८७ ॥
जीव घरि आयौ वन को नाह ।
जाणिक उलटइ समद अथाह ॥
अकलक कलक मौ चढ्यो[1] ।
सामुहो जोवन वीरह[2] वीकराल ॥

---

१. मुझ अकलकी को कलक चढा । २ विरह ।

वरस दीहां का बाराहो मास ।
बारा मास का चउवीस पाख ॥
तीन से साठि ए दिन गया ।
तोक से साठि गइ छुइ रात ॥
ऐता दिन तुम कहाँ हूँता[1]? ।
ईव किम वससू राज को खाट" ॥ ६५ ॥
वारमै वरस मील्यो धन नाह ।
अरुजन जू धन लीयो सनाह ॥
कसतूरी मरदन कीयो ।
भवरक[2] दीव लै गहरी वाट ॥
सा धन पान समारिया ।
जाई बैठी धन प्रीव की खाट ॥ ६६ ॥
अरजन[3] जू धन लीयो सनाह[4] ।
गलो पैहरई टकाडिलो हार ॥
कचु कसण ते खोलिया ।
कू कू चदन सीरह स्यदूर[5] ॥
कर जोडे 'नरपति' कहइ ।
कामनी कत रमइ रस पूर ॥ ६७ ॥
बारमइ बरस मील्यो धन नाह ।
हीयऊ लइ हाथि गला महो बाह ॥

---

१ थे, रहे। २ जलते हुए दीपक मे मोटी बत्ती । ३ अर्जुन ने धनुष लिया था १२ वर्ष पीछे। ४ कवच। ५ सिंदूर।

अमलो समलो चुवणी ।
अतिरग स्वामी भरिजे छै पीक ॥
सपी सहेली मँह लाजस्यु ।
अतीरग स्वामी भरि जे छे पीक ॥ ९८ ॥
"सांभलि वात कहे धन नाह ।
हीयडइ हाथी गला माही वाह ॥
आगलीया[1] कड़का करू ।
पाई[2] तला सू माझीअ रात ॥
तोही देऊ भला जीवला[3] ।
चोली माहरइ थी काढि दु पान ॥
"थारा कीधा जइ करू ।
तुझ सरसी कीम जीमजे धान ॥ ९९ ॥
उलगी जाई काई कीयो नाह ? ।
मोडी उसीसौ नू सूतौ वाह ॥
कठिण पयोहर नू मीट्या ।
केली गर्भ सा नू मीट्या गात[3] ॥
जाघ जोडावौ नू नीरखीयौ[4] ।
रग भरि रयण नू माडीयो खेल ॥
देव सतावौ राजा तु फिरई ।
घीव वोसाही तु जीमो छइ तेल" ॥ १०० ॥

---

१. अगुलियाँ कटकाऊँ = अँगुली फोड़ूँ । २ पाँव दबाऊँ मध्य रात्रि में । ३ कदली के गर्भ सा कोमल नहीं मिला गात्र । ४. देखा = निरखना (निरीक्षण) ।

कनक काया घट कूं कूं लोल ।
कठीण पयोहर हेम कचोल[१] ॥
केलि गरभ जीसी कूवली ।
थायल[२] ज्यु धन खचइ[३] अग ॥
कडि[४] चालउ गोरी करइ ।
वीरह[५]-वेदन नवि जाणइ कोई ॥
ज्यु राजा राणी मीलइ ।
यु ईणि कलि[६] मीलजे सव कोई ॥ १०१ ॥
गवरी को नदन आव्यो छुइ भाई ।
रास कहइ वीसल दे-राई ॥
राज-कुवर श्रव[७] वर्णव्या ।
सयल सभा साभलो[८] हो सजोग ॥
गंगा फल 'नरपति' कहइ ।
पुत्र कलत्र नवि हुवई वीजोग[९] ॥ १०२ ॥
तीजो खड चयो परिमाण ।
घरि आव्यो वीसल-चहुवाण ॥
गढ़ अजमेरां राजीयो ।
राजमती धन पूरी आस ॥
चउरास्या सहू वर्णव्या ।
अम्रत रसायण 'नरपति' व्यास ॥ १०३ ॥
इति तृतीय सर्ग ।

---

१ कटोरी २ घायल, आहत ३ खिचे, हटावे । ४ कटि = कमर । ५ विरह वेदना, विरह का दुःख । ६. कलियुग में । ७. सर्व, सब । ८ सुने । ८ वियोग ।

चतुर्थ सर्ग ।

प्रणम्र्‌ ; हणुमन्त ग्रँजनी पूत ।
भूल्यो ग्रापर ग्राणज्यो सूत[1] ॥
कर जोडे 'नरपति' कहे ।
धार थी ग्रावज्यो भोज नरेस ॥
मात पिता मेलावडो[2] ।
साभस्या रास होई पुराय प्रवेस ॥ १ ॥
राना-दे[3] मीलीयो सूरिज भरतार ।
रुखमीणी मीलीयो कृष्ण ग्राधार ॥
चन्द्र मील्यौ ज्यु रोहणी ।
'नाल्ह' रसायण नर भणई ॥
राणी मिलीय राइ नरुचन्द्र ॥ २ ॥
गढ ग्रजमेरां उत्तीम ठाई ।
राज करइ घीसल - दे - राई ॥
चउरास्या जे कई ग्रति घणां ।
राज-कुँवर ग्राव्या[4] सब कोई ॥

---

१ सूत्र म, छंद में। २ मिलानेवाला (मेलावड़ो = मेलावरो—मेल-कार—मिलन करानेवाला) अथवा—मिलाप । ३ सूर्य्य के एक स्त्री का नाम 'सज्ञा' है सभव है कि 'नाल्ह' ने 'सज्ञा' का रूपान्तर साना—(सान्ना) रखा हो जो प्रतिलिपिकार की असावधानी 'राना' हो गया हो। अत इसका अर्थ होगा—सज्ञा देवी । ४ आये ।

भीतर[1] ते राजा तणी[2]।
मान अधिक दीयो सब कोई ॥ ३ ॥
बोलइ वीसल—दे—परधान[3]।
राय-कुँवर आयौ वहु—मान[4] ॥
राज-कुँवर तेडावियौ[5]।
पाट पटोला[6] कुलह कवाई ॥
दीधो सोनो सोलहो[7]।
चीत्रकोट[8] दीवो तिण ढाई ॥ ४ ॥
राय कुँवर वध्यो सिर मोड[9]।
बारा गढ सुदुरग[10] चित्तोड ॥
राइ भतीजो थापीयौ।
गढ अजमेरां उत्तिम ठाँय ॥
कर जोडे 'नरपति' कहई।
राज करइ तिहां वीसल राय ॥ ५ ॥

---

१ भीतरत्ते = (भितराना-(अवधी) भीतर जाना) भीतर (अन्दर) गये। २ राजा के पास। ३ वीसल देव का प्रधान मन्त्री। ४ बहुमन्य, माननीय। ५ बुलाया। ६ रेशमी वस्त्र, पाट-रेशम, पटोला-वस्त्र। ७ उत्तम सोना = सोल्हो आना सोना। "यह बोल चाल की बात है कि चोखे सोने को सोल्हवाँ सोना कहते हैं। जान पडता है कि मध्य-काल मे सोलह माशे की मोहर वा स्वर्णमुद्रा होती थी अथवा सोल्ह बार का तपाया हुआ सोना उत्तम होता था—" (जगन्मोहन वर्मा)। ८ चीत्रकोट = चित्तोर के गढ में। ९ मौर = पगडी, (मौलि)। १० सुदुर्ग = अच्छा दुर्ग।

कुँवर सतोप्यो[1] मनि हरषीयौ राई।
धार नग्री वधाउ[2] जाई॥
तेड्यो प्रोहित राव कौ।
चीरी लीखी आप छइ हाथ॥
"धारा नग्रो ये गम[3] करौ।
राजा भोज ले आवज्यो साथ" ॥ ६ ॥
आईस[4] दीधौ वीसल-राई।
प्रोहित मोकलाव्यो[5] तीणी ठाई॥
ले मौहूरत[6] दुज[7] चालीयो।
टका वीस दियों छइ राई॥
घाटइ भीख्या[8] जिण करउ।
पवन वेग तीण थानीक जाई॥ ७॥
चाल्यो प्रोहित मालागिर[9] देस।
वस्त्र कपवर[10], अरि भला वेस॥
हाथ कमण्डल झलमलई।
ब्राह्मण वेद भणइ भूणकार॥

---

१ सन्तुष्ट हुआ, सतुष्ट करके। २ बधावा = बुलावा। ३ जाओ। ४ आयसु = आज्ञा। ५ भेजा। ६ महूर्त = दिन, स्त्रियों को विदा कराने के लिए जो दिन निश्चय करके लिखा जाता है उसे 'दिन धरना' या 'मुहूर्त भेजना', कहते हैं। ७ द्विज = ब्राह्मण। ८ रास्ते में भिक्षा [भीख] मल मागना। ९ मालवगिरि = मालवा। १० कषायवर = पीला वस्त्र, गेरुआ वस्त्र।

राति द्विस करि चालीयउ ।
पनरमइ[1] दिवस पहुतो तिणो ठार[2] ॥ ८ ॥
कोट कोसीसा[3] नयर[4] विसाल ।
धार नग्री माहइ गम[5] कीयउ ॥
नयर नीरूपम रूवडौ ।
सरव सोनारौ[6] पोल पगार ॥
माथइ तिलक केसरी तणौ ।
जाई पहुचो सीहँ[7] – दुवार ॥ ६ ॥
ब्राह्मण राज कीयउ प्रवेस ।
लेइ बीजोरो दूज मील्यो हो नरेस ॥
राज[8] जमाई-घरि आवीयउ ।
उठ्यो राई गयो रिणवास ॥
अतेवर सहू कोकियो[9] ।
राजमती की पूरी आस ॥१०॥
आयौ राजा सांभल्यो राई ।
ततखिण[10] वल्यउ नीसाणे घाव ॥
राजा माहइ उछव[11] हूवउ ।
ब्राह्मण दीयउ वहुत पसाव[12] ॥

---

१ पद्रहवें दिन । २ ठौर, स्थान। ३ कोसीसा—कुस्थित—विकट दुर्गम । ४ नगर। ५ प्रवेश किया। ६. सब सोने का, सोनहला। ७ मुख्य द्वारपर । ८ भोजराज । ९. कोलाहुल किया। १०. ततक्षण। ११ उत्सव । १२. प्रसाद–(प्रसाव) इनाम ।

जीण सजोगी[1] सुणावीयउ ।
सूणी वचन हरप्यो मनि[2] राव ॥११॥
राजा भोज बोलइ तिणी ठाई ।
"देस देसांरा तेड़ावौ राई" ॥
तैरह पोहण[3] दल मिला ।
बाजइ पटह पखावज भेर ॥
असी सहस्र हाथी गुड्या[4] ।
भाण न सूझइ उठी रज रेण ॥१२॥
वाजइ पडह पखावज पूर ।
ढोल निसाण वाजइ रिणतूर[5] ॥
वीर घटा तिहा रुणझुणइ ।
मेघाडम्बर छत्र सिर दीयौ राय ॥
अन्तर वासउ हो दियो मिलाण[6] ॥१३॥
दुरुग चितोड ससोभित ठाई ।
ततषीण राय पहुतो जाई ॥
ठाम ठाम डेरा हुवा ।
भोजन भगति करई तीणी वार ॥
साथे चालइ राव को ।
गढ़ अजमेर पहूँतो जाई ॥१४॥

---

१ सयोग सुनाया । २ मन में । ३ अक्षोहणी । ४ चले = [गम = गोड, गुड्या, गत] ५ एक वाजा, रणभेरी । ६ डेरा ।

चिहु खडा का मीलीया छइ राय।
गढ़ अजमेर पहूँतो जाई॥
आगइ प्रोहीत चालीयउ[1]।
जाई उभो[2] रह्यो सींह—दुवार॥
राजमती देइ वधामणी[3]।
आयो राजा भोज पमार॥१५॥
राजा भोज आयो तीणी ठाई।
सामहो आयौ छै वीसल-राई॥
गढ अजमेरा राजीयौ।
राजा भोज नै[4] वीसल—राई॥
दोई राजा मेलावडौ[5]।
राजा भोज चाल्यो गढ माहि॥१६॥
राजा भोज आयो तीणी ठाई।
राजमती हरषी मन माहि॥
कुँवर मीलइ जाई बाप हुई[6]।
लेई उछ्गति[7] भोज कुँवार॥
कुसले[8] पुत्रीहे मीलया।
आज जनम राजा सफल ससार॥१७॥

---

१ चलाया। २ ऊभना, खडा होना। ३ वधाई। ४ और।
५ मिले। ६ से—[हुइ—भ्यस् [स०] विभक्ति का रूपान्तर]।
७ उत्सग में = गोद में, अकवार म। ८. कुशल से, कुशलेन।

धणी भगति करइ साभल्यो राव।
पाट पटोला कुलह कवाई॥
उल्हण[1] मीणा सौ पूरव्यो।
भोजन भगति करइ तिणी ठाई॥
कर जोडे 'नरपति' कहई।
राजामती मुकलावउ[2] राय॥१८॥
भोज कुँवर मुकलावी राय।
आंतर वासो दीयौ तीणी ठाई॥
मान अधिक तिहा आपीयो।
कुँवर वउलावी[3] बीसल राव॥
राइ बुलावे वाहुड्या।
जाई मिलाण दीयो तिणी ठाइ॥१९॥
राजमती लै आयो राई।
देस मालागिर सेन[4] पठाई॥
थाणो[5] आयौ राव आपणी।
घरि घरि तोरण मङ्गलचार॥
घरि घरि गुडि उछली।
हुवउ वधावउ नगरी धार॥२०॥

---

१ उल्हण = कुल्हण-मध्यपान का पात्र, मीणा = बोतल, शराब से भरी (मिलाओ-हँसी के साथ यों रोना है जिससे कुलकुले मीना।) शराब। २ विदा करवाई। ३ पहुँचाता है अर्पण किया = (अर्पित -अरिपयउ) ४ सेना। ५ स्थाने, स्थान में।

कुँवर गई अतेवर[1] मांहि।
पाट[2]-महा-दे-राणी मीले छे भाई॥
अतेवर सहू को मीलई।
मील्या सहोवर[3] भोज कुमार॥
नयण ते आंसू खेरीया[4]।
राजमती मीली तिण वार॥२१॥
अतेवर मांही रमइ राज-कुमार।
दुख सुख माइ पूछइ तीणी वार॥
"कही पुत्री! राई किम गयउ[5]?।
रग भरी रयणी मांडीयो खेल॥"
"अहो-वीप जी मै मौ वसई[6]।
एके वचन थी चाल्यो मेल्हीं"॥२२॥
श्रावण मास सुहावणो होई।
सखी सहेली खेले सब कोई॥
कुँवर रमई राजा भोज की।
पेहलई श्रावण खेलावा जाई॥

---

१ अंत पुर। २ पट्टमहादेवी = राजमती की माता।।३ सहोदर। ४ गिराया—डाला। ५ राजा वीसलदेव के उडीसा के प्रस्थान के विषय में पूछती है। ८ राजा राजमती के कहने पर ही रुष्ट होकर उडीसा गया था अत. राजमती कहती है मेरे जी में साप का विष वसता है, अर्थात् मैं वडी कठोर वचन वोलने वाली हूँ।

सही[1] सयाणी सब मीली।
"कहि कुँवर! कीसौ वीसल-राई?" ॥२३॥
राई भलो जीसो पून्यमचद।
गोकुल माही सोहे ज्युँ गोव्यद ॥
ईसो राजा साभरी[2] तणौ।
राय[3] मुकुट राया सिर अग ॥
चउरस्या जै के उलगै[4]।
राई वदन जिसौ पूरणचद ॥२४॥
आसोज[5] मास सूहावण होई।
घरि घरि पूज करई सब कोई ॥
पूजी देव्या मनी हरीजीयौ।
बहु मादल[6] बाजइ तिणी ठाई ॥
दीवटयाँ[7] कई आगही।
धूरि दसरावै चाल्यो राव ॥२५॥
धूरि दसरावै चाल्यो राव।
बाजित्र वाजइ निसाणौ घाव ॥
चौरास्या सहू आवीया।
सात सै हाथी मत-गयद ॥

---

१ सखी। २ साँभर का। ३ राजाओं का मुकुट है और राजाओं के शरीर का सिर है। ४ सरदारों में लगता है जैसे पूर्णिमा का चन्द्र। ५. आश्विन। ६ बाजा विशेष। ७ दीपावली, दिवाली।

असी सहस साहण[1] मीले ।
राइ दिसइ[2] जीसौ पून्यमचद ॥२६॥
मिल्या चौरास्या रांणौ राण ।
आइ वघेरइ[3] दीयो मेल्हाण ॥
गढ अजमेरा राजीयो ।
मेवाडवर सिर छत्र दीयो राई ॥
भाट विडद[4] तिहां उचरै ।
"धनि धनि हो वीसल चहुँवाण" ॥२७॥
चाल्यो राई दीयौ वहुमान ।
काथ सुपारी पाका पान ॥
वलणे[5] चाल्यो राई आपणाइ ।
हीयडइ हरिष मनि रग अपार ॥
सूभट सेन्या राज तणी ।
आई पहुतो मण्डव वार ॥२८॥
धार नयरी [पहुंतो] वीसल राय ।
सांमहो आव्यो भोज खधार[6] ॥
कुसल रस प्रसन[7] हुवा ।
दासी दी कोला[8] मीली तिणि ठाइ ॥

---

१ घोडे, सवार । २ दिसई = (दश) दिखाई दे । ३ स्थान = विशेष । ४ विरुद—भाटों की एक जाति । ५ ससुराल को । ६ खधार—खण्डाधीश, राजा । ७ प्रश्न । ८ नाम दासी का ।

नयर—लोक सहूँ को मीट्यो ।
जाई जहुणो[1] वीसलराव ॥२९॥
धन जननी जिण जायो वीसलराव ।
वीसल समो नवि कोई भोपाल ॥
रूप अपूरव पेखीयो ।
लावण[2] लाडु भरी पकवान ॥
सेना सहित राज जीमीयो ।
राई भतीजो[3] भोज दे बहुमान ॥३०॥
राजा भोज बोलइ तिणी ठाई ।
पाटो[4] बैठाड्या वीसल – राई ॥
गढ अजमेरा राजीयो ।
माणिक मोती चौक पुराई ॥
दीया खरोदक[5] पहहरणइ ।
राजा कुँवर वेसाणी[6] आणी ॥
मोती का अखा[7] किया ।
अतेवर सहुँ जोवई[8] लुइ राई ॥३१॥
करि पहरावणी भोज सयूत ।
दीधा पेई[9] भरी बहुत ॥

---

१ जुहारा, प्रणाम किया । २ नामकीन = लावण्य पदार्थ । ३ वीसलदेव का भतीजा = प्रथ्वी भट्ट । ४ सिंहासन पर पाट पर । ५ एक प्रकार का वस्त्र (क्षीरोदक, श्वेत वस्त्र)। ६ वेसाना-बैठाना—[सं० न्य + स्थ] । ७ अक्षत । ८ देखती हैं । ९ पेटी, पेटारी [पुर्त]।

हाथी दीधा अति घणां।
पायस्था दीधा तरल[1] तुषार॥
पहिरावणी राजा करी।
ऊछव गुडी भोज—दुवारि॥३२॥
अंतेवर सहू मीलेई कुँवार।
दीधा मोती नव-सर[2] हार॥
कूँ कूँ काजल, सयल सयूत।
खावो पीवो घरि आपणइ॥
अविचल राज करउ बहूत॥३३॥
राजमती मुकलावी राई।
पाट—महा दे रांणी रुदन कराई॥
कुँवर चालि घर आपणौ।
वाजइ पडह पखावज भेर॥
भोज वलावै पाहुड्यो।
चाल्यो राजा गढ अजमेर॥३४॥
बाजइ गुहीर[3] निसांणो घाव।
दुरग[4] चीतोड पहुतो राई॥
अतर - वासइ[5] गम कियौ।
साभर थाणौ आवीयो राव॥

१ तेज, चपल। २ नव लर का, सर—(स्रक्-स०) लडी। ३. गभीर, ऊची आवाज से। ४ दुर्ग। ५ अन्त पुर।

चौरास्या सहू बाहुड़्या ।
ठामि ठामि घरि आव्यो कहइ राव ॥३५॥
गढ अजमेर पहुँतो जाई ।
वाजित्र बाजै नीसाणै घाई ॥
गढि माहि गुडी उछली ।
कुँवर सहीत लागे छई पाई ॥
राई अवास्या[1] संचर्यो ।
सेज पठायो साभर्यो—राव ॥३६॥
राजमती धन कीयो सींणगार[2] ।
गलि पहर्यो टकाउलि हारि ॥
पहिरि पटारथ काचु—पड[3] ।
कहइ नु 'नाल्ह' सारदा कौ दास ॥
राजा राणी सू मीलइ ।
पढइ सुणइ सवि पूरइ आस ॥३७॥
गायो रसायण लील – विलास ।
'नाल्ह' कहइ सव पूरज्यो आस ॥
रास रसायण उपजई ।
गढ़ अजमेरां पश्चिम ठाई ॥
'नाल्ह' रसायण आरभई ।
रास चवौ[4] तिणी बीसल – राई ॥३८॥

---

१ आवास—महल । २ शृङ्गार । ३ कचुकी पटिया—सुदर ।
४ कहा गया ।

सांझी समइ धन कियो सीणगार।
सीरइ महमद[1] गलि मोती हार॥
काने कुडल दाडीमा[2]।
पहिरी पटोली झीणइ जरी[3]॥
कूॅ कूॅ भरीय कचोलडी[4]।
बाधन - सेज[5] अदीष्ठे[6] जाई॥
स्वामी हइ सांसो पड्यो।
झीणी[7] हरणापी उपमजाई[8]॥३९॥
चौथा[9] को लैहॅगो झूना[10] को ताव।
ठमिक ठमिक धन दे छइ पाव॥
आवी अवांसई सांचरी।
हींयडइ हरीष मन रंग अपार॥
धन दीहाडउ आज कउ।
कुॅवर जगायउ छइ वीसल राव॥४०॥
जव लगि महीयल[11] उगइ सूर।
जव लगि गग वहइ जल पूर॥

---

१ मृगमद—कस्तूरी। २ दादिमा = अनार से। ३ लज्जित हुई। ४ कटोरी। ५ सिंहासन = शय्या। ६ अधिष्ठित हुई—जाकर बैठी—विराजमान हुई। ७ जिससे (स्वामी से)। ८ उपमर्दित हुई—(उपमर्दन)। ९ १० एक प्रकार का वस्त्र। ११ महि में—पृथ्वी पर।

जब लगि प्रथमी मैं जगन्नाथ।
जीणि राजा सिर दीधो हाथ॥
रास पहुँतो राव को।
बाजे पडह पखावज भेर॥
कर जोडे 'नरपति' कहइ।
अविचल राज कीज्यो अजमेर॥
जू तारायण[1] मीली सो चन्द।
गोवल[2] माहि मिलइ ज्यु गोव्यद॥
ज्युँ उलिगाणइ घरि मिट्यो।
गढि उलिगाणइ कीयो छो वास॥
मन का मनोरथ पूरव्या।
भणइ सुणइ तिणी पूरज्यो आस॥४२॥

इति चुतुर्थ सर्ग।

समाप्त।

---

१ तारों में-(=तारागण-तारायण) २ गो पाल।

वीसलदेव रासो में आए हुए नामों की अनुक्रमणिका ।



शुद्धाशुद्धिपत्र

भूमिका

				अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ	५	नोट		Page, 84	Page, 84
,,	१५	पंक्ति	११	अन्ऽर्हित हैं। कुछ	अ तर्हित हैं, कुछ

बीसलदेव रासो

				अशुद्ध	शुद्ध
पृ०	४	पंक्ति	१३	वहत्तर हाँ	वहोत्तराँ हाँ
,,	५		नोट	१ वखानता हे	१० बखानता है
,,	१२		,,	११ ककण पैर मे पाना–	११ ककण पाया, पाना–
,,	१३		,,	६ पाखरघोडों	६ पाखर, घोडों
,,	१४	,,	१७	नगेरी नीडा	नगरी नीडा"
,,	१५	,,	५	जिणइ	गिणइ
,,	२०	,,	१६	राना' कविलास	राजा कविलास'
,,	२८	,,	४	वीर	तीर
,,	,,		नोट	प्रौढार	पैठारा
,,	३२	,,	२	लागु	लाँगु
,,	३४	,,	९	पूछइहो	पूछइ हो
,,	३५	,,	१८	आणिसू	आणि सू
,,	४०	,,	५	देइस'	देसइ'
,,	४८	,,	७	धरि धरि	घरि घरि
,,	,,		नोट	ओछे पानी में।	३ ओछे पानी में।

			अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ ५२		नोट	५. रूडा	५ सयल
			६ सयल	६ रूडा
,, ५४	पक्ति	१३	वेलियो	बोलियो
,, ५६	,,	१४	थाप्या	थाप्या
,, ६३	,,	१०	बरखाण	बखाण
,, ६९	,,	१४	सूकइ छइ छइ	सूकइ छइ
,, ७०	,,	५	टहूकइ	तडूकइ
,, ७४	,,	१५	कोसकइ	कोस कइ
,, ८१	,,	५	व नयर	देव नयर
,, ८५	,,	१५	बघीयो	बधीयो
,, ८८	,,	१७	उधाडी	उघाडी
,, ९०	,,	२०	तिणनार	तिण वार
,, ९२	,,	१३	के ह्यारौ	कैह्यारौ
,, ९५		नोट	मुझ	मुक्ष
,, ९८	,,	४	तीक	तीन
,, ९९	,,	८	तला सू	तलासू
,, १०१		नोट	असावधानी 'राना हो	असावधानी से 'राना' हो
,, १०२	,,	१	भीतर ते	भीतरते
,, १०३	,,	५	धारा	धार
,, १०७	,,	१३	राजमनी	राजमती

				अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ	५२	नोट		५ रूडा ...	५ सयल
				६ सयल ..	६. रूडा
,,	५४	पंक्ति	१३	बोलियो	योलियो
,,	५६	,,	१४	थाप्या	थाप्या
,,	६३	,,	१०	वरसाण	बराण
,,	६९	,,	१४	सूकइ छइ छइ	सूकइ छइ
,,	७०	,,	५	टहूकइ	तडूकइ
,,	७४	,,	१५	कोसकइ	कोस कइ
,,	८१	,,	५	व नयर	देव नयर
,,	८५	,,	१५	बधीयो	बधीयो
,,	८८	,,	१७	उघाडी	उघाडी
,,	९०	,,	२०	तिणबार	तिण वार
,,	९२	,,	१३	कै ह्यारौ	केह्यारौ
,,	९७	नोट		मुझ	मुझ
,,	९८	,,	४	तीक	तीन
,,	९९	,,	८	तला सू	तलासू
,,	१०१	नोट		असावधानी 'राना हो	असावधानीसे 'राना' हो
,,	१०२	,,	१	भीतर ते	भीतरते
,,	१०३	,,	५	धारा	धार
,,	१०७	,,	१३	राजमनी	राजमती